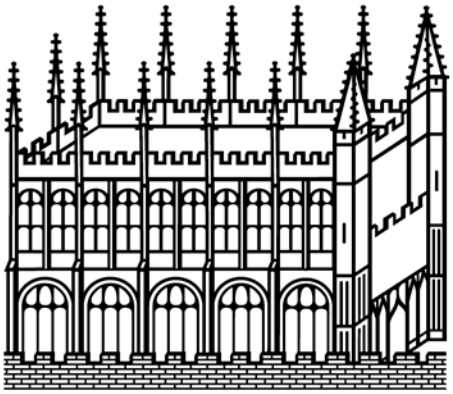


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.D.78. Hindi Mala

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Sudāmā-caritra.

Soudama Charitter



सुदामाचरित्र

سودامہ چرتر

जिसमें

भक्ति परागाद मधुकर परम दरिद्र पीड़ित स्वस्त्र्युपदेशित
सुदामा का सच्चिदानन्द स्वरूप परम कारुणिकानन्नविद्य
विद्या विज्ञान मय सकलानन्द प्रद सर्व जगदुत्पादक निज
परम मित्र श्री कृष्ण महाराज के दर्शनार्थ द्वारिका में गमन
और गमनजानन्द १० अंकों में नाना प्रकार के विचित्र
छन्दों में सविस्तर वर्णितहै

जिसको

श्री मन्महाराज शिवराज की आज्ञानुसार बाजपेयि वंशावतंस प्रकाशिकेक
भास्कर कवि कुल सूर्य्य राबीर कवि ने संवत् १९९८ में बर्णन किया था

वही
दूसरी बार
स्थान लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया
सितम्बर सन १८८३ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् सितम्बर सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुआ है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी। जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा इतिहास	२- सभा पर्व्व	५- भीष्म पर्व्व	५- सुन्दरकाण्ड
महाभारत	३- बन पर्व्व	६- द्रोण पर्व्व	६- लंका काण्ड
१- पहिले हिस्सामें	४- विराट पर्व्व	७- कर्ण पर्व्व	७- उत्तर काण्ड
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	५- उद्योग पर्व्व	८- शल्य पर्व्व	रामायण शब्दार्थकोष
बन पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	९- गदा पर्व्व	रामायण का इतिहास
२- दूसरे हिस्सा में	७- द्रोण पर्व्व	१०- स्त्री पर्व्व	रामायण मानस दीपिका
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	८- कर्ण पर्व्व	११- स्वर्गारोहण पर्व्व	रामायण कविता वली
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	९- शल्य पर्व्व व गदा	रामायण रामविलास	रामायण गीतावली स-
३- तीसरे हिस्सा में	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व स्त्री	रामायण तुलसीकृत	विनय पत्रिका बाबू
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	योशिक व विशोक	रामायण टीका सम्ब	मोहनलाल कृत
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	व स्त्री पर्व्व	मानस दीपिका कोष-	विनय पत्रिका बाबू
योशिक पर्व्व विशोक	१०- शान्ति पर्व्व रा-	आदि	शिवप्रसाद कृत
पर्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति	ज धर्म्म व आपद्ध-	तथा जिल्द बन्दी	विष्णु पुराण
पर्व्व में राजधर्म्म आ-	र्म्म व मोक्ष धर्म्म व	तथा मोटे चश्मों की	लिंग पुराण
पद्धर्म्म मोक्षधर्म्म	दान धर्म्म	मय तसवीर व सेपक	गरुड़ पुराण प्रेतकल्प
४- चौथे हिस्सा में	११- अश्वमेध आश्व-	रामायण तुलसीकृ-	ब्रह्मोत्तर खण्ड
शान्ति पर्व्व दानधर्म्म	मेधिक पर्व्व व	टीका सुखदेवलाल कृ-	वाराह पुराण
अश्वमेध आश्रमवा-	मौशल पर्व्व महा-	रामायण तुलसीकृत	भविष्योत्तर पुराण
सिक पर्व्व व मौशल	प्रस्थानस्वर्गारोहण	टीका रामचरण कृत	स्कन्ध पुराण
पर्व्व वाला प्रस्थान पर्व्व	१२- हरिवंश पर्व्व	रामायण तुलसी कृ-	बाल्मीकी रामायण
स्वर्गारोहण पर्व्व	महाभारत सबलसिंह	सातों काण्ड	भाषा
हरिवंश पर्व्व	१- आदि पर्व्व	१- बालकाण्ड	अद्भुत रामायण
महाभारत पर्व्व सं-	२- सभा पर्व्व	२- अयोध्याकाण्ड	शुक्रनीति
लेहरा भी हैं	३- विराट पर्व्व	३- आरण्य काण्ड	रामदृष्टि व रामचंद्रोदय
१- आदि पर्व्व	४- उद्योग पर्व्व	४- किष्किन्धा कांड	कृष्ण गीतावली

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ सुदामाचरित्र ॥

बीरकविकृत ॥

छप्पै। सुमुखएकरदकपिलईशगजकरणदानिमति ल
म्बोदरअरुबिकटबिघ्ननाशनगणाधिपति धूम्रकेतुगणना
थगौरिसुतभालचंद्रबर बारणबदनप्रसिद्धसिद्धिदायकसं
कटहर कहबीरजगतमंगकरणबक्रतुंड कलिमलहरण द्वा
रसंतसंतनिसुखदसुजैजैजैअशरणशरण १ सुंदरलसत
बिशालभालसिंदूरपूरबर मनहुंमुदितगिरिउदितअरुण
प्रतिबिंबसूरकर सुगडादगडसुरेशबेषइकरदनबिराजत
लंबोदरभुजचारिचारुउत्तमबपुछाजत अघहरगिरीशगि
रिजातनयभयोजासुयशधवलजग करजोरिबीरअतिमुदि
तमनकरतप्रणतिप्रतितासुपग २ ॥ सो० ॥ सोजगमाता
बीरदेहैबुधिअरुमोदबर मेटीस्वइपरपीरदानवसकलसँ
हारिकर ३ ॥ दो० ॥ लसतललितआभावलीउपजावत
आनन्द सुन्दरलसतसरोजसेचरणबंदिजगचंद ४ तहांन
महिमारावरीजहँपढ़िगायेसंत बुधिदायकतबहोहुजोअ
पढ़होहिंबुधिवंत ५ नहिंजानतकछुछन्दबिधिनहिंकबि
ताकीरीति चरणबंदिअघहरणकेकहौंश्यामद्विजप्रीति ६
श्यामसुदामाचरित्रमेंबिमलबिशददशअंक करुणाबरणी
लयसुयशकह्योंजहांप्रत्यंक ७ यापहिलेहीअंकमेंद्विजक

रितियसम्बाद बहुरिकन्हैयापैचलेमग्नहोतअहलाद ८ सुगमसुरतिगुनसोंगुहीनामअक्षघनश्याम रहतिमालहि यमेंसदायातेनामसुदाम ९ ॥ क० ॥ ब्राह्मणकुलीनहरि प्रीतिमेंसरसलीनधरमप्रवीणबरनारिबरदेखिये वेदओ पुराणसबजानतनिदानजपतपकेबिधान युतज्ञानमगपे खिये नामतौसुदामागृहपैनककूसामायातेदिनओ त्रिया माचितचिन्ताअवरेखिये सौगुणजोहोहिंकिननीकेबहुभां तिनसोंदारिदकेहेतुतेऊओगुणसेलेखिये १० घरघरडो लैपैनबोलैकोऊहितकरि चितकरिकोऊताकीसुनतनबा निहै भ्रामकरिगावतहूपावतछदामनहिंढूढ़त फिरतबहु पारसकोदानिहै आशधरिजातहैसकामधनवंतनके निपट निराशहियहोतदुखआनिहै नारदसेनीतिकेबिशारदनि भाष्योयहैदारिदजगतएकअवगुणकीखानिहै ११॥स० ॥ संपतिहैनककूघरमें द्विजकेमनमेंअतिशोचभयो गतिपावै नहींजबहींतबहींहियखेदकलापनियोंउनयो चलिद्वार निद्वारनिवारनिवारनिबैनकहैअतिलोभमयो उठिभोर हिंतेयहिभांतिनब्राह्मणदौरतिदौरितिहारगयो १२दूबरी देहभईअतिहीअरुगेहनहीं कछुलागतनीकोचक्रचढ्योचि तवैचहुंधाचकवाइसयानगयोसबजीकोशोचकरैकितजाऊं कितैजगकोअबदूरिकरैदुखहीको संपतिसोननिवासभ र्योतौजहांनमें बाससबैबिधिफीको १३ क्षितिस्वाति यकेघनसोंधनदानहैकोचितचातिकप्यासहरै फिरिदान निभानसमानजहांनमेंकोयहबारिजमोदभरै जगमेरेम नोरथपूरणकाजको देवतरूवररीतिधरै भुविबारिद

सीझरिसंपतिकी करिदारिदपंककोदूरिकरै १४ ॥ दो० ॥
यहिबिधिचितशोचतचल्योद्विजकेअतिसंतापु संपतिइत
नीपैलखैघरघरनीओआपु १५ तजतनचिंतातनकचित
कितीकरीमनुहारि दुचितदेखिपियदुखितह्वैबोलीद्विज
कीनारि १६ ॥ द्विजपत्नीवर्णन ॥ क० ॥ सोहतिअरुंधतीव
शिष्ठमुनिपासजैसे कश्यपके पासजैसेअदितिबखानिये
रेणुकासुहाईयमदगिनिसमीपजैसेअगिनिसमीपजैसेस्वा
हापहिं बानिये जैसेकामदेवजूकेराजतसमीपरति शंकरस
मीपसदासतीसनमनिये रूपगुणधामाशीलसिंधुअभिरा
मावीर तैसेहीसुदामाजीकीबामाजगजानिये १७॥दो०॥
श्रीपतिकोज्योंइंदिरारतिपतिकोरतिपेखि त्योंहुलसीहिय
द्विजतियापियमुखहुलसतिदेखि १८ ॥ अरिल्ल ॥ द्विजकी
बरनारिनिहारिदशाद्विजरायकी पियसोंबिनतीकरजोरि
कछूपरिपांयकी पियशोचकरौकेहिहेतुनकारजजानिये के
हिभांतिनसोंउपचारबिचारबखानिये १९॥तियबचन॥स०॥
बूझतयोंद्विजनारितहां पियपांयपरौंकहियेकिनसोहै रा
वरीआननआनँदसोंलखि होतइतैहियमोसुखमोहै दूबरी
देहभईकेहिकारण बाढ्योचितैदुचितैअरु जोहै सोधकगू
रनलोंपतिपूरित कौनसो भौन पुरंदरकोहै २० ॥ दो० ॥
नहिंबोलतकारणकहाहमसोंकहागुनाहु दैउत्तरसमुझाइ
येइतनोही जगलाहु २१ ॥ स० ॥ हँसिहेरतकाहेनहींह
मसों कछुहेतुसोकाहरिसाइगयो बरदानकह्योतुमकाहुहि
देन कहाअबपीतमसोनदयो मुखबोलियेखोलियेचित्तकी
गांठि हियेअतिमेरेबिषादछयो इतज्योंज्योंतियामनुहारि

करैं उतत्योंत्योंपियाचितशोचभयो २२ ॥ दो० ॥यहअब लाजानैनहीं उतरुनदीजैकौन यहीहेतुअतिचकितचित गहीसुदामामौन २३ बहुतकरीमनुहारिपै देतनउत्तर पीव बड़ोखेदतियहियबढ़ेउ निसरनचाहतजीव २४ ॥ हरिगीतिकाछं० ॥ तबदेखिअतिदुखसोंभरीनिजबामबि प्रसुदामकी मुखबोलियोंकहिघरनिसुनुकछुहैन सम्पति धामकी जेहिलागिजपतपकरतनरजगलहतसुखसम्भोग है सोइबिधिनदीन्हींलक्षमीतेहिहेतुउपज्योशोगहै २५ ॥ दो० ॥ योगयज्ञकोलेतफलकरतसकलसुखभोग सबही कोनीकेलगैंसम्पतिवारेलोग २६ यातेसम्पतिकेलिये करतउपायअनेक सोयहजानतसकलजग हैलक्षमीसब एक २७ ॥ क० ॥ होतनहींसम्पतिसुमुखिसुनु जाकेघर ताकेनितशोचकेसमूहछाइयतुहै सम्पतिबिहीननरकेतकौ कुलीनहोइ येरीअकुलीनकहिनाहिगाइयतुहै सम्पतिकी चाहगुणगाहकअनेककरैं सम्पतिउछाहनिदिगंतरजाइय तुहै सम्पतितेहूजेसरदारपरिवारहूमें पारावारपारहूमेंज गयशपाइयतुहै २८ सम्पतिसोंपूजीजातिक्षितिमेंक्षितीश सबसम्पतितेसुयशसमूहछाइयतुहै सम्पततेदानसनमा नपरमानबढ़ैसम्पतितेज्ञानकोठिकानोगाइयतुहै याहीका जसम्पतिकेगाहकप्रवीणहोत सम्पतितेसबहीकेमनभाइ यतुहै सम्पतितेसातोंद्वीपभोगकेबिलाससबैबिनहीप्रया सघरबैठेपाइयतुहै २९ ॥ दो० ॥ दईसम्पदानादईधर्म आपदामोहिं मोसोंबूझतिहैकहासूझतनाहींतोहिं ३० ॥ कुण्डलिया ॥ दुचिताई सबजायक्योंक्योंकरिसम्पतिहो

इ चितबिचारुहितबेगदैकहिप्रवीणमतिजोइ कहिप्रवीण मतिजोइदोयइकनहिं बनिआवै नहिंसुखसोंजगबासन हींपरलोकबनावै करहिंकौनउपचारकहातेरेमनआई टू टोसोघरदेखिमोहिंबाढ़ीदुचिताई ३१ ॥ दो० ॥ यहसुनि द्विजघरणीतबैजान्योपियमततंत दुखितदूबरेदेखियतुस म्पतिकेहितकंत ३२ ॥ स० ॥ पायबिषादकोहेतुतिया चितहीमेंउपायकियोअनलेख्यो देवधुरन्धरईशपुरंदरकि न्नरकिन्नरकोपतिपेख्यो दौरिदिशानदिशानगईमतिपैय हठीकहियेअवरेख्यो चौदहलोककोठाकुरएकइसम्पति कोपतिश्रीपतिदेख्यो ३३ ॥ स्त्री वाक्य ॥ रावरीहैपहिंचानक हूंपियसोंअबमोसोंबखानिकहौकिन होहुसुखीमनमाहिं बिचारिकैपीतमदीरघशोचकरोइन होतललाटलिखीमि टिहैनहिंसाहसहोउउपायकियेबिन देहिंगेसम्पतिऔसु चिताईतुम्हैंजगमेंदुचिताईदईजिन ३४ ॥ दो० ॥ दुख समूहजगनरनको अनचाहेज्योंहोत अकस्मातसोहरिकृ पा प्रगटतहरषउदोत ३५ ॥ कहौरावरीहैंकहूं काहूसोंप हिंचानि बचनमधुरमुखबोलियेअरजहमारीजानि ३६ ॥ तोमरछं० ॥ तियबचनसुनिपरबीन सुधिहियेद्विजबरकीन हरिप्रेमरंगतरंग उमड़ेहियेउतमंग ३७ जलसोंरहेभरि नैन द्विजकहतगदगदबैन सुनुघरणिगुणअवदात यहबहु तदिनकीबात ३८ हमनन्दनन्दनसंग बहुभांतिकीन्हेंरंग सबकहेतेनहिंजाहिं मतिमोहिंयेतीनाहिं ३९ गुरुघरपढ़े यकसाथ बलदेवहमब्रजनाथ अतिलहीआनँदखानि शिशु तागईयहिबानि ४० नितगोचरावनजात बलभद्रहरि

परभातइकघोसयकबकआइ लिलिलईसबब्रजगाइ ४१
हरिचीरियों मुखतासु कछुभयोनाहिंप्रयासु यहबात
अद्भुतनारि हरिलईगाइउबारि ४२ इकबेरनभघनघोर
बरष्योपुरंदरजोर हरिछत्रगिरिवरकीन्ह ब्रजराखिब्रज
पतिलीन्ह ४३ धनिधन्यगोपकुमारि जिनकेजुमीतमुरारि
निशिद्योसहियअभिराम जिनकेरहेघरश्याम ४४ सुनि
सुभगगुणबरनारि हरिसेनहींहितकारि तिनसोंजुहैपहिं
चानि यहशोचनिजमनमानि ४५ अबद्वारकाछबिछाज
ब्रजराजराजऽधिराज सबभूपबंदतताहि फलभारभरिभ
रिजाहि ॥४६ सो० ॥ हरिसोंहैपहिंचानिसुधामधुरपियब
चनसुनि धन्यअपनपौमानिहियहुलासबोलीतरुनि ४७॥
स० ॥साथपढ़ेहमओब्रजनाथजुपैतुमनाथयेबैनउचारो तो
अबशोचनमोचतक्योंपियलोचतजाइननंददुलारोकाहेको
बैनउदासकहोअरुकाहेकोएतौसहौदुखभारो जोब्रजराज
भयेमहराजतोक्योंद्विजराजनबेगिसिधारो ४८॥दो०॥
हितबानीनिजघरनिकी नहिंआनीमनमाहिं शुचिमानी
बोलेनकछु मनहुसुन्योपैनाहिं ४९ ॥ स० ॥ हरिपैकछु
मांगनकाजपठावतिजोयहिद्वारकैजानकह्यो सुनिप्रीति
पुरातनमेरीगुपालकीया हीतेमोहमहाउमह्यो यहजानि
नितंततियामतिकंतयहीअभिमानकोग्रासगह्यो सतराइ
नबोल्योकछूद्विजराजपै भौंहचढ़ाइकैबैठिरह्यो ५० ॥
दो० ॥ जाउकहतिहैद्वारका हरिसोंमांगनकाज यहैजानि
मुखमौनगहिबैठिरह्योद्विजराज ५१ ॥ त्रियउवाच ॥दो० ॥
भोरकरतकतमौनगहि कहीनकछुमृदुबानि जाइद्वारका

देखिये सुखसंपतिकोखानि ५२ ॥ क० ॥ ध्यावतहैंईश जाहिसंततदिगीशबीर नावतहैंशीशजेमुनीशबरभेवके सो तोहैतिहारोमीततनकनिहोरेजाहि पूरणमनोरथनिहोत गणदेवके संपतिसुयशपरतापकेधुरन्धर पुरन्दरसेयाके जगजाहिरहैंसेवके बेगिक्योंनजइयेकंतभ्रमक्योंलगइये जाय नयननअघइयेदेखिभइयाबलदेवके ५३ ॥ दो० ॥ फरक्योहियनासाभईरिससोंभरेहैंनैन तकितकितरुणी तनतहांबीलतब्राह्मणबैन ५४ ॥ सुदामोबाच ॥क० ॥ राजत सिंहासनकेआसनबिराजमान छाजतबितानआसमानल गितानेहैं संपतिप्रतापपूरेसुयशगरूरेजहां भूपतिसेबंदी जनबोलैंबरबानेहैं हीरनिसोंछरीछरीलीन्हेंप्रतिहारबेष राजतदिनेशअलिकेशपरमानेहैं मौनगहतीहौनाहिंजान कहतीहौतहां तुमहींअयानी कैधौंहमहींअयानेहैं ५५ ॥ त्रियउवाच ॥क० ॥ जाहिजनयांचिकैअयांचीहोततीनोंलोक ओकनारहतकछुचाहधनओरकी तिनतेपहारछीनितिन हींमेंकरिदेत ऐसीजाकीरीतिक्षितिदयादृगकोरकी हठि हठियातेउतजानयहजानकहे मानिमनआनिछबिदानि शिरमोरकी करतपुरंदरसेजासुपगअरचासुचर्चाकहांहै तहांतनकसेरोरकी ५६ ॥ सुदामोबाच ॥ क० ॥ तुमतौन जानोकछूयोंहींबकबादठानो मानोंकहींनेकमुखमौनगहि कैरहौ पीछलीचिन्हारिनारिसुनिकैमुरारिजीसों मनअ-भिलाषलाखभांतिनकेक्योंकहौ जोपैनिरधारकैबिचारि करिराख्योयहै दौलतिपरारीधनवंतिनिभईचहौ तौकिन निकाईपाइसपनेसोंअपनाइ तीनोंपुरराजसुखसाजिघर

हीरहौ ५७ ॥ त्रियउवाच ॥ क० ॥ नाहदिननाहकोप्रताप बढ़ैजेतोसुनो बारिजकेगोततेतोहितउपजाइये आमदनी होतनिशिजेतीचंदचांदनीकीतेती एकमोदकेउमेदसरसाइये तैसीयेतिहारीऔबिहारीकीनिहारीप्रीति यातेहमबार बार अरजसुनाइये जोपैद्विजराजक्योंलजैयेमहाराजमानिहरिहूसेहितूजानिकाहेदुखपाइये५८॥ सुदामोवाच ॥ क० सातोंद्वीपद्वापनकेरहतमहीपजहांकोटिकदिवाकरसेचाकरसुनाइये सुकृतसमाजरतिराजकेस्वरूपराजैं राजकेसुभायपुरलोकनिगनाइये मैलेतनबसनमलीनेमनहूकैतहां जाइब्रजराजजीकेमीतक्योंकहाइये चोरीचितबूझिफेंटबांधिकैपिछौरीछीनि हरिसेप्रवीणमित्रकैसेकैलजाइये५९ ॥ त्रियउवाच ॥ क० ॥ अरजनमानोनाहआन्योधौं कहाहैचित हितकरिजानोमतबातजोजनाइये पूरबसुकृतसूरमित्रकी कसौटीएक संपतिसमरएकआपदकहाइये रावरोनजातकछूजातब्रजराजजीपैलखियेन जाइकिनबीरसुखदाइये पाइयेजोआनँदतोरहियेदिनाकउतनातौतुरंतलैकैदर्शननआइये ६० ॥ सुदामोवाच ॥ दो० ॥ कहतिकहासकुचतिनहींतेरेकहिबेयोग भयेमीतकाकेसुनो भूमेंराजालोग ६१ ॥ क० ॥भांतिभांतिभानुकेप्रकाशबलवारेभूप भूपरअनेकरूपतेजनिकहाउरे श्रीपतिमिलापपासआशदरवानिनके रहतसदासोकछूचलतनचाउरे कैसेतहांजइयेब्रजराजकेकहइयेमीतजातनालजइयेनेकदारिदसुभाउरे वेऊसरमेंहैं हरिदरशनदेहैंसुनुआखिरकहैहैंहमजाइउतबाउरे ६२ ॥ त्रियउ वाच ॥ स० ॥ आगेहुते

सबलायकवै अबनायकजोपुहुमीकेकहीजै यातेकहाकछु औरभली हमतोसुनिश्रवणसुधारसपीजै जेप्रभुतामेंतजैं पहिंचानि तिन्हैंसमक्योंनँदनन्दगनीजै वैसहीरावरेसों मिलिहैं हरिकंततुरंतपयानहिकीजै ६३ ॥ सुदामोवाच ॥ क० ॥ पारिजातपुष्पहार मलयपहारहिम गिरिजा गिरीशगिराछबिकेबिशारदी कासकैलासहासहंससुर गजनीर क्षीरनिधिहीरओजुन्हाईशुभशारदी सुरसरी शेषबपुकरकाकपूरमोती येतोसबबीरजाकीकीरतिपैवारदी ताकेढिगजायक्योंकहाइब्रजराजमीत निपटअभीतचितबै ठौउतदारदी ६४ ॥ त्रियउवाच ॥ क० ॥ हरिसेन दानीसनमानीकहूंऔरऐसे ठौरठौरयशपुंजजाकेरहेभरि हैं काहेकोसकातजलजातनयनपासजात देखतहीगातअ वदातमादभरिहैं वेतोमहाराजहैंगरीबकेनेवाजयाते सुन तअवाजदीनदारिदकोहरिहैं लगिहैनबेरउन्हैंसम्पतिके देतढेर क्षणहींमेंनाहवैकुवेरतुम्हैंकरिहैं ६५ ॥ सुदामोवाच ॥ क० ॥ जाकेनिजदासनकोकमलाबिलाससबै सकतब खानिकैफणिन्द्रजूकेफननातीनोलोकमांहकछूचाहचित हूमेंहोइ ऐसेसुनुबौरीजाकेपरिजनजननाराजनकेराज ब्रजराजमहाराजआज तिनपैपठावैकहीमानतिहैमनना जानिघनश्यामैङ्कांकोमानिहैंसुदामैजहां करतनकोऊहैपुरं दरकीगनना ॥ ६६ ॥ त्रियउवाच ॥ स० ॥ अबजोप्रभु ताईबताईयतीप्रभुतोअतिहीवेदयाधरिहैं यदुनंदनशील केसागरहैंकरिआदरपांवनहूंपरिहैं यहगेहतिहारोतुरंत हीनेहकैश्रीपतिसम्पतिसोंभरिहैं पियबारिजनयननसों

हरिहेरतरावरीदीनदशाहरिहैं ६७॥ सुदामोवाच ॥ दो० ॥ तबकीगतिकछुऔरथीअबकीगतिकछुऔर वेहरिअबरा जाभयेभूपतिलकशिरमौर ६८ ॥ क० ॥ खोजसीपरी हैआजयाहीबिनकाजजोपैलागचितसम्पतिइलाजनकीढे रिया मानअनुमानभूपतेजकेनिधानजहांहठिहठिमोहिं तहाँजानकहैबौरिया ऐसेउतजैहौंहरिमीतक्योंकहैहौंस बभांतिनलजैहैं।ओढ़िजीरणपिछौरिया कहिहैंकहाहैं। पौरिश्यामकीसुदामाजाइ बूझैजोकदाचिआइनामहरिपौं रिया ६९ ॥ चियउवाच ॥ क० ॥ नाहकलजैहौस्वामिशो चमनमांहकरौसोहैंतुम्हैंनेकनन्दनन्दनपैहोतही मंडिहैं दिगंतपियसुयशतिहारोसबबढ़िहैप्रवाहसुखबारिधकेसो तही रावरोगोपालकोमिलापलखिलखितहां ह्वैहैअभि लाषलाखलाखसुरगोतही दारिदनरैहैयहिभाँतिसोंबि लैहैजैसेतिमिरसमाजदिनराजकेउदोतही ७० ॥ सुदामो वाच ॥ दो० ॥ रचौकोटिफरफंदकिन करौकोटिछलछन्द कहौंतिहारिदीनह्वै क्योंलखिहैंनँदनन्द ७१ ॥क० ॥ सदा पदझूमैंभूमैंधरतिनसकतशेष कसकतकूर्मऔससकतहैशू करौ ऐंड़वारेडीलनिदरारेकारेभारेगजडारेबारिजिनपैही बिधिसमभूपरौ ऐसेकरभारछरीदारनसोंबारबीरभूपति जनावैपैनपावैनेकऊतरौ येहीबिरुरैहौंकुलकानिसबैसैहौं पैनहरिजूपैजैहौंजाइकोटिनकछूकरौ ७२ ॥ चियउवाच ॥ दो० ॥ काहेसकुचतपियातुम लखौजाइब्रजचन्द कहा भयेक्षितिपतिनयेशीलसिन्धुयदुचन्द ७३ ॥ क० ॥ कम लसेपगआछेअनूपमजानुजंघकटिपटपीतउरग्रीवाभुजचो

रकी अधरसहसश्रवणकुण्डलकपोलनासामंजुरतनारी आंखिपाँखिशिरमोरकी बीरसुखदानिसबैजातिनबखानिऐसीलखिकैछबीलीछबिनंदकेकिशोरकी चारोंफलपाइबहुभांतिनअघाइपिय आइबीनिकेतकनिकेतयहरोरकी ७४ ॥ सुदामोवाच ॥ सो० ॥ कहतिकहानिश्शंकरतनबास जहँमित्रहरि तहांजाइकैरंक करैकलंकितक्योंपुरी ७५ क० ॥ द्वारप्रतिद्वारप्रतिहारनिकेआनितहांऐसीभांतिके हूपुरपैठननपाइहौं मणिनजटितदेखिकंचनकेधामनीके हीरनकँगूरिदूरिहीतेलललचाइहौं छाजतछतीसलोंछती सौंजातिपखितहांयेहीअवनयेदीनअंकनिगनाइहौं जाइ ब्रजराजजूकेऐसोवहद्वारकामेंहौंहींनयोरंककोकलंकनाल गाइहौं ७६ ॥ तियउवाच ॥ क० ॥ कोटिकेटिभांतिनकी कामनाकोकामधेनु चिन्तामणिवारिजातपारसकलपतरु बर्षतमोदज्झरिपानिपसोंसरसतु दर्शतओजतासुसुन्दर सरोजकरु तापैपियजाहुजियकरिकैउछाहहिय संशयअनेकतजिदेहुबहुरूपडरु करुणाकेकरेतेपावतबरबीरयह बहुरिबिलोकिबोकुबेरकैसोआयघरु ७७ ॥ सुदामोवाच ॥ कुण्डलिया ॥ हमसेदीनगरीबकीचरचाकरिहैकौन सम्पतियुतआनन्दयुतश्रीपतिजूकोभौन श्रीपतिजूकोभौनभूपसबआवतभूकेलियेखड़ेकरभारद्वारप्रतिहारनरूके तपतजासुपरतापतापहरदिनकरसमसे क्योंकरिपावेंतासुकहोहुइदरशनहमसे ७८ ॥ तियउवाच ॥ दो० ॥ जोनरावरीलेहिंगेसुधिश्रीपतिमहराज तौउनहींकेबिरदकोजगउपजैगीलाज ७९ ॥ कुण्डलिया ॥ नायककोस

बलोकको सुखदायकपुनिजानि हरिजूपैपगधारियेदीन बन्धुपहिंचानि दीनबन्धुपहि चानिजासुजगजाहिरबानो परमबिबेकीबीरकहांलो गुणगणगानेरूपवंतयशवंतजग तबरउपमालायक जाहुद्वारकाबेगअरजमेरीयहनायक ८० हरिहैंसम्पतिछाइकै भवनरावरेआइ परसतही आनन्दयुत दीनबन्धुकेपाइ दीनबन्धुकेपांइपापत्रयभंज नजानो परमबिचित्रबिचारिकंतयहमतचितआनो तु मसेदीनगरीबदेखिप्रभुजोसरमैंहैं दीनबन्धुसेबिरदक हौअबकैसेरैंहैं ८१ ॥ सो० ॥ यदुपतिपदचितआनि ममप्राणनकेईशतुम सुखसम्पतिकीखानिलखौजाइद्वा रावती ८२ ॥ दो० ॥ बहुतभांतितियकेकहे भईबिप्रमन आस पैहौसुखअरुसम्पदादीनबन्धुकेपास ८३ यहैबि चारबिचारिचित हरिपैचल्योद्विजाति दीनबन्धुकीबन्धु ताअबहींजानीजाति ८४ बर्षककीबहुधाफटी दुपटी बांधीफेंट उठोबहुरिउठिकैकहतहैनहाथकछुभेंट ८५ सुदामोवाच ॥ सो० ॥ देशदेशकेभूपमिलतआइकरभारलै तहांजाइकिहिरूप बिनाभेंटहरिसोंमिलैं ८६ ॥ स० ॥ भेंटबिनाकिहिभांतिमिलोंयहिभांतिजबैद्विजबैनसुनायेबा रहिंबारनिकेतनिहारितियातबकोटिबिचारनिठाये हेर तमंदिरसूनोसबैबिललाइगईहियमेंदुखछाये ढूढ़तढूढ़ तभौनकेकोनबरिआइकैचारिकचाउरपाये ८७ ॥ दो० ॥ बहुतकलपतेरंकज्योंओचकिसम्पतिपाइ हर्षभरीअति द्विजतियातेहूंतगड़ुललाइ ८८ ॥ तियउवाच ॥ कन्तरुक्मि णीकन्तकोदेहुआशिषाजाइ धरिदीजोफिरिभेंटउतयेत

गडुलहितपाइ ८६॥ सुदामोवाच ॥ ॥रूपघनाक्षरी॥ बलख ओबोखारीकंधारीकरनाटहूकेकक्षीओंअब्बी देशदेशनिके बाजिराज सुंडनिपियूषपीवेंठाढ़ेचंद्रमंडलमेंगाथनसों भारेऐसेबेषबेषगजराज औरौबहुभांतिनकोखज्जरनिको शमरिजाकेदरबारभूपलावतनजरिकाज तंडुललैभेंटत हांदेतब्रजराजजूकोलाजहीकेपारावार बूड़िजैहद्विजराज ६० ॥ दो० ॥ बड़ीचतुरकहियेकहाभलीबिचारीचोज चा हतघाउरचारिदैतूलाखनकीमोज ६१ ॥ तियउवाच ॥ दो० ॥ उचितअंशमर्यादसोंप्रजाप्रीतिकरिदेतल्यौंद्विजाति कीआशिषाभूपतिहितकरिलेत ६२ ॥ क० ॥ केतकौनजा इकोटिबरषगनाइकरैजपतपनेमबिनभावसबदूपहैं भाव तेबिहीनकिनकंचननिदानदेइतातेभगवानजूनिदानअनतू षहैं कुबरीचढ़ायोनेकभावकरिचंदनतुवबीरनंदनंदनजूनि पटसंतूषहैं तंडुललैजातसरमातकाहेद्विजराजवेतोब्रजरा जएकभावहीकेभूखेहैं ६३ ॥ स० ॥ मानीकहीनिजना रिकिब्राह्मणशोकनितेपटखोलिबिछायो भासछतीसकहूं कोबन्योअरुतापरमूसनहूंचुनिखायो मैलऔधूरिसोंपूरि रह्योहैपुरंदरनयननिलौंक्षितिछायो ठाढ़ीबिचारिरहीति यतंडुलबांधिबेकोकहुंठौरनपायो ६४ ॥ तियउवाच ॥ दो० ॥ बनतनबांधतयहिबसन कितेबिचारेभाइ बांधिलेहुतुमहीं पिया येतंडुलहितपाइ ६५ ॥ फटेबसनहरिअशनहित तं डुलबांधेबिप्र चलेद्वारकासामुहे कहीमानितियछिप्र६६॥

इतिश्रीसुदामाचरित्रबीरकबिकृतपृथमोऽङ्कः ॥

दो० ॥ बिप्रदूसरग्रंकमें लखोद्वारकाजाइ बहुरिन गरबर्णनकरेउ बीरधीरसुखपाइ १ काहूकोकबहूंकहूं भयेनह्वैहैंहोत जातश्यामपैजोद्विजहि प्रगटेसगुनउदो त २ ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ जातलालगोपालपैशुभसगु नजालद्विजैभये वीरजूअनुमानमतिकेकछुकवै बर्णनलये सलिलपूरितकलशलीन्हेंलखीनारिसुलक्षिणी पथिमनो रथकहतपूरणफरकिआंखिसुदक्षिणी ३ दूधदधिमटु कीलियेमगमेंअभीरकुमारिका लखीबारबिलासिनीबर कोककीसीकारिका बिप्रप्रमुदितलखीप्रमदाचढ़ीमजुहिं डोरने सुयशगावैंसरसमनजेकियेनंदकिशोरने ४ लख्यो द्विजदैवज्ञमारगब्रह्मचारीकुशधरे चलेजानिसुभेवकोभु वदेवअतिहियगहबरे सफलकुशमितवृक्षआश्रमऋषभ ऋषिबैठेजहां रंगजावककोबिलोक्योधूमबिनपावकतहां ५ प्रेमसोंद्विजजातिदेखीक्षेमसोंक्षेमाकरी महरिहरिपुर डहरमेंमिलिगईचितगतिहितकरी बामभागसुदामदेखे चाखनकुलमयूरहैं भरद्वाजहिजोहिकै उमड़ेहियेसुखपूर हैं ६ फरकिबारहिंबार द्विजकीदाहिनीभुजभ्रूलता जनु बतायेदेतबिधिकीप्रीयपैअनूकूलता बीरजूमहदर्थसूचक दाहिनेमृगह्वैचले पक्षिपुंजनिकुंजकुंजनिकूंजहींअति हीभले ७ वृषभसम्मुखभरेआवत चाहिबिप्रसुदामजू वीरमान्योन्यायकै हमकोमिलैंघनश्यामजू ठौरठौरनि औरहू बहुभांतिकीबहुधाभली मुदितद्विजबरकरतहूंग पथ बीरजूशकुनावली ८॥ दो०॥ जाकोमोहनपगनमेंअ नुरागीचितहोत बीरताहिदशदिशनमेंसदाशकुनउद्योत ९

स० ॥ मारगजातद्विजातिचल्योहियमाहिंबिचारतकोटि बिचारनि ठाढ़ेक्षितीशजहांपुरबाहिरलीन्हेजवाहिरके करभारनि जाइनपावैदियेबिनलालच द्वारकाद्वारनिके प्रतिहारनि क्योंगथहीनह्वैदीनसुदामा तहांलखिहैंहरि पौंरिपगारनि १० ॥ दो० ॥ नीठिनीठियहिभांतिद्विज लखीद्वारकाजाय बड़वानलकीज्वालसीबारिबाहिरीआय ११ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ सुद्वारावतीजाइबिप्रैनिहारे कहूंजाइदेखेसबैहीरधारे कहूं लालऔपीतनीलीमनीके निकेतैबिलोकेबनेस्वच्छनीके कहूंहैंहरेरीमणीकेबनाये लसैंबीरसोभांतिशोभानछाये सबैरत्नकेस्वर्णकेगेहराजैं घटामेघकीछ्वैछटायुक्तभ्राजैं दियेयोंकँगूरानिमेंहीरजाली उदयसोकियोकोटिधौंअंशुमाली बन्योकोटिहीरानहीकीबिशाला लगीबीघहीबीचमेंमुक्तमाला तहांग्रामबासोप्रकाशीउछाहैं सबैतेजराशीबिलासीमहाहैं सबैदेवबिद्यानकीभेदजानैं सबैधर्मकेकर्मकेठानठानैं सबैमैनकेबंधुसेरूपभासैं भरेपुण्यकेपुंजसेदेवतासैं भरीनाहकेनेहतारुण्यधन्या धरेरूपमानोधरादेवकन्या सबैकामकीबामसोरूपवारी तहांफूलफूलेसबैप्रीतिकारी रहैरैनिहूंद्यौसहूंभौंरघूमैं सुरापानकैज्योंमहामत्तझूमैं तहांछांडिकैमानहूं कीमसूसी पियाकोमिलैजेतियाहोयरूसी जहांछैड़िलैछोंडिकैमानुदीन्हों सबैएकहीसंगहीबासकीन्हों कहूं कोकिलाहंसबोलैंप्रवीने मनोंमैनकेमानह्वैतानदीने कहूं केकिकूकैंसुनीहैसुहाई मनोंकोपिकैमैनगांसीचलाई कहूं देखियेदक्षिणापोतलीके चल्योकामको दूत

सोकामनीके कहूंफूलफूलीनिहारीचमेली मनौमैनकीकी
रतैकीसहेली कहूंकुंदफूलेधरेकांतिआछी मनौकामिनीदं
तशोभाबिपाछी कहूंहैतकीकेतकीझूलभारी लखीबीरहा
भीरहैभारवारी बिलोकीकहूंपुष्पतैयुक्तचंपै शिखालौंजि
न्हैंमूलतेभौंरझंपै कहांलौंकहौंऔरपुष्पानिशोभैं जिन्हैंदे
खिज्ञानीनकेचित्तलोभैं नजानौंकछूफूलकीबाटिकाको ब
खानौंसोकैसेघनीठाटिकाको कहूंसंगलीन्हैंपिकादिकप्रि
याको करैंमोदसोंचुंबनादिकक्रियाको लसैंचारिहूंओररौ
सैसुहाई मनौमैनकेमोहिबेकोबनाई तहांबापिकास्वच्छ
हैंनीरधामा लखेकमलकेवृंदतामेंसुदामा १२ ॥ दो० ॥
ऐसीछबिलखिकैतहांरहे नयनललचाय नीठिनीठिचलि
कैगयो पनिघटकोद्विजराय १३ उमड़िउमड़िचहुंओरते
आवतलहरिउमाह देख्योबारिधिरुचिरतहँ परितनीर
अथाह १४॥ बारिधिवर्णन ॥ क० ॥ दीठिकेपसारेनीरपूरि
परिपूरिरह्यो फूलनमेंफूलेभांतिभांतिबनजातिहै ऊंचेचहुं
ओरनितेउमड़िउमड़िआवैंरैनिदिनदीरघलहरि दरसा
तिहै मेरेजानबारिधिनिहारिसुखनारिनकोकोटिचन्द्रजा
निजियएतौसरसातिहै आनँदहियेकेउफनाइउफनाइअ
तिउछलि उछलिआयबाहिरदिखातिहै १५ ॥ उझलि
उझलिझापिझापिजातिजातिवृंद मानौबडवाग्नितप
आशनिडरतुहै भूमिअवतंसहंसमुनिसमबैठेतीरनिपटअ
थाहनीरपरक्योंधरतुहै मोतीमाललालमणिमानिकऊरै
निदिनलै करितरंगनिसोंकूलनिभरतुहै मेरेजानिद्वारका
कीदेखिद्युतिबारबाररत्नाकररत्ननिनिछावरैकरतुहै १६ ॥

दो० ॥ शचीसहोदरसीसबैभरीरूपकीभीर सुकुमारी नारीतहांखड़ीनीरनिधितीर १७ कनककलशशिरपैलि येसाजेसकलशृंगार रूपरुचिररतिसीसबैद्विजदेखीतहँ दार १८ ॥ पनिहारिनिवर्णन ॥ स० ॥ आननचन्दकीबास नाचोरतीमोरतीगौनगयन्दनिभीरको खंजनमानकैगंज ननयननचावतीआवतीनीरधितीरको ऐंठतीसीभुजमूल उठाइउमेठतीओढ़निचूरतीचीरको रूपवतीरसपुंजभरी खरीदेतीचुनौतीशचीकेशरीरको १९ ॥ क० ॥ कुन्दन कलशलीन्हेंनीरअमिलाषकीन्हेंकनकलतासीहैं निकेतनि तेआवती लचकिलचकिलंकशोभाकेसमूहजातचन्दऐसे आननबिलासदरशावती कोकिलानिबैननिचकोरमीन नयननिऔगौननिगयन्दकलहंसनिहरावती चारुसुकु मारतनयौबनकेभारभरीरूपकेपसार मैनरानीकोलजाव ती २० केतकोनजाइकोऊदेइसुघराईकरिराईभरिहोइ तऊजावकनजाहिरो लालमणिमाणिककोभूषणनिकेत होतपहिरैजितेकअंगअंगनिजवाहिरो ऐंड़भरीपंड़डगदे तीवैसलोनीतबऐसीद्युतिदेखिचुपकबिकुलमाहिरो ईंगुर सोंरंगकछूझलकिझलकिआइछलकिछलकिजातपाँइनते वाहिरो २१ कमलगुलाबकरिकेहरीसुधाकोकूपमंजुबाल व्यालचक्रबाकनिलजावतीं बारिजसनालनिकपोतकल हंसनिकेबिद्रुमबधूनउरशालउपजावतीं कीरऔचकोरम धुपांतिमोरपच्छदूषिपूरनिकलानिचन्द्र दूषणलगावतीं भूषणसीद्वारकाकीदेखियेसलोनीबीरऐसीद्वबिबीरधरैनी रभरैआवतीं २२ मोतिनकीमांगशीशफूलआड़केशनकी

बेसरितरेउनाज्योंनिरौनाछबिगेहरी कुंदनखटीलाओंचु टीलाबड़ेमोलनकेहीरनकेहारभरेप्रीतमसनेहरी बाजूबंद बेसचूरीपहुंचीसुदेशसबैभूषणसमाजधररूपअहमेहरी किं किणीसुहाईमनोबाजतीबधाई तैसीकंचनकीघूंघुरूजराइ नकीजेहरी २३॥ दो०॥ एकएकतेआगरीरूपनागरीबा ल लियेशीशलखिगागरीद्विजबिलख्योतेहिकाल २४॥ द्विजविचार॥ शचीरचतकरतारचेजिनकेमंजुशरीर राजकुमा रीतेसबैक्योंभरतींयेनीर २५॥ कुण्डलिया॥ भरिहैंआनँ दसोंहियेाकरिहैंसौधनिवास पुरबाहिरकोआइहैगुरुलो गनकीत्रास गुरुलोगनकीत्रासवेदतेमानेाभारी लाजशी लमैंकहीजगतमेंराजकुमारी तिनहिनहींयोयोगशीशघट वैनहिंधरिहैं बीरनीरनिधितीरनीरवैकैसेभरिहैं २६॥ दो०॥ यहिबिधिदेखतरुचिरबहुसुखमासकलसुदेशमंद मंदचलिद्वारकाद्विजकीनोपरवेश २७॥ मौक्तिकदामाछंद लखीद्विजद्वारकाजायअनूप गढ़ेजितहींतितहींयज्ञयूप बँधेअतिआनँदबंदनवार लसैसबकंचनहीरअगार जहांल खिकैबरपुण्यप्रकाशजहांअलकाअमरावतिबासधरेनरनी तिकरैंजहँकर्म लखैंसबभांतिजहांसतधर्म रहीजहँचोरि यकाननजाइ अलीकजहांतियमानहिंपाइ कठोरजहांत रुणीकुचजानि रहीतहँबङ्कताभौंहनितानि जहांइकक्षीण तियाकटिबेष लख्योतहँबंधनकिंकिणिकेश जहांइकक्षत्र हिंदेखियदण्ड प्रहारमहाघरियारप्रचंड जहांजनराजत देवसमान सबैअतिसुंदरशीलनिधान सबैधनवंतमनोअ लकेश सबैप्रभुमानहुंआहिंसुरेश सबैजहँजानतज्ञानवि

लासमनोगुणमंडितपंडितव्यास सबैजहँतेजभरेजनभान
सबैचितउन्नतमेरुसमान सबैबलकेथलमानहुंशेष सबैयश
वंतमनोनखतेश सबैगुणसागरनागरलोग करैंजहँबैठि
धरासुरभोग जहांलखिनारिनशोभसमाज हियेउपजै रति
केअतिलाज कहूंनहिजोछबिलोकनतीनसुतौदृगगोचरङ्कां
द्विजकीन जहांजनबैठिअलापततान लसैंवरकिन्नरकेअ
नुमान लखीकहुं जाइअटापरबाल रचीउतरीनभतेजनु
हाल कहूंशुकएकपढ़ावहिंनारि लसैपियकेलिकलाहित
कारि कहूंद्विजबारबधूगणदेखि बढ़ावतआनँदद्वन्दबिशे
षि कहूंचित्रसारिघनोछबिभीर यथामतिसोवरणीकछु
बीर लखीतरुणीकहुं रूपनबीन सबैबिधिकोककलापर
बीन लखीकतहूंतियरूपअपार बिलोकिजिन्हैंचितहोत
बिकार लिखेकहुं कामिनीकंतबनाइ करैपरिरंभनमोद
बढ़ाइ कहूंतियवृन्दनयोंछबिदेहि नचैंथिरकैंफरकैंजनुलेहिं लिखेकहुंसूरजहैंअरुचन्द कहूंनखतावलिरूपअमंदक
हूंशुकहंसकहूंपिकमोर लिखेकहुं कोकिलचारुचकोरकहूं
चकवाचकईसुखहेत लियेबिसतंतुपरस्परदेत कहूंचपला
युतनीरदकांति लिखीजहँमंजुलहैबगपांति कहूंनिंबुआ
नारंगीअंब लिखेकहुंपुष्पितवृन्दकदंब कहूंवरचंपकगुच्छ
लवंग कहूंलिखेचित्रअनेकतरंगकहूंशुभजातियहैअतिआ
ब कहूंचिततरुकरस्वच्छगुलाब कहूंहरिचंदनचंदनचारु
लिखेसबभांतिनफूलप्रकारुलिखेकहुंचारुगयन्दगरूर झ
रैंजिनकेकटितेमदपूरि कहूं हयबेषसुदेशकुरंग सहोदरसे
जनुसूरतरंगकहूंसुरभीअरुबच्छसुदेश लिखेकहंचीतरबी

तरबेश कहूं मृगराज लिखेयहिभांति बिदारतहैंगजराज
निपांति कहूंमृगयाकरयुद्धअपार अनूपलिखीकहुंरूपत्र
हार कहांलगसोबरणीछबिजाइ रचीजेहिंचारुचिसरचना
इ२८॥ दो० ॥ चलतनइतउततनकचित उरझोरुचिरचरि
त्रदेखतहैंपुरजननद्विजमनहुं लिखेहैंचित्र २९ धरतनपग
पगदृगतहां लगेललकिललचात ऐसीछबिलखिवीरद्विज
हरषितपुलकितगात ३० लसैंसुहायेरूपतहँ धरेमेरुम
र्याद सबैजातिमणिगणनकी द्विजदेखप्रासाद ३१ जो
कबहूं काहूकहूं लखीनतीनोलोक सोबहारब्रजराजकेपु
रबासिनकेओक ३२॥ भवनवर्णनम् ॥ क० ॥ लागतहीचं
दकरचन्दमणिसौधनितेशीतलअमन्दबारिवृन्दझरिबोक
रै तापहरआनँदकलापकरजुरिजुरिजलकेप्रबाहतेगली
नढरिबोकरै बीरयदुबीरपुरनीरकीरुचिरभीरऐसीभांति
बापीसरकूपभरिबोकरै द्वारकाकेबासीएकतजिकैअभाव
सकोछहूं ऋतुपावसबहारकरिबोकरै ३३ पावसकपूरके
पहारसोंअपारमदफटिकअगारद्युतिऐसीसरसातिहै श्री
पतिसुयशरूपउदितप्रकाशकोटिशंकरअबासकीसी आभा
उफनातिहै फैलीचहूं ओरजोरदीपतिपियूषबरशरदकी
सुंदरजुन्हाईसीसोहातिहै द्वारकामेंआछीछबिसित औ
असितपक्ष सबतिथिहूमेंनिशिसूनेाहीदिखातहै ३४ उ
न्नतअटाकेमित्रघनकेघटाके मंजुकोटिकबनायेनीलमणिके
अगारहैं सोहतसलोनेरूपभूपरअनूपछबिजिनकीतिहूं
पुरमेंऔरैसमतारहै मेरेजानसूरजकीत्रासभ्रमितीनोंलो
कलैकैसंगआपनेसकलपरिवारहै द्वारकामेंआइब्रजरा

जकीशरणमानोरातिदिनअंधकारकरतविहारहै ३५ब
नानिघटानिऊंचेकनकअटानिपरखेलतीसलोनीदेहदीपति
सोंदमकै भूषणसुहातहैजवाहिरकेबेषबेषकुंदनसेगातउ
ठैकैयोजेबजमकै छहरिछहरिजोतिसारीकीकिनारीहो
तिशशिसेबदनद्वारआइआइझमकै चंपकलतासीचारुदी
पकशिखासीदेखिचमकिचमकिनारीचपलासीचमकै ३६
देखियदुबीरपुरअंगनानिआननकोऐसेउरअंतरनिरंतरद
हतुहै जानिनिजुदीपतिकेजैतवारनिजुमतिसकुचिसकु
चिइमिलाजहिंगहतुहै कबहूंसघनघनगगनगरभजाइ
बिकलछपाइपलकलनापरतुहै कबहूंसमुद्रपूरिकबहूक
सूरमध्यलुकिलुकिबापुरोकलानिधिरहतुहै ३७॥ दो०॥
कहूंजाइद्विजजूलखे उन्नतकनकअटानि रुकतरोजजिन
कीध्वजा तरुणतरणिरथआनि ३८ छबिबहारऔरौत
हां लखीसुदामासंत कहूंलरावतमृगननर कहूंमल्लबलवं
त ३९ ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ कहुंमालतालकरालठों
कतलरतअतिबलवानहैं करिकोहझपटहिंदपटिलपटहिं
उचटिनटअनुमानहैं निजदाबिदशननिदशनबसननिपा
दश्रीहरिआनहैं लपटैंप्रतापनिकोउठैंलखितनकलागत
भानहैं गिरिपरतफिरिउठिधरतपाणिप्रचारिहांकनिबो
लहीं मदमुक्किदिशनिपमुक्किगाजहिंहारिहियमेंडोलहीं
अतितेजतमकहिंझूमिझपकहिंकूदिनिजबपुतौलहीं हह
लातभूधरभूमियुतकहलातसेपुनिकोलहीं जबदायसोंच
लिपाइरोपतमुंडमुंडनिजूटहीं तबभारसोंधरशेशकेबंशकां
चसेफणफूटहीं करकांतिकूरमपीठिदरकतिभभकि श्रोणि

तकूटहीं परपीरहरयदुबीरके पुरपरनितियहियकूटहीं भृकुटीकराल बिशालटेढ़ीकालकूटप्रभालहैं अतिक्रुद्धयुद्ध करैंमनोतनद्वैधरेतेहिकालहैं उरजोरकठिनकठोरधक्कनि हलतिजोरीजालहैं कहिबीरतेअवदात गातसवातभलद लतालहैं नवखंडखंडनिअतिउतंडनिछारभुज दंडनिभरैं उन्मत्तमत्तविहद्दकद्दद्विरद्दरदकदसोंकरैं झरिआयपावस कीमनोश्रमबिन्दुझरिझरियोंपरैं यहिभांतिश्रीयदुबीरके पुरमल्ल अगणितनितलरैं ४० ॥ दो० ॥ औरबहुतद्वारा वतीजेप्रमोदकरिआहिं एकजीभगुणओघटेक्योंकरिबर्णो जाहिं ४१ उमड़िउमड़िजगतीसुयश लक्ष्मीसकलबिबेक कियप्रवेशद्वारावती तातेद्वारअनेक ४२ ॥ क० ॥ संपतिसु खनिपूरीसुयशगरूरीहैकुबेर जूकीअलकातेकोटिगुणाअम रीकंचनिअवासनिकी भासनिसोहरितयुतपीरीकरिडारी जाकीएतीछबिबगरी जेतीसुघराईबिधिजगत बनाईसुतो यामेंएकबारहीसमेटिदईसगरी बीरकहैबारबारऐसीबहु द्वारकापैवारिवारिडारियेपुरंदरकीनगरी ४३ ॥ दो० ॥ मेरुशिखरअमरावती जोयदुपतियुतहोइ तोहरिजूकीद्वा रका पटतरकीजेसोइ ४४ शेशनछबिजेहिकहिसकतरस नाहैकहनारद्विजबरजूतेहिद्वारका देख्योजाइबजार ४५ बजारवर्णनम् ॥ क० ॥ कुंदकेसेवरणासवांरेभारेडीलवारेसु कुतासे ढेरीकहूं छाजतविराजमान अरुणप्रभानिभरेमा- णिकलखातकहूंजिनकेसमान धराकीजतुहै बालभान कि तहूंप्रबालमालछबिलताआलबालसुधासों सनोये जोये ओढ़जिन्हैंउपमान चंद्रकान्तिपांतिकहूं भांति भांति राज

तहँ जिनके सहोदरसेदेखियेकलानिधान ४६ ॥ स० ॥
शुभसूरजकांतिनपांतिकहूं औधरीमणि लालकहूं थहरैं
कहूं चोरसेभानुकीदीपतिकोदिपैसानहिं हीरप्रभाछहरैं
घननीलमपीतहरीनिमणीनिपुरीचहुंओरनितेउहरैं निज
कोसनिसोनितयोपनिआइ भरैरत्नाकरकीलहरैं ४७
दीपनदीपनके मणिमाणिकलैकरि जौंहरी बैठेकुबेरसे
कंचनहीरजरायजरीनिदुकाननिदेखतलाजैंसुमेरसे राजैं
महाजनपूरे प्रतापधरेजिनकेढिगहैंगथढेरसे दीपतिसं
पतिऔजभरेपैपुरंदरऊ लखिलागतचेरसे ४८ ॥ दो० ॥
कहूं जाइद्विजधनदसे बैठेलखेबजाज कहूं बणिकबेंचत
लियेदीपदीपकेसाज ४६ दिनकर दीपतिसादिपै पहिरे
जरकसबाफ बितरतगथकेवृन्दतहँ बैठे तहूंसराफ ५०
कहूंजाइद्विजसोलख्योसमददोह गजवृन्द लेतसहलपुर
लोगतहँबीरसहितआनन्द ५१ ॥ गजबर्णनम् ॥ छप्पै॥
अतिउदण्डभुजदण्डदीहधक्कनगिरिधुक्कहिं भरहिंकुण्ड
नदअवनिझुण्डझुण्डनिमदमुक्कहिं चलतशेषफणफटहि
कोलमुखदाढ़करक्कहिं कमठपीठिसुठिकठिनदररिदशटू
कदरक्कहिं निजगब्बसब्बजिनबाकसुनिदिगबितुण्डघ
टघट्टहिं गजठट्ठठट्ठघनघट्टसमसुवट्टवट्टइमिग्रट्टवहिं ५२
शिरबिलन्दकदबिहददीहरदमदनदवट्टहिं आंड़हिंऐंड़
करिमग्गअग्गफिरिपग्गनकट्टहिं करहिंपानपीयूषभूख
भरिभरिबिधुमण्डल हहलावहिंहठिमेरुमहलमजबूतअ
खण्डल अतिबिकटडीठिकटनटनिमहँझुण्डझुण्डअलिगु
ञ्जरनि यहिभांतिबीरयदुबीरपुरसुलखीधीरद्विजकुञ्ज

रनि ५३ चलहिंतोरिआलानिआनअंकुशनहिंमहहिं अमरदिग्गतटतटनिअटलतरुपल्लबिघट्टहिं गरबहेतगिरिगेतदरददिग्गजतबपावहिं करतऐंड़अमनैकपैंड़जालिमजबधावहिं अतिचपलतेजपुञ्जनिलसैंजोमजोरअंगनछजहिं इमिमुदितबीरहरिपटनमहँसुहट्टनिहट्टनिगजगजहिं ५४ ॥ क० ॥ डीलनिदरारेदिगपीलनितेभारेगजबिकटदँतारेमनोकारेकारेबारिबाह भरिभरिशुण्डनिसोंपूरिपूरिपूरिकरैंक्षणमेंअथाहसातोंद्वीपकेसमुद्रथाहधसकिधसकिधराजातिहैरसातललौं ससकिससकिशेशउबतचलतराहधूलोंशुण्डफटकारैं सुरतरुतोरिडारैंधरणीमेंठाढ़ेकरैंदेवनदीअवगाह ५५ जिनकीगराजैंसुनिधरफधरलाजैंअरुदिग्गजसमाजैंदिशारहतसकातहैं फटकिझटकिशुण्डसटकतशूररथजिनकेचलतपथशेशहहरातहैं दिरिझरिपरैमदधारधराबारबार ठाढ़ेअंधकारकेपहारसेाहखातहैं मन्दाकिनिपुण्डरीकछोंड़िमकरंदजिन्हैंमदचाहदौरिदौरिभौंरलपटातहैं ५६ चाइलहैपाइलहैमेघनकेभाइलहैबहूऋतुदानपरवाहसरसतहैं ऐंड़दारजालिमगयन्दबृन्दजोरावरतोरदारकदकेबिलन्ददरशतहैं बिपुलउतगडशुण्डादण्डनितेबारबारठाढ़े अभिरामधुवधामपरशतहैं तोरितोरिमन्दाकिनितामरसकन्दहठिकारिकोरिकन्दतेपियूषलेतरसहैं ५७ परतअकूतपुरहूतकेमहलकोलकहलतेऊरधउसाँसतजैतातीहैं चलदलपातसेडोलतहैंद्वीपसातोंहोतीदिगदंतिनकीधकधकछातीहैं कूरमहियेमेंअतिहूलिखैलभैलओफणीन्द्र फनफैलिफूतकारअधिकाती

हैं ऐसेगजराजैं सुनेजिनकीगराजैंदीह गिरिनकेशृङ्ग
निदराजैंपरिजातीहैं ५८ प्रबलउदंडशुंडादंडकेप्रहा
रसुनिसुरपुरअगारनिमेंदेतदुखदंडको डारैंकरिकालुखि
मंदाकिनिबारिवृन्दचोपशोचबातअरबिंदनकेकन्दको क
दटीकपोलनमेंलोलुपलोभानेगजचरचतहैंठाढ़े कैयोभांति
फरफंदको लूसतहैमेरुओहलतहैकामतरुसतहैनंदन
पेचूसतहैचंदको ५९ चोखेहैंचलाँकअंगबलकरिपोषेसबै
चाहतसरोषेअतिप्रथुलदँतारेहैं भारेकदवारेगजबिपुलक
पोलनिते च्येच्येमदधारैंधराबाढ़ेनदनारेहैं मेरेजानचन्द्र
मातेपीवतपियूषठाढ़ेऊरधभवाइशुंडादंडफटकारेहैं गगन
केछोरनिलौंतारेकेछलनिजोर चहूंओरफैलिरहेअमृतफ
हारेहैं ६० तरुणतरेरेआँखिहेरेसबहीकीओरजामदार
जालिमबड़ाईबड़ेथोकके पुहमीपतालहूनऐसेअवलोकेकहूं
बारनधुरंधरपुरंदरकेओकके तूजूकड़िमाकेनिदानहैंगयंद
गिरिवृन्दकेढहावनमिटावनहैंशोकके लाखुकुलघैयागज
राजनकरैयाशूररथकेरुकैयामनोंभइयालोकालोकके ६१
धुकपुकहोतदिगपालनकेगोतकढ़ि आवनसोपोतधामधुव
केहलतहै बिकटउमेठिदीठिपगनिकीठोकरनि छारकरि
दीरघपहारनिमलतहै धजदारजैतवारदलकेशिंगारगज
करतबिहारजबनेशुकचलतहै चपिचपिभारनसोहहरिह
जारतबछेनासेफणीन्द्रफनफेनाउगिलतहै ६२ महलोक
जनलोकतपलोकसत्यलोक बिपुलउदंडशुंडादंडनिभरत
हैं पीवतअमलगंगसलिलमतंगहठिब्रह्माकोकमंडलउदं
गलकरतहैं सुरसरीसोतसोऊकलुषितनीरहोतप्रबलअपा

रदानधारासोझरतहैं कासोंकहैंबापुरेउसासैभरेठाढ़ेसदा
सुरपुरवारेलोगप्यासेसोमरतहैं ६३ शाखीसुरलोकके
बिशाखीकरिडारैडारैतोरिद्रुमनंदनकेभेटतसेहैंमजै डील
निबिलन्ददिगपालनलजावेकदकेतकसौकृतपुरहूतहूकेहैं
गजै धजदारकुंजरगराजिब्रह्मांडपूरै धुरैकरिकोहकोधुका
वतहैधूधजै शुंडधुरलेटादेतशेषैसरसेटाचाहिचंद्रहिचपेटा
दैदपेटादेतसूरजै ६४ बाढ़ेविधुमंडललौंकरतकलोलओक
पोलनितेमदकेझिरासेझरिबोकरैं अकथकहानकेनऐसेम
घवानकेहैदानकेमहानधराकुंडभरिबोकरैं नंदनबिटपसुर
शाखयोक्षुधितङ्कैकैशाखाफलफूलनिसमेतहरिबोकरैंझूला
सेझुलावैमेरुमन्दरसमूलागजगंमनकीगंगमेंकलूलाकरि
बोकरैं ६५ बामनकुमुदपुंडरीकसुप्रतीकनकेऐरावतगोत
जिन्हैंदेखतलजातहैं अंजनतेभारेहैंदरारेबड़ेडीलवारेक
ज्जलपहारसेनिहारेसबगातहैं पद्मिनीतोरिओबिथोरिकै
मृणालकोशमंदाकिनिमाहमहाकरैउतपातहैं धराधरधार
समछोड़ैमदधारऐसेद्वारकाबजारदेखवारनबिकातहैं ६६
गीतिकाछंद ॥ ब्रजराजराजधिराजकेपुरबिपुलतेगजग
जतहैं जिनकोबिलंदबिलोकिकदमदमेरुमंदरतजतहैं अ
तिऐंड़परिपगपैंड़द्वैचलिअड़तमेडनमानहीं अड़दारआंदू
तोरहींगड़दारतिनुकनजानहीं अतिहीउदंडभशुंडठाढ़
बिकटभौंहनितनतहैं हठिलेहिंकन्दुकसोंउठाइबिशाल
गिरिलघुगनतहैं बरशुण्डिकनजंजीरको फटकारिकैफि
रिलेतहैं घनकोघटासममत्तठाढ़ेद्वारकासुखदेतहैं सुठि
कठिनकुंभनिपैंड़पिंजरबाफकीराजैसिरी कहबीरतिनपै

आइकैबहुभांतिकीशोभाघिरी छबिवृन्दयुतअतिरु चिरञ्ज
लहौदाजराऊजगमगै घहनातघंटाघोरधुनिसुनि मानध
नमनडगमगै कलधौतकीझूलैंलसैंलागींलरैंमुक्तानकी ज
नुघेरिकनकपहारपरफैलीमयूषैंभानकी तिनपैकसेहीरा
निकेबरबिपुलछबिहौदालसै कहिबीरतेजमजीजसोमनु
तरणिमंडलकोहँसै तिनपैअमारीबेषहैधजदारमणिगण
कीगढ़ी नवनिद्धपूरितआहिमानोंसिद्धमन्मथकीमढ़ी तहँ
झालरैंलागींलसैं हीरानिकीचहुंफेरिकै जनुबीरहरिकीर
हीकीर्त्तिकुबेरकोघरुघेरिकै बहुभांतिकेनगजड़िततहँबर
कनककलशालसतहैं छबिपुंजउमगनिबीरमानहुंमेरुशृङ्ग
निहँसतहैं मसनन्दमृदुलअमन्दद्युतिअतिसजतिशोभा
साफकी गिरदासुदेशधरेतहांपरदालगीजरबाफकी यहि
भांतिकेगजवृंदतहँफेरैं महाउतजोमके रणधीरमानहुंहैंसँ
घातीबीरसूरजसोमके यदुबीरपुरकेद्विरदद्युतिबरबरणि
कैकोकबिसकै जिनकीबिलंदबिलोकिकै छबिशेषसोकहि
कहिथकै ६७ ॥ दो० ॥ कारीछबिबानीजिन्हैं बारीघन
द्युतिऐन सोगयंदवृंदनिलखेछकेसुदामानैन ६८ बाजि
वृन्दआगेतहांलखेसुदामाजाइ तरलतेजपुंजनिभरेरहीघ
नीछबिछाइ ६९ ॥ बाजीवर्णन ॥ क० ॥ उचटिउचटिन
टकीसीगतिराचैधरा लीकसीखचितजातदौरतमेंदेखिये
कंठमाहिंराजैशुभलक्षणसमाजैअंगउन्नतशरीरऐसेरङ्ग्र
वरेखिये धूरिखुरथारनकीपूरिजातआसमानभानुकेनभा
नुकहूंभूतलपैंपेखिये ऐसेहयराजयदुराजदेखि राजीभये
देवराजबाजीकेसमानजिन्हैंलेखिये ७० कूदतचलतअ

कैमानोंनटबेषकाछेवच्चलकुरङ्गनतेलेतजातकरछाल थह
रिथहरिथहरातअंतरिक्षहीमें उछलिउछलिधरादेतआइ
खुरथाल पैजसीकरतठाढ़ेतरणितुरंगनिसोंरंगनिसुरंगअं
गअंगधरेद्युतिजाल ऐसीहयराजनकीराजीछबिछाजीजि
न्हैंदेखतपुरन्दरकेबाजीउरहोतशाल ७१ भूषणबनाइप
हिराइकैबँधाइल्यायेपानिपकेयूरअंगअंगझलकतहैं सुंद
रसुदेशबेषबेपलोंमेंकेशनिमेंकइयोभांतिआइछबिवृन्दछल
कतहैं तरपितरपिलेतेगिरिदैसीबारबारथलहीमेंठाढ़तेज
बलबलकतहैं ऐसेहयराजद्विजराजजायदेखेजिन्हैंदेखिबे
केकाजद्विजराजललकतहैं ७२ खासेरूपभाषेहैंनखासके
फिरैयाहयदेखततमाशेमधवासेललचातहैं द्वेकचारिशाल
औनकंदहैंबिलंदकद्दजोमदारतेजकीकलापसरसातहैं एंड़
भरेदेतडगपैंडमेंचलतलेतनेसुकहीबाग अंतरिक्षथहरातहैं
तूलहूकेतोमनिपैफूलसेधरतपाँइ फूलहीकेपुंजनकोछीवत
सेजातहैं ७३ सेनाकेशृँगारदीहफांदतपगारसदाजगजै
तवारद्दगदेखतसुहातहैं चाइलचलाकेचोखेचंचलातेचंच
लहैंतरलतुरंगगुणवृन्दअवदातहैं ऐसेगिरिवानिनकेना
यककेओकहूनऐसेनागलोकहूनऐसेद्वीपसातहैं तौलतसे
गाततेजपुंजसरसातनीलनलिनीकेपात पाइदारीपरसात
हैं ७४ दीरघउदोतकहापोतहैंकुरंगकदकीन्हेरदतरणितु
रंगनकेगौनहैं ऐसेहयराजतेजपुञ्जरणधीरराजैंबीरब्रज
राजपुरबरनिकेभौनहैं जीतेकुलटानिकेकटाक्षनिकीचच्च
लाईआछीछबिवारेचोरपक्षिनकेगौनहैं लागतहैजिन
कीबिलंदबेगबारीकेशिखारीसमगरुड़भिखारीसमपौनहैं

७५ बरषतसासैंलेतथहरातगातध्वजापाथहूकेकेननमेंरा
हकोरचतहैं पवनकेपक्षीकैधौंपक्षीप्रतिपक्षीबीरचोखेचा
हिचाहिजिन्हैंमानकैचलतहैं साहसीसपूतचारुचञ्चलच
लाकुचलैगँगनकेमांझदौरेअवलीखँचतहैं देतनिजसांच
हीकीमानोंपरमाचहीकीकांचके अटानबीचनाचसोंनचतहैं
७६॥स०॥सबभूषणअंगजराइनकेक्षितिपैछहरैछबिपुंज
छटा झपटैलपटैकीछलैउपमाफहरातसुदेशहैसाफसटा थ
हरैथरकैमुकतागणज्योंकसेरागनफांदतजातुअटा अनिमे
षसबैअवलोकतुहैंचलेलोकतुहैंनटकेसेबटा ७७॥ दो०॥
बैनतेयबिनपत्रकेकिधौंदृष्टिपथबात बिपुलमानकेमनकि
धौंकिधौंतुरँगअवदात ७८॥ गीतिकाछं०॥ यदुबीरके
पुरबीरसोहैभीरअतिद्युतिपावनी तिहुंलोकअसमनभेदयु
तमुनिजनितकेमनभावनी जेहिभांतितरलतुरंगहरिपुरल
सतजातिअनेकके केहिभांतितेसबकहिसकैंकबिलोगरस
नाएकके तुरकीभुजंनसबैरखाताजीतमाशेकेघने करनाट
कच्छीअरबकेअपराककेहैंअनगनेधजदारसुन्दरसिंधुकेखं
धारकाबिलबलककेअतितेजयुतईरानकेहरिलेतहैं चितख
लकके शुभअंगतरलतुरंगतहँतूरानिकेतोराभरे तिनपैत
माशेसेकरैंतहँतुजुकतोरनिसोखरे हयअंगबंगकलिंगकेजब
सहजभावनिसोचलैं मृगमीनखंजनहीरकैतबतड़ितकीछ
बिकोछलैंसुरखासुरंगीपिलगअबलखसातचाहरचाहिलो
मुसकीकबूतकुमैतलक्खीचिनीचंचलफाइलो अतिजोरजा
लिमजेबगरीवोजजोरजलूसके फुलवाइअंगनिभाइबहुनि
शिरंगज्योंफानूसके सुरभईलेतछड़ाइमनगतिसमुदसुंदर

गातके थहरातक्षितिपरहयबदामीजनुसहोदरवातके बहु
रंगआनँदनन्दपुरहैंवृंदऔरोलसतहैं अवलोकिदीपति
अमलतहँतिहुंलोककेमनबसतहैं ७६ ॥ तोमरछं० ॥
अतिचारुकंचनजीत मणियुक्तचंदनवीन छबिकेछटाछहरा
त क्षितिछोरलौंचलिजात जरबाफझूलसुदेश ललकैंलखैं
अलकेश मणिमालमुक्तामाल बरकंठहीरहवाल बहुभांति
भूषणसाज तिनसोंसजेहयराज कहिबीरसुखकेहेतु यदु
बीरकेजनलेतु बरबानिसोंअभिराम अवलोकिबिप्रसुदाम
अतिपाइचितमेंचैन अनिमेषह्वैरहेनैन ८० ॥ दो० ॥
नहिंनरपुरनहिंनागपुरनहिंसुरपुरहूआइ दृगगोचरद्विज
जूकरीसोजलूसतहँजाय ८१ ॥ छंदतरंगकमलाकमलबे
लासुकृतअपार बारिधकोबरबंधुसोदेख्योबिप्रबजार ८२
सो० ॥ लेतहारकहुंनारि करप्रवालद्युतिसोंभरै मन्दबि
हँसिसुकुमारि बहुमञ्जुलमुकुतालरै ८३ भुजंगप्रयात
छं० ॥ कहूंफूलकेमालमालीबनावैं तहांआइकैभौंरकेवृंद
छावैं कहूंपांतिगंधीनकीयोंसुगंधी अलीआलिपीछेफिरैंडो
रिबंधी कहूंदौरिकैजन्यकीबित्थिकामें लगेबिप्रकेनैनक
स्तूरिकामें भ्रमैंगुंजरैंभौंरकेपुंजपुंजैं मनोबाजहींकामसंग्रा
मरूजैं कहूंपानफैरैंसुहायेतमोली धरेस्वर्णकेपत्रसेस्वर्ण
ढोली कहूंस्वर्णकेहारसोनीबनावैं घनेलालहीरानिमोती
लगावैं कहूंचित्रवैवैबनावैंचितेरे कहूंहेमकेथाररावैंतमेरे
कुदेरेकहूंहैं घनेरेसबीसों रचैंझूमरैंलालहीरानिहीसों
कहूंजायछापीनकीपेखिभीरैं सियैंबाफजरबाफजरबाफ
चीरैं कहूं हाटकीबाटमेंपाठकारी बिलोकेघनेरेमहाचि

त्तहारी कहूंकैलली न्हैसुवाशारिकाको पढ़ावैंमनोकोककी कारिकाको बजावैंकहूंबीननारीसनाथा सुनावैंसबैमैनकी दिव्यगाथा कहूंपणयकीबीथिकाहर्बजन्या नचैंनारिध न्याशचीअग्रगन्या सबैकामकीबामलूसैलवन्या कहूंरूप मन्यासुगंधर्बकन्या बिलोकीकहूंबिप्रजूएकरथ्या लि येबाममुक्तानकीदानतथ्या करैंहस्ततालीप्रवालीनिभासै नचैंफेरिकैंहारिकैंमंदहासैं कहूंजाइकैंबिप्रदेखीप्रतोली सबैंमैनकासीतहांनारितोली बड़ेमोलकेहीरकेहारलेहीं छुयेहाथसोंलालकैंफेरिदेहीं कहूं जाइदेखेपड़ेहैंहिंडोरे ल गेहेमकेखम्भसोंपाटडोरे तहांआइझूलैंसबैंग्रामबासी ल सैंदेवगंधर्बहूंतेबिलासी घनेनूरकैंसूरसेधामधर्ता लसैं साठिबीसौंमनोंभूमिभर्ता बड़ेमानकेकामकेरूपहर्त्ता स बैंलोकहूबीरहैंपुणयकर्त्ता नहींनेकहूवेदकेभेदजानो सुकै सेसबैंस्वच्छशोभाबखानो जितीचौदहौंलोकमेंभोगसामा तितीद्वारकाजाइदेखीसुदामा ८५॥ दो० ॥ ललकतलखि बेकोजिन्हैंसुरनरनागअनूप सोछबिदेखतहींभयेद्विजबर देवस्वरूप ॥ ८६ ॥

इतिश्रीमत्सकलभक्तजनाह्लादकेविरचितेसुदामाचरित्रे द्वारकावर्णनंबीरकविकृतद्वितीयोऽङ्कः २ ॥

—•—

दो० ॥ तीजेअंकसुदामसों प्रतीहारसोंबाद बहुरि मिलनगोपालसों लखिदेवनआह्लाद १ चलिकैंद्विजबर जूलख्योसुंदरराजदुवार सुरपतिसेठाढ़ेतहांभूपतिवृन्द हजार २ सुन्दरश्रीयदुबीरकी पवँरिरुचिरजनभीर कहत

शेषसेकविथकैंक्योंकरबरंगौबीर ३ ॥ हरिद्वारबर्णन ॥ कं० ॥ राजतधनेशकेसुभायकोशपालअरु बंदीजनजालनिगणेश अवरेखिये वरुणस्वरूपअधिकारीसबजानेजाने अरुण केरूपपरतीपहरिपेखिये किन्नरसेगावतकलाबँतअनेक जहांसौरभकेपुंजपारिजातकैसेलेखिये भूपनिकीभीरदेव भीरकेसमाननर ठाढ़ेदरबीरसुनासीरऐसेदेखिये ४ समर जेराचैपैजखाचैसुरराजहूंसों भांतिभांतिबिरदबड़ाईको धरतुहैं सुयशप्रतापकेसमूहनिसेबीरजेवैं तेजनखतेशओ दिनेशकोहरतुहैं ऐसेभूमिपालकोशपालनिकेपासतहां दीनह्वैकैआइकरभारनिभरतुहैं देखिबेकेकाजब्रजराजम हाराजजूको ठाढ़ेचोपदारनिसोंअरजैंकरतुहैं ५ ॥ दो० ॥ देशदेशकेभूपजहँठाढ़ेरहैंअधीन तहांजाइदरबारकहँद्विज वरआशिषदीन ६ आशिषदैदरबारकहँ फिरिबोलेद्विज बैन कछुसकातडरतेहियो कछुचितउपजतचैन७ ॥ सुदामोवाच ॥ दो० ॥ तेजवंतगुणवन्तहौ सुन्दरशीलनिधान सुरपतिसेलखियेतुम्हें श्रीपतिकेदरवान ८ दयावन्तअति देखिये सुन्दरसकलसुभाइ बेगिसुदामाआगमन कहिये हरिसोंजाइ ९ ॥ मधुमारछं० ॥ दरवानफिरिद्विज कैतिहेरिलखिदीनगातहँसिबोलिबात केहिदेशबासइत कौनआशकितहैजुधामकिहिंकोसुदाम १० ॥ चंचलाछं० ॥ नामधामदेशकामपूंछिपूंछिचोपदार जाइकोजनावहीगो पालपासबारबार पाइसीखदेतहैसुदेशहीतुरतआइ कौन भांतिजाइकैजनाइयेकहोसुनाइ ११ ॥ सो० ॥ जबपूंछी प्रतिहार देशनामगृहकामसब तबद्विजकियोबिचार उत्तर

दीजैकौनअब १२ बोलेबिप्रसुदामचितमेंनिजकरिसमु झियह औरनयासोंकाम नामशीलकहिदीजिये १३ ॥ सुदामोवाच ॥ सो० ॥ कहतसुदामामोहिंमनमोहनकोमीत पुनि कहाकामहैतोहिं हरिसोंबेगि जनावकिन १४ ॥ दोहा ॥ सुनतैमीतगोपालको सुभगसुदामानाम बिहँसि कछूप्रतिहारपुनि बोल्योकरिइतमाम १५ ॥ प्रतिहारोवाच॥ क०॥सपनोसोंभयोहैकैधोंवाइसीलगाईकहूंकैधोंगथहीन चित्तलोभतेकहतरेवैसहीनमांगेद्विजचाहतकहाहैकछुफेरि जनि भाषैजोभलाईकोचहतरे ऐसेमहराजतिन्हेंमीतकहि ऐसे कबिमनमेंननेकहूलाजहिगहतरे जगतकेनाहजाकी हदकैसगाहमाहकोटिनरनाहदिननाहसेरहतरे १६ ॥ दो० ॥ सपनेहूंतुमसोंजुपैहरिसोंहोतीभेंट तौमलीनकैसे बसन ऐसेरहतेफेट १७ कहेअनादरकेबचन प्रतीहार करिरोश उत्तरलागेदेनद्विज चितबढ़ाइकेरोस १८ सुदामो बाच॥ क० ॥ हौतोजूसयानेपैनजानतहौंनीकेकछू तातेबि नजानेबातऐसीयेकहतहौं हरिसेनबूझौंकाहेमीतसुनिसत रावसांचुयोंअलोकुजाइअबहींलहतहौं करिकैबिबेकसब हीसोंमुखबोलोजापै येतीदत्तसाहिबीकी प्रभुतागहतहौं ऐसेविवेकतेन पाइहौंबड़ाईसुनो कहाभयोश्रीपतिकीपौरि मेंरहतहौं १९ ॥ दो० ॥ यातेइतनीपैकहौं हरिजूसोंपर बीन मीतसुदामारावरेचाहतआशिषदीन २० ॥ प्रतिहारो बाच ॥ कहतकहाबौराभये डरतनद्विजउपहास हमैंन जा नीजायजो तौपूंछौहरिपास २१ ॥ स० ॥ वैबितरैमुकुता नितहीतुमको सपनेहूंजुरैनहिंपोतिहै जानतकोउनहींतु

मकोउनकीक्षितिफैलिलखैजसज्योतिहै अन्तरयेतौजिन्हें तुमसोंजूकहाहमजाइजनाइ सुहोतिहै रावरेऔहरिकी अबप्रीतिसबीयहदेखतजाहिरहोतिहै २२ ॥ दो० ॥ बचनसुनतप्रतिहारके द्विजकियोचित्तबिचार बनतनउत्तरदे तकछु बीरआवयहिबार २३ बहुरिफेरिघरजाउंतब उपजतमोहिंबिषाद उचितौअनसोहैनहीं हमसोंबादबिवाद २४ रहननपायोंभवनमें ब्राह्मणिपठयोपेट यातो मनजानीहुती क्योंकरिह्वैहै भेट २५ ललचानीजो रावरी कोटिकठानिउपाय ठेलिपेलिबरबशहमें दीन्ह्यों ढीठपठाय २६ ॥ सो० ॥ चित्तबिसूरिबिसूरि यहिबिधि ठाढ़ेद्विजतहां जानिभवननिजदूरि मुखबोलेकरिचातुरी २७ ॥ सुदामोवाच ॥ स० ॥ आछेविवेकीकहाकहियेजू सबै बिधिशीलकेसागरपेखे आगरनीतिकेजानिपरे चतुराईभरे अतिबुद्धिबिशेखे लेहुअशीषचलैंघरकोहम बादकरैंतुमसोंक्यहिलेखे साहबदेखिचुकेनँदनन्दजो पैतुमहींसेमुसाहेबदेखे २८ ॥ प्रतिहारोवाच ॥ क० ॥ जौनयशजगतउलोकसबगायोकह कुयशकेभांड़ेतौनहोतकहूंरबिसों माम करिकोनचक्रवाकसरि एकतोकहोइइत्तमामथटि चन्द्रमाकी छबिसों चोजकेबोलापैजुडोलाघरघरही के ब्राह्मण ह्वैआयेयातेजातहमदबिसों बसनमलीनतनहूकी द्युति क्षीणद्विज होतौअतिदीनपै प्रवीणबड़ेकविसों २९ ॥ सुदामोवाच ॥ क० ॥ होते जो प्रवीणतौनआवतेकदापिइत ब्राह्मणीकेकहेभूलि करतेनगौनको भलीभईजातिकेद्विजातिजोभयेहैंनातौ करतोकहाघोंह्यांफिरादतेधोंकौनको

कोहकैअवासोमोहे तोहिंमघवासोलागै सातोंपरिनेकये
रे ठानिआवामौनको द्वारकामेंआइबड़ीदौलतकोपाइये
अनूतरकहाइकैअघाइचलेभौनको ३० ॥ दो० ॥ जानत
इतउतहठिरहो गहीठीकहठिटेक चाहयहैहरिमित्रसों
भेंटजुहोतीनेक ३१ रोंकिरहेहठिद्वारपै भयोनमित्रमि
लापु ह्वैनिराशमुरिकैहमैं कहालहोहै आप ३२ ऐसे
सुनिद्विजकेवचन मोदपूरिपरपूरि बोलतहैप्रतिहारपुनि
दृगकोरनकोघूरि ३३ ॥ दण्डक ॥ जाकेप्रतापकेउदोतही
अरिवरगोनहोत निशिद्योसतनथरथरकापनो साहबसम
र्थहै अकथगुणगाथजाको नाथनकोनाथनाथउथपनथा-
पनो चन्द्रिकासीजाकीवारुसुयशकीचन्द्रकान्ति कीजत
हैशरद क्षपाकरऊछापनो प्यारकरितासों बारबारकहि
यारहैवैएरेद्विजबौरेबेषदेखतनआपनो ३४ ॥ सुदामोवाच ॥
क० ॥ करतसहाइपरेशंकटअनाथनको नाथनकेनाथब्रज
नाथश्रुतिगायेहैं कमलाकेकन्तहैंअनन्तहैं अनन्तयशजूह
सदा इनहींते अनन्दनि पायेहैं यहैजानि ठीकठीकठानि
चित्तमेंबड़ी आशधरिदूरिहीतेधाये हमआयेहैं दीनदेखि
जोतुममनमांहरोसुआनौतोकहौ हरिजूसोंदीनबन्धुक्यों
कहायेहैं ३५ ॥ सो० ॥ सुनतसुदामाबैन प्रतीहार चित
रोसकरि कछुचढ़ायकैनैन बोल्योबहुरि द्विजातिसों ३६
प्रतिहारोवाच ॥ दो० ॥ करतकहाद्विजचातुरी जात न काहे
भौन काहेको हठकरिरह्यो बौरायोधौंकौन ३७ ॥ क० ॥
देखतुनैननूराअतिहीकैतनझूराचल्योकबहूंनछूरामूड़बांधे
बड़ेजूराहैं चाबतसोमूराठाढ़े पीसतदँतूरा क्षीणगातनमें

बाढ़ेगाढ़ेमैलहीको धूराहै चातुरीकै भाइनसों चाहैहरि भाइपकोजातुनानिकेक्रूरदारिदकोकूराहै कवनेबहिराइकै पठायोधौंकहांतेआयोधायोद्विजबेषठायोलोभहीकोपूरा है ३८ ॥ सुदामोवाच ॥ दो० ॥ तोसोंतुहीनऔरहै क्रूरशिरोमणिअयन हमहूं सोबरबिप्रसों कहतजुऐसेबयन ३९ क० ॥ जातुहरिपासनाहींफेरऊनिराशचाहै बोलतउदास इतपूछैअबकाहिये बूझतनबातको फुलायेगात ठाढ़ोद्वार राखेअवदातमनमाहगुमराहिये दोषहैनमेरो तनरोससों भरोहैतेरोकहालौंअवगुणकोपूरअवगाहिये श्रीपतिसेसाहिबकीसाहिबीलगावैटांको सोतोमूढ़क्रूरद्वारपौरिपैनचाहिये ४० ॥ प्रतिहारोवाच ॥ स० ॥ मोहनप्यारेकोयारकहावत लाजतनाद्विजऐसीसबीसों बोलतहै बिषसीमुख बात औहैसबगातभरोबिषहीसों ब्राह्मणजानिकैतेरेअनूतर ओढ़िलियेसबश्रीपतिकीसों होतोजुऔरपुरंदरसोंकिनहोतोसुतौअबहींबिनजीसों ४१ ॥ दो० ॥ जाहुजाहुघर बिप्रजू अबन कहौ कछु बात हमसुनिकै शरमातहैं तुम बोलतनलजात ४२ ॥ सो० ॥ द्वारपालकेबैन रिससूचक यहिबिधिसुने करतललौंहैंनैन बोलेद्विजपुंगबतहां ४३ सुदामोवाच ॥ क० ॥ येतोजोनहोतोद्विजको तौजोबचावतो ह्यांबोलैकुजबानिपानियोंतौपुनिलोहको आकरुनीतिही कोचाकरुहैंतोसोंजहांपायो जहांठीककरिठाकुरहैठोहको नातौ हरिजूसों सुनितातो मूढ़होत काहेसातोपरिएकएरे हातोकरिकोहको जातहमजाततूकहांहै अनखातअबदेखिलईदीननसें मोहनकेमोहको ४४ ॥ प्रतिहारोवाच ॥क०॥

निपटअधीन द्रौपदीऔदुशासनैबीच पांडवसभामेंआनि चीरजबझटको ह्यांतबअनाथनिकेनाथयोंबढ़ायोऔरआ योनहिंछोरुमूढ़पायोनहिंपटको अटकोबिकटगजजाइयों उबारयोहरिश्रोणपथहूनसुन्योशोरुदीनरटको दीनबंधु नातेद्विजधायोहौं जहांतेकिन ध्यायोतहांते प्रभुव्यापीघट घटको ४५ ॥ दो० ॥ रटतुनमौढ्याहतुकहाकहीनमानत नेक मूढ़बढ़ावत बादिहीजाय भवनतजिटेक ४६ सुनत बैन घटबिप्रको रोसनसक्योअमाइ तरफरात आरानि द्विजबोल्योफिरिअनखाइ ४७ ॥ सुदामोवाच ॥ ध्यायेबिन ध्यायेकहाअबआयोहरिद्वार दोषलगावतरोषकरिअरेक्रूर प्रतिहार ४८ ॥ क० ॥ काहेकोबढ़ाईरारियाहीकोमुरारि रारयोपौंरिपरतोहिंपहिराइबड़ोचोलाहै देशीऔबिदेशी किनदूरिहूकोद्वारआवैदूरिकरिदेतकटु बोलनिकोबोलाहै न्याउसोमचावैहरिजूसोंनाजनावैकोऊबीचहूनआवैभरेउ पिंडअतिजोलाहै ब्राह्मणीपठायोहठिआयोंबड़ीआशाधरि देखिचल्योंद्वारकासुनीतिहीकोटोलाहै ४९ ॥ दो० ॥ कहाहँसावतद्वारकाश्रीपतिभरेउसुनीति जायजनाउमुकुंद कोहैंहमनिजकरिमीत ५० गयोमीतफिरिद्वारतेजोसुनि हैंगोपालतौतेरेप्रतिहारफिरिहवैहैंबरेहवाल५१ ॥ सो०॥ सुनतबैनयहिरूप प्रतीहारपरिहासयुत खड़ेपौरिजेभूप बोलततिन्हेंसुनाइकै ५२ ॥ प्रतिहारोवाच ॥ क० ॥ दीरघ फुलायेनाकठाढ्योहैनिशंकदेखोजरतखरीकद्विजखायोच- हैखोपरा मैलकोनिकेतहेतुकरिकैलपेटेपटबड़ेबड़ेदांतगात चीलरकोझोपरा बरषअसीककोभयोहैइनभांतिनसोंमांग

तफिरतभीखलीन्हेंकरकोपरा छोलिछोलिबोलिहरिमीत
मुखभाषतुहैंडोलतहैंमूढ़लियेदारिदकोटोकरा५३॥दो०॥
कहाहसावतहौउन्हेंघरैजावयहिबार तुमसों डोलतक्यों
फिरैघरघरहरिकोयार ५४ क० ॥ ओकहैंबिवेकहीकेशो
कतेरहितलोकलोकनिमेंउदितप्रतापसुखदानिये शीलस
त्यसाहसदयाकेहैंनिधान तौलपूजैमघवानरूपमैनहीके
मानिये देखतबिहीनपैप्रबीनबड़ेज्ञानिनमेंदातागुनओछ
निकहांलगिबखानिये सुकृतकेसागरउजागरजेबिप्रतेऊ
सुंदरसुजानयोंगोपालयारजानिये५५लोभमोहमायाका
मक्रोधतेरहितहवैकै श्रीपतिकेचरणसरोजचितलाइये कै
योभांतिभांतिनकेकीजैजपतपव्रत अखिलधराकेजाइतीर
थअन्हाइयेहूजियेबिबेकमयजानियेसबनिएकहिंसाछोड़ि
उरमोदयापुरबसाइये जनमहजार जबगारिहो ऐसेतब
बिप्रसुनुनंदकोकुमारयारपाइये ५६ ॥ दो० ॥ दियेल
गोंटाहैफटोसोंटालियेबिचित्र घोटतघटकोभांगकोकहतजु
हरिसोंमित्र ५७ ॥ सुदामोवाच ॥ काहेकोबोलतहौथाअरेमू-
ढ़चितलोल सरसेसंकुटनीमसेहालाहलसेबोल ५८ मन
सूबामनकेसबैरहेघरेअबऔर देखितुम्हैंहरिपौंरिकेद्वारपा
लशिरमौर ५९ जान्योअबनहिंहोइगोहरिसोंहमैंमिलाप
नाहकहीइतबीचजो कियोक्रोध अतिआप ६० हरिसों
मिलिहौंजायकैहुतीबड़ीयहआश भलीकरीतुमबीचही फे
रयोहमैंनिराश ६१ अंतरज्ञाताकान्हहैं तुम्हैंखोरिकहि
कौन आवतहमकोजानिकैरहेआपलुकिभौन ६२ ॥ क०॥
दीनकेदयालगऊब्राह्मणकेरक्षपालआयेहमऐसेतकिखूबी

नन्दलालकी अंतरकेयामीहरिस्वामीसुतौगायेश्रुतिसांची श्रुतिगाथजोसुनीहीबहुकालकी येरेहीभरोसोदौरोआवत सुदामागयेगौंसेयहिभांतिकहा खोरिद्वारपालकी गरजी द्विजातिआवैअरजीनकीजैकोऊ बरजीयहैहैजानीमरजी गुपालकी६३ दीननसोंहेतुदीनबन्धुजूकीदेखिचल्योदेखी सुतौकीरतिसुनीजूद्युतिकुन्दकीनीतिकठिकानेकतहूंनअह टानेएकदेखीठौरठौरनिमेंदौलतिकेतुंदकी सातेपरिजानत नतातेईरहतसदारातेरातेनैनपौंरिपौंरियानिकुंदकी देखे हरिसाहेबमुसाहेबसकलदेखेदेखिलईद्वारकाओसाहिबी मुकुंदकी ६४॥ प्रतिहारोवाच ॥ स० ॥ हौंजूसयानेभलेद्विज राजपैह्यांनासयानपनौकरियेजूजैयेघरैपरियेहमपायँनरो सुकैकातुमसोंलरियेजू पालतिबीरतेतीनहुंलोकनिकीरति जाकीरहीभरियेजू साहिबीताकीसुनोबलिजाउंसोनाहक नाउंकहाधरियेजू ६५ ॥ सुदामोवाच ॥ सांचीतुहौंजूसयाने भलेतुमहींतौसयानपनोइतठानत पालनहारगुपालहिजो सबहीकेनिदानकैबीरबखानत देखोबिचारिहियेअपनेमन हीमेंजुपैअभिमानहौसानत तौअबतीनिहुंलोकनितेजूकहा हमहींकोजुदेकरिजानत ६६ ॥ दो०॥ जाहुजाहुकहकहत होभरेउघनोअहमेहकमलनैनदेखेबिनाक्योंकरिजैहौंगेह ६७ ॥ स० ॥ कीबेजुहोयकरैकिनसोअबआइचुक्योंसुनु फेरिन ऐहौं देहौंनपाछिलेपायँकदापिअनूतरतेरेसबैपुनि सेंहौंआननमानिहैप्राणनिलौंइतरैहौंखरोईयहीब्रतलैहौं सोंहकैमोहनहीकीकहौंहरिजूकेमिलापबिनानहिंजैहौं ॥ ६८ ॥ दो० ॥ जोजवाबदैहैं बहुरि तौयह सुनोनिशंक

अबहींद्विजबधको तुम्हैंलगिहैंलपटिकलंक ६६ जाइजा
नाउनकहुकछूकहानचावैभौंह प्रतीहारयहिबारतोहिंहैंगु
पालकीसौंह ७० सुनतसौंहगोपालकीकियोनफेरिबि-
चार गयोबेगिदैद्वारकैहरिजूपैंप्रतिहार ७१ ॥ करिप्र-
णामठाढ़ोभयोहाथजोरिदरवान समयपाइहरिसोंतहां
बोल्योबचनसुजान ७२ ॥ प्रतिहारोवाच ॥ स० ॥ ब्राह्मण
हैंइकपौंरिपैंठाढ़ोअपूरबनामसुदामासुनावत दीनमहाअ-
तिक्षीणहैंगातमलीनदशानहिंसोकहिआवत हौंहींडराउँ
लजाउं घनोपैंकहौंअबजोउहसौंहदिवावत फाटियेधोती
फटीडुपटीपैंइतेपररावरोमीतकहावत ७३ ॥ दो० ॥क्षीण
देहनहिंगेहइतठाढ़ोपौंरिअमीतबारबारहठिहठिकहैंश्या
महमारेमीत ७४ ॥ सो० ॥ सुनतसुदामामीत ठाढ़ेहैंनिज
पौंरिअब धायेश्यामसप्रीतछोड़िराजकेकाजसब ७५ ॥
क०॥ सुनतसुदामानामछोड़िकैसकामधामधायेघनश्याम
इतमामबिसराइकै डहडहेबारिजसेनैननमेंबारबारभरि
भरिआवैबारिपूरहरवाइकै ऐसेकछुआनँदमेंमगनबिहारी
भयेमोपैंनहिंतेवेकहेजाहिंगुणगाइकै अनगनेभोगरज
धानीसबभूलिगईदीनबन्धुजूकोतहँदीनद्विजपाइकै ७६
बसनसरेहैंअतिदीनताभरेहैं बिप्रद्वारमेंखड़ेहैंसुनिकीन्हीं
योंतुरंतहीं उठतनजानेइमिभांति अकुतानेभूलेमारगठि
कानेअनलेखेमोदहीमहीं कौनठांइकितैंहैंठाढ़ेद्विजबितैंहैं
हमकबधौंचितैंहैंइमिपूछतसबैंपहीं प्रेमरसछायेराजकाज
बिसरायेवीरऐसेहरिधायेआयेपगनवेनहीं ७७ आगम
सुदामाजूकोसुनतगुपालजूकेअनगनेआनँदकेकंदअधिका

नेहैं धन्यकरिआपुमानिजीवनसफलजानिदौरिचलेदेखवे
कोअतिललचानेहैंदरशमिलापबैनबोलिबोसुननकाजनैन
बाहुरसनाऔश्रौणअकुलानेहैं एतेबेगिआयेमीतप्रीतिहरि
छायेपानकरहीमेंलीन्हेंपैनमुखमेंसवानेहैं ७८ उठतमुकुं
दजूकेआगेअतिवेगहीते अनगनेदौरेदरवानिनकेजालहैं
पुरजनभीरिबारबारकरिचीरेअरुनेरेनहिंनेकुआवैंपावैंभूमि
पालहैं भानकेसमानछरीलीन्हेंतबपानहींसोबलकिबल
किबोलैंबोलनिबिशालहैं अदबसोंठाढ़ेमर्यादहीसोंदेखोअ
बमिलनसुदामाजूको आवतगोपालहैं७९॥ दो० ॥ भयो
कोलाहलशहरमेंचहूंओरतेहिकाल रंकएकआयउहवैआ
वतमिलनगुपाल ८० ॥ क० ॥ कहियेकहालौंहरिप्रीति
कीबड़ाईकछुऐसीअधिकाईनहिंगाईजातिशेशपै मीतसुनि
श्रौणहियऐसेहरषानेजातेमोदकंदआयेअंगअंगनिसुदेशपै
उमँगिउमँगिपगदेतमनमोहनजू एतेबेगिआयेचढ़िधायेधौं
खगेशपै देखतसुदामैदूरिहीतेनैनबारिभरे कंठतेनबनै
बैनकहतरमेशपै ८१ ॥ दो० ॥ दूरिहितेआवतलखेनँद
नंदनद्विजराय हरषवंतऐसेभयेआनँदउरनसमाय ८२
क० ॥ बारिपूरिपूरितपयोदघटाछुटालखिआनँदकलाप
ज्योंकलापीसरसातहै सूखितचकोरचंद्रचंद्रिकाविलोकिजै
सेतरशिउदोतपुंडरीकहरषातहै तेहीभांतिदूरिहीतेआवत
मुकुंदजूकोदेखतसुदामालहैमोदअवदातहै राजकोसमाज
ब्रह्मराजकोनिहारिदशाआपनीबिचारि ठाढ़ेथलहीलजात
है ८३ ॥ दो० ॥ लखतसुदामादूरिते गयेदौरिनँदनन्द
मिलिठाढ़ेगाढ़ेहियेबाढ़ेआनंदवृन्द ८४ यदुपतिअरुद्विज

परस्पर मिलेआनिअतिनेह लोचनहियअतिहरषसों सींचतदोऊदेह ८५ हिलिमिलिदोऊप्रीतिसों पायेआनँद धाम श्यामकीनपरणामतब आशिषदीनसुदाम ८६ बोले द्विजपतिसोंतहां यदुपतिकरिअनुराग दयाकरीआयेइहां खुलेहमारेभाग ८७ तुमप्रवीणसबतेबड़े सुकृतसिंधुद्विज राय बंधुजानिअपनोहमैं दईबड़ाईआय ८८ हरतदुरित वतकालही भावीसुखकेहेतु सूचकपूरबपुण्यको दरशबिप्र कुलकेतु ८९ जोहुलासहुलस्योहियो अवलोकतद्विजराइ सोअबबचनबिलाससों कहोनक्योंहूंजाइ ९० मित्रमित्र सेरावरो दरशनसुन्दरवोज प्रफुलितकीन्हेंआइकै येयुग नयनसरोज ९१ मोमनकुमुदचकोरको कुमुदबंधुसेआप कीन्होंहर्षितभूरिहै करोदूरिसंताप ९२ ॥ सो० ॥ कृपा दृष्टिहरिजोहि कहतसुदामासोंजुयों पावनकीन्हेंमोहिंआ वनकरिइतमित्रतुम ९३ ॥ सुदामोवाच ॥ शीलसिंधुनँदनन्द तुमकरुणाकरदुखहरण दीनबन्धुब्रजचन्द तुममूरतिआनन्दमय ९४ यदुकुलकेअवतंस कंशबंशदारुणप्रलय संत नमानसहंस प्रगटकामनाकामतरु ९५ मित्रदरशतवलेत भयोहर्षअतिहीहिये कहतजुहरिकरिहेत करतसुमहिमा अपनिये ९६ ॥ दो०॥देखतसुरपतिसुरनयुत मोहनप्रीति प्रमान आसमानचहुंओरहूं पूरितदेवबिमान ९७ ॥ स०॥ मोहनकीलखिनूतनप्रीति हियेअतिदेवनकौतुकआवहिं देखिबेकोनिजलोकनिते चलिआमबिमाननिव्योमहिंछावहिं आपुसमेंहरषायतहांसुर फूलनकीबरषाबरषावहिं योंललचाइघनोअकुलाइ कहैंहमहूं हरिमीतकहावहिं

९८ देखतप्रीतिगुपालकीयों सुरपालकेलोचनजालअघा
तन देवनसोंअतिहीहरषाइ कहैंयहिभांतिपुरंदरबातन
चौदहलोकचराचरआहि बिलाससोदेख्योबसैसबजातन
तेहिकरिकेउनगातनमेंद्विजआगमआनँदवृंदसमातन ९९

इतिश्री सुदामाचरित्रे कविबीरकृते हरिसुदामामि-
लापे तृतीयोङ्कः ॥ ३ ॥

——०——

दो० ॥ चौथेअंकसुदामको महलनमेंयदुनाथ कुशल
बूझिअतिआदरे करिगुरुघरकीगाथ १ ॥ गीतिकाछन्द ॥
मिलनद्विजनँदनंदकोसुरलोकसुरदेखहिंखरे लखेंकौतुक
सोसबैपुरलोगआनँदसोंभरेजेहिभांतिहरिमनहारकरिहि
यकरतआनंदहैंघने तेहिभांतिरसनाएकसों सुखमानसब
कहतेबने२मनुहारिकरिकरिभांतिभांतिन मित्रसोंहरिबो-
लहीं मनहुंसूरसमीपअम्बुजहरषिसम्पुटखोलहीं मोहिं
पावनहैकियोअबमहलहावनकीजिये आजुमंगलदिवस
हमको जन्मकोफलदीजिये २ श्रमितमारगमेंभये श्रम
गातगातनपेखिये बूझिबीकुशलातउतही महलअबचलि
देखिये यहिभांतिसादरबचनबोलत नेहवृन्दनिसोंछ्ये
जरबाफपांवड़सोफकरिहरिमीतभीतरलैगये ४ ॥ मधुमा
रछं० ॥ हरिसंगसोद्विजगमनकीन निरखतनयननशोभा
नवीन कियप्रथमपौरिपरवेशजाइ तहँलगेदौरिद्विजदृग
लोभाइ ५ चहुंओरकनकऊंचेदिवाल तिनमध्यमलागे
मणिकजाल झलकैंसुचारुछाजैंअनूपललचातजिन्हैंलखि

देवभूप ६ अतिस्वच्छहीरमणिगणकँगूर उमगातविविध छबिरुचिरपूर मणिभूमितहांसोहतबिशाल वरहीररचित अरुखचितशाल७ मुक्तानिचोकचहुंजोरचारु द्विजरहेरीझि लखिछबिपसारुशुभद्वारचारुहाटककपाटतिनबीचकलित सबरतनहाट ८ अतिजोरअतरआवतझँकोर हुलसातभौंर तहँकरहिंशोर यहिभांतिपौरिद्विजसातदेखि हरषतहैं बीरहियमेंबिशेखि शुभशोभलखितपावतअराम निरखेसु-दामचलिश्यामधाम ६ ॥ धामवर्णन ॥ क० ॥ सोहति ज-रायकीअवनिचहुंओरआछीमोतिनकीचौकचारुचांदनीसी पेखिये हीरनकेभौनअतिऊंचेनभमंडललौंतिनमेंबिचित्र चित्रसारीअवरेखिये छाजैंचंद्रकांतिनकेकोटिकबिराजैंल गीमाणिकसमाजैंयहिभांतितहँलेखिये शरदजुन्हाईनिशि बासरसोहाईमानों शशिकेसमीपदीपमालिकासीदेखिये १० ॥ दो० ॥हरिमंदिरसुखमासबै कहैकौनपरबीन रचि परजापतिजूजिन्हैं निजमतिसीमाकीन ११ एकशतसोरा सहससुरु अष्टतरुणिकरबास रूपरुचिरहरिसंगसबकर-तींकोटिबिलास १२ तहांखबरिपरिआरिकन प्रथमहिंकही बिचित्र हरिआवतसँगहैंलिये अंतःपुरइकमित्र १३ ॥क० ॥ आवतगुपालइतमीतसंगलोन्हेंएक सुनिकैकिशोरीहरषाइ सबधाईहैं एकैलैकलशएकैआरतीसँवारतीहैं एकनजराईं झारीनीरसोंभराईहैं अटनिअटानिहूतेउतरिउतरिआईं नू पुरकीझाईंजोचहूंओरछाईहैं मानहुंसमरसबजीतिकैमनो जघरभांतिभांतिमंगलकीबाजतोबधाईहैं १४ ॥ दो० ॥ आगेतेठाढ़ोतहांअंतःपुरकेद्वार लखीसुदामाजूसबैश्रीपति

जूकीदार १५ जानिद्विजातिगोपालहित सबनिनवाये शीश यहीभातिबिलसोसदाद्विजबरदीनअशीश १६ अरघआदिआदरकरैंहरिअतिभरेसनेह प्रफुलितललितकदंबसी लसतिकबीलीदेह १७॥ नाराचछंद॥ गुपाललाल मित्रकोअनेकभांतिआदरै सरोजनैनचैनसों सुबैनबोलि सादरे तरंगनैनपूरकेउतंगअंगमेंछये सुदामप्रीतिसोंलवाइश्यामबैठकागये १८ जराइकीबिचित्रचित्रशोभकांति पावनी बिलोकिवीरबिप्रीझिबैठिकैसुहावनी सुवर्णकी सुपानचारुआसपासवेशहै गुमानते विहीनहोतदेखिकैधनेशहै १९ अनूपजातरूपखंभयज्ञयूपसेबने वितानसेतभानरूपआसमानलौंतने बिछीलराइभूमिपैसुदेशचांदनी लखी मनोअमंदरूपचारुचंदचांदनीसखी २० बैठकवर्णन॥ क०॥ आनँदनिधानराजनीतिकोषदानबरु रूपकेनिधान समबीरमनभावनी अंतरसुगन्धनकेचुन्दनिलपेटीमनोमंदरकीबेटीजाकीचेटीसीकहावनी सुखदसुखमाकीओबनाई उपमाकीहैसकलसुधर्माओकबीलीछविपावनी सफलकै मानोंनिजलोचनसुदामाऐसी देखतगोपालजूकीबैठकसोहावनी २१॥ दो०॥ तहंसिंहासनरुचिरपैआसनलैनिज हाथ करतबिछावनआपुही पावनत्रिभुवननाथ २२॥ क०॥ कोमलकमलदूते अमलपुनीतअति ललितनवीन औनवीनद्युतिपावने साफजरबाफनकेकलितकुलीनपीन दीपतिमयूषमार्तंडसेलजावने संपतिसिंगारसेअपारछ विवारजिन्हें देखिकरतार सेहोतललचावने त्रिभुवननाथआपुभक्तहूकेहेतुऐसे आसनसिंहासनपैकरतबिछा

वने २३ ॥ दो० ॥ रचिआसनहरिजूकह्योवचनसुधासम
तूल ॥ जानिसुदाससुदामनिज मयेश्यामअनुकूल २४
श्रीहरिगीतिकाछं० ॥ सुरराजराजधिराजत्यक्तनकसी
कहियेकहा नवनिद्धियुतसबसिद्धिसोलघुधनदमदरङ्कउ
महा त्रैलोक्यसंपतिअखिलमहिमा सुखनिपूरीजेकही
लगतिलघुतादेतिसबकछुमित्रतुमलायकनहीं २५ गृह
जानिअपनोजोपधारेतौअनुग्रहकीजिये करिहेतचितनिज
मित्रकोयहमित्रआयसुलीजिये द्विजनाथआगमआपुको
ममतृषितमनकहँपाथजू श्रुतिपानकरतपियूषकोसुनिबैन
उत्तमगाथजू २६ बररूपअदभुतराबरोइनदृगसरोजनि
तरणिसो उपजोहियेअवलोकिजोसुख सकतनहिंमुख
बरणिसो यहद्वारकाअरुराजधानी सुनहुंबिप्रसुदामजू
तवपाँयपरसिपवित्रहवै सबभईअतिअभिरामजू २७ मह
नीयकीरतिकरतधवलितत्रिपुरउद्दितधामजू तुमसोंसुनी
तपुनीतहैंममचित्तवृत्तिअरामजू यहिभांतिआसनदेतप्रभु
निजभक्तिकीमहिमाकरी हर्षेपुरन्दरफूलबर्षेमुदितलखि
अतिहीहरी २८ ऋषिराजढूंढ़तरहतजाको आदिअंतन
जानहीं मुखचारिनिगमबिचारिजाकहँनेतिनेतिबखानहीं
जेहिलागिसाधिसमाधिशिवसनकादिनैननखोलहीं सोइ
भक्तबंधनसोंबँधेहरिभक्तके सँगबोलहीं २९ ॥ दो० ॥
सुधामधुरहरिके वचन सुनतश्रवणअभिराम आसनपैबैठे
हरषिपूरणकामसुदाम ३० प्रथमहिंललित पुनीतअति
द्विजकहँ आसनदीन यथायोग्य नँदनंदपुनि भये आपु
आसीन ३१ ॥ क० ॥ वैसईवदनपैसदनसुधाकेभयोदेह

सबवैसियेपैदीपतिबिशेषिये वैसईबसनझीनअतिहीमली
नसोंसनबीनजरबाफसिरीसाफसमपेखिये बदलिसीगई
दशासकलसुदामाजूकी श्रीपतिसमीपकीसुमहिमाअले
खिये मेरुऐसेऊंचेमनसंपतिकुबेरऐसेआसनपैबैठेपाकशा-
सनसेदेखिये ३२॥ दो०॥ लागीद्विजपगधूरिमग लपटि
लपटिकरदौर करुणासिंधुसमीपतेभईसुबसशिरमौर ३३
मनमोहनमनमोहनी सबैमोहनीनारि करजोरेठाढ़ीतहां
तिनसोंकह्योमुरारि ३४ ॥ श्रीहरिवचन ॥ क० ॥ इनकेस-
मानमेरेमीतवहिऔरसब ठौरठौरठाढ़ीं कहां कौतुकसो
जोइये ज्ञानगुणवंतव्रतवंतधृतिवंतधर इनकेसुभाइकहूं
दूसरोनकोइय करियेबयारिबोरिव्यंजनगुलाबनीरतापर
सुगन्धनिकेवृन्दनिसमोइये थकितभयेहैंपंथश्रमनिछये हैं
बेगिल्याइयेसलिलतौचरणचारुधोइये ३५ ॥ दो० ॥
थकितभयेमारगचलेबँधेहमारेनेह श्रमजलपूरितलसत
हैरुचिरकम्बकितदेह ३६ ॥ क० ॥ ऐसीसुनिबानीनँद
नंदनकीरानी हरषानीअधिकानीसबलीन्हेंसुखसाजको
शीतलगुलाबनीर झारीभरिल्याईकरैं व्यंजनउसीरके
समीरहितकाजको धाइधाइआवैंचारुयौवनसुहावैं छबि
वृन्दनलजावैंरतिरूपशिरताजको मेरेजानिसाजिदल
गाजिबलवंतआजुजीततमनोजमानोशंकरसमाजको ३७
दो० ॥ सतिभामाथारीरुचिरद्विजपगतरधरिदीन झारी
बारिगुलाबभरिरुकुमिणिरानीलीन ३८॥ सो० ॥ भक्ति
प्रतापबढ़ायकरुणासिंधुसनेहकरि द्विजपगलयेउठाय
निजकरकमलनसोंतहां ३९ ॥ गीतिकाछं० ॥ वारिरुकु-

मिणिढारहीं हरिमीडिद्विजपगधोवहीं जानिनिजकरि दासआपनहृदयप्रीतिसमोवहीं शेषआननसहसनहिंकहि सकतजेहिगुणगाथको अबताहिपावतबिनप्रयासहिभक्त त्रिभुवननाथको ४० ॥ सो० ॥ जासुचरणबरबीर शंकर शिरभूषणभयो सोप्रभुआपुशरीरद्विजपगजलपावनकरत ४१ जानिसुदामहिंआपनोश्यामजु सादरनीरजनैनन जोवत धूरिसोंपूरितमीडितपायसनेहकेवृन्दनिदेहसमो- वत दीरघजोरकरेरीदराजनिपल्लवसी अंगुरिनसोंटोवत कांटनकाढ़ि सरोजसेहाथन नाथअनाथनकोपगधोवत ४२ क्षीरपयोधिसुताकेनिकेतजे संतसमाजनिकेहितजोये पूरदयाकेपुनीतमहानवनीतिते कोमलकांतिसमोये काम दकामतरोवरसे सुखमाकेसरोवरसेसुखभोये दीनकेबंधु द्विजातिकेपायनितेईसरोजनहाथनधोये ४३ दारिदकी मानोंआईधुजाबहुकालनतेपगबिप्रकेछाई दीनताकीभुज सीदरशै दरकीअतिहीकेगहे कठिनाई मीडतकोलसेहाथ ननाथ अनाथकेनाथझवानिलैंझाईं पूरितनेहके पूरिहरी द्विज पायँनतेकरिदूरिव्यवाईं ४४ ॥ दो० ॥ फटी फटी एड़ीनते काढ़िकंटकनवृन्द पायँसुदामाबिप्रके धोवतश्री नँदनन्द४५धोवतचरणद्विजातिकेनँदनंदनहरषाइ बावन पगुलोंयशबढ्योपावनधोवतपाइ ४६ मीडिमीडि द्विज पगतहांधोयेश्यामसुजान जानतसकलजहानहैं भक्तबश्य भगवान ४७ धोयेद्विजपगजगतगुरु संपतिशीलनिकेत पोंछेबसननवीनसोंहियेमानिअतिहेत ४८सतिभामायहि बिधितहां लखिहरि ललित बिलास मंदमंदसबतियन

सौं बोलीकरिपरिहास ४९ ॥ सत्यभामाकृतपरिहास ॥स०॥
वैब्रजबासी चरावतगाइपोशाकबड़ीजिनकेकमरीकी तेई
अहीरनकेढोटियाजे करैंदधिबेंचिकै जीवनजीकी येशिशु
ताकेसंघातीसबै अरुनेहदशालखियेयहपीकी नीकीलगैं
हमकैसेइन्हें औलगैंअबकैसेरजाइसिनीकी५० ॥ सो०॥
सतिभामाकीओर तिरछीलोचनकोरकीबिहँसेनंदकिशोर
अंतर्गतकीजानिसब ५१ ॥ स० ॥ शंकरसेउरअंतरध्या
वतग्राहिनिरंतरप्रेमनिपागे आदिअनादिअनंत बखानत
जानिनितंतकैसेसमभागे तेनिजभक्तअधीन ह्वैदीनद्वि-
जातिमिलेअतिहीअनुरागे हैतुकैब्राह्मणसोंकुशलात को
शीलकेसागरपूछनलागे ५२ ॥ हरिप्रतिसुदामाउत्तर ॥दो०॥
नीकेतुम नीकेघने आनंदसकलनिकेत मोदशीलसुखमा
यतनदरशरावरेलेत ५३ यहिबिधिअतिचित हेतुकरि
कुशलब्रूझिघनश्याम जलजनयनबोलेबहुरि हर्षितकरत
सुदाम५४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ क० ॥ पढ़ेएकसाथएकसाथ
खेलेहमतुम अशनबसनसबै एकसाथकीन्हेंहैं एकसाथ
बासगुरुदेवकेसमीपकरिबेदनके भेदनितंतकरिलीन्हे
हैं मोहिंतौ नभूलतितिहारीप्रीतिअनुदिनतुमतेनऔरमित्र
परमप्रबीनेहैं कीन्हींनिठुराईसुधिआपुबिसराईजोपैकब-
हूंनआईनेकुदरशहुदीन्हेंहैं ५५ ॥ दो० ॥ कहौमित्रवा
दिननकीसुधिहैकैककुनाहिं गुरुनिदेशबनजातजबपावस
घनघहराहिं ५६ ॥ स० ॥ वादिनकीसुधिहैकिनहींजब
पावसमेंबनओरसिधारे श्रावणबारेडरारे लगैंबरषावन
बारिबलाहकधारे धाराघरानिकीधारनिचालैं धराधरभू

परनीरपनारे ह्वांहमसोंधपगारहजारनिकै मकीडारनि ऊपरवारे ५७ वादिनकीसुधिहैकिनहींजबआवतते बन तेफललीन्हें ताहीसमयचहुंओरनिते बरषेजुपुरंदरनीर प्रबीने देख्योसरोवरचारुतहां खगवृन्दलखेसबगातन भीने रावरेओहमआनँदसोह्बांपुरइनि केपातनछातन कीने ५८ वादिनकीसुधिआवतिमोहिंगुरूजबहेतुकेआ-यसुदीनोकाननकाननतेफलमूलबड़ेडरतेहमओतुमलीनो ग्रीषमआतपकेसमयातपलागतअंगनिआयोपसीनो छांह कदम्बकीमंजुलमांहँ हरेतृणतोरि बिछावनकीनो ५९ सावनकीबरषावननीरनिपूरितकीन्हेंनदीनदभारी आनँद दानिवरासुरबानि बियोगतियानिहियेदुखकारी पावस मेंहमरावरेवादिन जोउतकाननजाबनिहारी टारीटरैन अजौंचिततेवहकारीपयोदघटाछबिवारी ६० वादिनकी सुधिआदिनक्योंहूं गुरूजबबेदपढ़ावनआये मोहिंऋचा इकभूलीतहीं उनलोचनरोचनकरँगछाये ह्वांतबआपुदु-राइकै भूपरशासनहींलिखिअंकबताये वेउपकारहमैंनहिं रावरेक्योंहूं नहीं बिसरैं बिसराइये ६१ ॥

इतिश्रीसुदामाचरित्रेमत्सकलभक्तजनाह्लाद
केबीरबिरचितेचतुर्थोऽकः ४ ॥

———०———

दो० ॥ हरिकरिपंचमअंकमें मेंटहेतुपरिहास तंडुल लीन्हेंओछका सोकीजगतनिवास १ मित्रसुमिरिगुणरा वरेहांसीउरनसमाय अबमतिसकुचौपैसुनेवहदिनवैसहि आय२ ॥क० ॥ वादिनकीसुधिहैकिनहींजबकानतकोगुरु

देवपठाये भारेचहूंदिशितेबिकरारेघटाघनकेचहुंऊपर छाये रातिभईऔबसेतितिहीजुक्षुधातेहिंअवसरआनिसताये मांगतहूं नहिंमोहिंदियेपैचनासबआपुअकेलेहीपाये ३ ॥ दो० ॥ हमैतुम्हैंगुरुतियदये चनाचलतबनओर मोहिंनदीन्हेंतनकतुम मित्रआदिकेचोर ४ अबकछुभाभीनेदयेहमकोभेंटपठाय देहौंकीदेहौनहींसोकिनकहौंसुनाय ५ भेंटदेवयहसुनतही फटीपिछौरीढांपि द्विजजीतंडुलकी पुटकि लईकांखमेंचापि ६ भेंटदेतउपजैत्रपामांगतनन्दकुमारु यहसंदेहहिंडोरचढ़ि झूलतद्विजचितचारु ७ ॥ स० ॥ पुहुमीपैंपुरंदरहूतेधुरंधरभूपजितेजनपुंजभरे लषियेजिनकेनितद्वारनिवैप्रतिहारनहूंकेसमीपखरे कछुहैंतेहिलायकभेंटनहींवहितंडुलजेहठिदीन्हेंसरे द्विजजानियहैंनिजकांखमेंचाउरचापिकैतेसबचूरकरे८॥दो०॥ ब्राह्मणिसोंकहियेकहा करिकैनिपटगवांरि ऐसेराजधिराजको पठयेचाउरचारि ९ ॥ स० ॥ भांतिनभांतिनबातनसोंसमुझावतहीसबगातपसीनो कैसहुहारिनमानी गँवारिभवारिकरीअतिहीदुखदीनों ब्राह्मणीबैरिनसीहमसोंवहिपूरुबबैरभलीबिधिलीनो चाउरचारिगोपालहिंभेंटपठाइकैमोहिंफजीहतकीनो १० ॥ दो० ॥ कहाभयोवाकेदिये जानैकहाअजानि हौंनकरौंनँदनंदढिग चाउरकीचरचानि ११ ॥ समानिका ॥ योंबिचारिकैहिये रोषतीयपैंकिये सांसदीहलेतहैं नारिगारिदेतहैं देनकोक होचहै लाजनाहिंनेकहै नैनकौलभोरज्यों बिप्रभीतचोरज्यों श्यामपासपाइकै नारिसोंजवाइकै गातधीरकोधरै

जापसोंलगोकरै भूलिचातुरीगई चित्तआतुरीलई ज्ञान वृन्दसोंभरै शोचमेंतऊपरै वेदभेदसोंछजै पैनमोहकोतजै देखिबिप्रकीदशा नाथचित्तमेंहँसा १२ ॥ दो० ॥ बिप्र सुदामाजूतहां धरिधरिधीरजगात साहसकछुचाहतकह्यो लाजनकह्योनजात १३ नँदनंदनहंसितबकही होंजानत होंमीत बहुरिभेंटयहऊकरी तुमचनानकीरीति १४भाभी हितकरिहोंदई तुमनकरोकछुलोभ पायँपरोंअरजनिकरौं दीजैतजिचितक्षोभ १५ मांगतहरिअबभेंटहैं जियहह जानेहुंसांच लाजथरथरातबपर्‌यो द्विजचितनाचतनाच १६ देतनचाउरकैसहू यहैठीकहियराखि युगुलजोरि करबिप्रतहँ बचनसुनायेभाषि १७ ॥ सुदामोवाच ॥स० ॥ है प्रभुतासबठौरतिहारिये और को जाय तुम्हैंसबकीजै रीझत आपुकेरंककुबेर कुबेरऊखीझतरंकुगनीजै चौदह लोकचराचरसाहिबरावरेतेनहिंऔरसुनीजै यातेकहातुम लायकनायकभेंटहमारियेआशिषलीजै १८ ॥ तामरस ॥ तबयोंसुनिकैद्विजकीहरिबानी अतिहीकरिलाजसमाजसमानी हियमेंअतिआनंदवृंदउमाहैं हँसिबोलतदीनदयाल तहांहै १९ ॥ भगवानुवाच ॥ तुमतोसबज्ञानबिलासनिजानौ अधौचितलोभकहाद्विजआनौवहभेंटकहाजेहिकेहियभाई करियेजियतीचितचातुरताई २० यहिभांतिनसोंगुणमंडितहौजूजगजाहिरदीरघपंडितहौजूममहेतुनिकेतसदातुमजोये बरउज्ज्वलकर्म्मसुधर्म्मसमोये २१ हितकैजुअशीषदईतुमजोहै शिरऊपरमानिलईहमसोहै द्विजकैजुप्रसन्नदयाअबकीजै कछुहैजुसमीपसुतौकिनदीजै २२ ॥ क० ॥

निपटसयानेजानेऔरहूकेमीततुमकामकेपरेपैकामऐसही
करतहौ जानिबूझिछांड़ोरीतिमाड़ौअनरीतिद्विजलोकअ-
पलोकनतेनेकुनाडरतहौ हमहूंसेहेतीसेजुज्ञानीमानिएतो
खोरिकाहेनहिंयारअतिधीरकोधरतहौ एतीजूपठायेबड़ी
हेतुकरिल्यायेभेंट देतसोनकाहेकाहेबीचहीहरतहौ २३
प्रमाणिका॥दईजुआपुआशिका करीजुशीशबासिका मंगा
यभेंटदीजिये बिलंबनाहिंकीजियेसुनोजुबातकानदैसुदेहु
भेंटमानदै नकीजियेकहाकही लियेजुभेंटहौसही लजात
क्योंद्विजातिजू भरेसयानगातजू सुशीलकेनिकेतहौ सु
क्योंनभेंटदेतहौ सुन्योगोपालबानिको अनन्दहेतुखानि
कोत्रपासुदामहीगहीसुबानिफेरिकैकही२४॥ सुदामोवाच ॥
त्रिभंगीछं० ॥ तुमहौसबलायकसुजनसहायकबरदायक
सुखकारी बररूपप्रकाशकललितबिकाश कअघनाशक
दुखहारी अनभिज्ञसुजातकबिनशतपातकखलघातकतुव
हेरे जगतीपतिपक्षकअरिगण भक्षकप्रणतनरक्षक प्रण
तेरे दनुजेशसंहारनधरिअवतारनभुवभारनसबनाशौ हरि
एकस्वरूपंजगतअनूपंबहुरूपकतुमभासौ मुनिकेमनरंज-
नमुरमधुगंजनतमभंजनश्रुतितोलो करिकैउपहासनअबि
हतशासनकतदासनप्रभुबोलो सरसीरुहलोचन लगत
सकोचन भयमोचनसुनिलीजे निजजानिसुदामहिंगथ
बिनधामहिं अभिरामहिं अबकीजे रचिएकउपायनरहित
सहायनहितुबायनचितदीन्हों तियकीनपठावनइतप्रभु
पावन तबआवनहमकीन्हों २५ ॥ दो० ॥ कैअनेकअब
एकहीदरशतहौ नँदनंद बारिधबीचनमुकुरमधि प्रति

बिम्बितज्योंचंद २६ ॥ शंकधारीछं० ॥ सुनीबिप्रबानी हियेश्यामजानी नहींभेंटदेहैं गड़ेलाजमेंहैं तबैनावबोले सुधाबैनतोले कहौमित्रबातैं सिखीयेकहांतैं चनाजोचुराये घनेलोभछाये वहैरीतिकीन्हीं यहींभेंटलीन्हीं तियाभेंटदै कै बिनयभांतिकैकै इतैकोपठाये तबैआपुआये दईभेंट मोहैं लईआपुसोहैं लियेसोनिशंकै डरौनाकलंकै नहींदेत बैठे कहालोभपैठे सुतोभेंटथोरी लगैदीहचोरी दईप्रीति कैकै जुभाभीपठैकै सुदीजैकृपाकै छयेक्यों त्रपाके २७ स० ॥ रावरेपैहमपैकरिहेतुहि बिद्यागुरूइकसाथपढ़ाई पाठबिचारसमयकबहूं फिरि बीचपरोपलकोननिभाई लोगनआइअचम्भोयहै अबपूछतयोंतेकियेहीढिठाईमोहिं बचाइकै आपुअकेलहीमीतकहांतेसिखीठगहाई २८ जा निहितू कुलगोतबड़ोकबहूंको उमानि मुलाहिजो जैहौं आखिरआपुकिदेखिप्रतीतिसो आपनीह्यांनपठावनीलैहौं धोखेचनानिके भूलौनहींवहभाभीके भेंटतुम्हें नपचैहौं यारसुनोअबबारहिबारसो रावरीनातकरारनिबैहौं २६ चोरीचनानितजीसबकानिचहैंहितकैचितवानिलईहै दी-जियेभेंटमँगाइइतैकररावरेजोउतभाभीदईहै नंदकीसोंह सुनोद्विजराइकरोहठिकै यहिकाजखईहै बूढ़ेभयेअरुदांत गयेपैअजोनहिंपाछिलीटेंवगईहै ३० ॥ दो० ॥ यद्यपि सितामधुमिलिसुधा बरघिनीमकरुआहि तदपिसुभावन आपनोतजतनिबौरीनाहिं ३१ ॥ तोटकछंद ॥ सुनिश्री जगदीशगिराचयसों द्विजकेचितआयभईभयसों दृगनीर जसेअतिलालधरैं मनहींमनमेंइमिशोचकरैं हठिजोवहि

ब्राह्मणिभेंटदई तजिक्षोभनिलोभनिपुंजछई कछुभेंटन सों हरिलायकहैं जगजीवनकेसबनायकहैं रमणीयरमा-पतिलक्षणजो कमनीयचरित्रबिचक्षणजोशरणागतरक्षक पक्षकजो दनुबंशसमीरनतक्षकजो जेहिलागिचराचरहोत सुखी बिसरेजेहिकोसबहोतदुखी जेहिकेगुणगाननिवेद करैं जेहिकोमुनिवृन्दसमाधिधरैं जगमध्यजिन्हैंलगिचेत नता भरमैंजेहिकोममता जनता जोइएकअनेकदिशानि जगैतेसबसत्यप्रपंचलगै जेहिको चितएकनिमेषधरैं भव सागरदुस्तरलोगतरैं जेहिकेपदपंकजचित्तलगै सुठिदारु णबिघ्नसमूहभगैजेहिनाभि सरोरुहओरुअर्यो चतुरानन ढूढ़तहारिमर्योजेहिकेपललागतहोतप्रलै परिपूरिरहैस-बएकजलै बटपर्णपरेशिशुशोभलई जोइसोवतब्रह्मअनंद मई दृगखोलतजाहिअजादिकलैबहुभांतिप्रपंचसबैप्रबलै जोइआदिअनादिअनंतसुनौ परिपूरणअक्षरजाहिगुनौस तओचितमोदमहोदयजो वहरूपअनूपदयोदयजो जोइअ द्भुतशीलनिरंजनहै सोइसंतनकेदुखभंजनहै महनीममहा महिमानिछयो जेहिकेसहसाननसेजमयोगुणपालविमुक्त अनुक्तजुहै मनुजामहिपंथनपावतुहै जोअनूपअरेखअसीम जोईहठिमांगतभेंटनरीझिसोई कमलाजेहिहाथनिवासक रैजेहिहाथहिंतेजगमोदभरै शुभकर्म्मनिकोकरहैकरजोबर धर्म्मधराधरकोधरजो गुणवानकमोदसुधाकरसों रुचि रूपभर्योसुखमासरसोंसुरपुंजपयोजनितेजथलै दितिजा तकपातककालकलै बहुभांतिनजोउपमाअमितै प्रभुसो करबोड़तभेंटहितै जेहिकेबरहर्षहियेभरिये तेहिकेकरचा

उरक्योंधरिये कछुबैनभलीवहिढीठिकरीकरिबादबिवाद निसोजुअरी हरिहेतुहितंडुलचारिदिये उपहासननिसों युतमोहिंकिये यहिरूपबिचारनिबिप्रपरे तियपैअतिही हियरोसुभरे धरिधीरजज्ञानहिंकीमतिसों द्विजबैनकहे जगतीपतिसों ३२ ॥ सुदामोवाच ॥ त्रिभङ्गीछं० ॥ तुवकीरतिसरसी हरषेधरशी निशिकरहरषी दिशिबिदिशैत्रय कालनिदरशीरचिगतिनरसी खलगणछरसीमनुजमिशै द्विजदीनसहातीरहितअरातीअविरदजातीजगतमही जगजीवनबातारचितबिधाता बरगणदाताप्रभुतुमही ३३ जिनहैं तपकीन्होइगतिआधीनोतिनतुमचीन्होंनिगमकहैं जिनभक्तिनजानीतपअभिमानीवैजड़ज्ञानीभ्रमतरहैं पद पंकजतेरेकरतबसेरेनिशिदिनमेंरेहृदयमहीं बख़सोफल जाग्योप्रभुअनुराग्योअबकछुमांग्योचहतनहीं ३४ मुरलीधरदेख्योजन्मसुलेख्योइनगनभेष्योकीनचहै सुनितो मुखबानीअमृतप्रमानीकथनिनआनीश्रवणसहै अतिमोद बिलाशीसबसुखराशीसुनतप्रकाशीतुमदरशै हमदासति-हारेभयेसुखारेजनरखवारेपगपरशै ३५ ॥ सो० ॥ भेंटजु होतीपाससुनियेजगतनिबासजू कहोकौनकीआश सोदुरायहमराखते ३६ बिप्रबचनसुनिश्याम दयाउदधिगुण निधिधनी बोलेतहंअभिराम बीरसुजनसंकटहरण ३७॥ श्रीभगवानउवाच ॥ द्रुम्मिलाछं० ॥ परिपूरणज्ञाननिधाननि पैचितवानिवहैहितकैअटकी बरशीलसुभायनपूरितगात नदुर्म्मुखबातकहैलटकी कछुहैढिगनाहितसोनकहौअब कैसवईयहऊगटकी द्विजफेंटहिमेटिजुबोलितहौकतखो-

लतगांठिनहौपटकी ३८बरब्राह्मणवेदपरायणहौजगको
अपनोगुनयोगनिहै बहुभांतिनकैजपकैतपकै जगतीतप
सीनिशिरोमणिहै सबज्ञानबिलासनिपुंजभर्योसुसुधाम
धिएकतुहीधनिहै सुनितूयहरूपअनूपतऊद्विजपैयहभेंट
द्वियेबनिहै ३९ ॥ स० ॥ बारक आपुकरीसुकरीकबहैअब
पाइठिसीलिखिपाई खोलिकैफेंटनदेतहौभेंटमयेअलमेट
नहोतिबड़ाई दोषतुम्हैंअबदीजैकहायहजन्मनक्षत्रनकीप्र
भुताई जानतहौजुचनानिकीरीतियहौअबीचउपाइनि
खाई ४० कीन्हीहतीवहिबेरगईसुभईवहबारसुनोद्विज
थोरी कैसहूभेंटनयापचिहैतुमतोनिजुकैमरयादहितोरी
ऊटलऔरकीऔरेकथाकतजूटतबैननिकैमुखजोरी जानि
परीबनिकै अबमित्रजूढीठभये कैचनानिकीचोरी ४१
ये चतुराई भलीनकरौयहिचालमें नामधरोद्विजजैहा
मोसममीतऔमांगनहारहौयारसुनोनकहूंतुमपैहौ पूरा
परैचरचायहभेंटकीपेटकीकैसहूबातसुनैहौ हैकछुकैवहि
दीबेकहीकिनसोअबदेहौनदेहौकिलैहौ ४२ ॥ दो० ॥
भाभीभेंटदईहमैं भरीनेहकैपूर सोनदेततुमकैसहूमेटतहौ
द्विजमूर ४३ जगतपलैगोपालकेसुधासहोदरबैन सुनि
सुदामशरमाइकैलागेउत्तरदैन ४४ ॥ सुदामोवाच ॥सो० ॥
होंमांगीकरिटेकभेंटरावरेहेतुकरि कहीनमानीनेकछूंछेही
पठयेतिया ४५ ॥ स० ॥ छूंछेनहौंहरिपैअबजैहौंकही
जबमेंहरितोबिललाई भौनकेकाननिकोटिकठोरतिमोर
तिआननमोढिगआई रीतईमोहिंपठाइदियोकरिबातनही
कीघनीचतुराई दीनकेबन्धुजुदेईकहाकछुवैनहिब्राह्मणि

भेंटपठाई ४६ हौंयहजानततोभलिकैतुमसेप्रभुपैंबिनभें
टनजाने एकछुमांगतहूनदयोकहिकैबहुबैनघनेपछिताने
ब्राह्मणिबैरिनिबैरुलियोहमसों वहिजाहिरबादिकैवाने
खूबीकरैउतआपुइतैअबतोहमहींकोपरेशरमाने ४७ ब्रा-
ह्मणीसोंलरिहौंघरजाइकैमांगिबिदातुमसोंजबजैहौं रो-
षमसूसनपूरितकैमनमानैअनेकअनूतरकैहौं जोयहरीति
इतैपठयेफिरि तौउतहीबहुतैसमुझैहौं साहिबसांची
सुनोअबकीहरिकैसहूभेंटबिनानहिंऐहौं ४८ अंतरकी
सबजानतआपुकहाअबपापुलगावतमोहैं देहुदुराइकैभेंट
दुराइकहौयहदूसरोकोहै ब्यापकठौरनिठौरतुहीहैचरा-
चरतौजगतामनमोहैं याचततूप्रभुमोहिंकहासुनुयाचत
ईशअजादिकतोहैं ४६ ॥ दो० ॥ अन्तरयामीजगतगुरु
कहानजानतआप नाहकइनबतियानकत मोहिंलगावत
पाप ५० हौंहठिकैमांगीहुतीसुनोंजगतकेईश ब्राह्मणि
इतनीपैकहीद्विजकीभेंटअशीश ५१ वहब्राह्मणिबिनभें-
टहीसुनोंत्रिलोकीराइ आपुहिघरबैठीरही दीन्होंमोहिंप-
ठाइ ५२ ॥ स० ॥ ऐसीकहीफिरमौनगहीअँखियानसों
भोरकेअंबुजमापत शोचबिचारिबिचारतसोहठिलाजनि
सोंपलकैंयुगझांपत मोपैदशाकहतेनबनै वहशंकभरेते
दुवोकरकांपत जोरसोंबैठेदबाइतहां द्विजफाटीपिछौरी
चहूंकितढांपत ५३ ॥ दो० ॥ हरिसमीपतंडुललियेहोत
जातअलमेट गहनिअचेतनिकीगहीचेतनद्विजतहँभेंट५४
सुनतसुदामाबैनतहँ कमलनैनभगवान बीरभक्तिबंधन
बँधेबोलेकृपानिधान ५५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दो० ॥ चतु-

राईतोरावरे ज्ञानीगुणीसुनीत निपटसयानेऔरकेजाने होतसमीत ५६ ठौरठौरव्यापकजुपै हमकोकहतेजात तो कतनाहककहतद्विज चतुराईकीबात ५७ अंतर्य्यामीकहत जोसोउपकारीबात निपटगसीलदेखियतुमीतरावरेगात ५८ नाहकलाइकलंकको उनकोदीजतदोष मोआगेकत कीजियतभाभीजीपररोष ५९ भाभीभेंटदईप्रगट तुमन हेतकरिदेत सुनोंमित्रकछुदिननमें वारिखाइगीखेत६० ॥ स० ॥ भाभीदईहितकैममहेतहिभेंटजुलैतुमफेंटकसीहै देतनसोअबआइकहायहआनिकहाचितबानिबसीहैं आप नोजानिकहैंहममित्रसुनोंइनबातनिहोतहँसीहै चन्द्रतेचौ- गुनोतोयशचंद्रअमन्दसोचाहतहोनदशीहै ६१ ॥ क० ॥ षाड़शजेबिद्याअबतेईकलाषोड़शहैंबचनबिलासशुद्धपूरसो असतहै बारिनिधिसुकृतसमूहशतमोदकरितापरप्रगट प्रसादसोरसतहै विशदबिशालबीरसुयशकीचन्द्रकानि चन्द्रकसीचारुचारुचंद्रिकाहँसतहै अंकतेबिहीनयातेरहत उपायनकोसांचेद्विजराजद्विजराजसेलसतहै ६२ जादिन चोरायेगुरुतियकेपठायेचना तादिनतेसीखिलईवैसीतुम ठौरिया क्षोभमतिमानोंपंथभेंटजोजुठारीहोयजूठिये बदरिमोहिंदीन्हेंआयसौरिया रावरेसमीपकछूनाहिनै निदानतौजूनाहकहीकीजैकतबातनकोझौरिया येजूद्विज राजचहुंओरतेबारबारकाहेकाज ऐसेऐंचिओढ़तपिछौरिया ६३ ॥ दो० ॥ जोनभेंटढिगहोइतो अबसुनियेनिरधारि ठाढ़हवैकैतरणिपै दीजैकरनिपसारि ६४ तबसुनिद्विज हरिकेबचन उरयहआन्योज्ञान चलतनअबकछुचातुरी

भई मजीहतिआन ६५ तियअधीनतियकेकहे चलत सदाहीजोन ताहिछोड़िगृहजगतमें होइफजीहतिकौन ६६ सजलनयनद्विजश्यामसों कहतबनतनहिंबैन शोच सिन्धुद्विजहैपरयोंग्योहूयाहलहैन ६७॥ स०॥ हेरत हैंहरिओरनकैसहूकोटिकरैंसकुचानबड़ेदृग शीशनवाइ रहेकछुयोंमगमानहुंआइठगाइमहाठग चाहतभाग्यो नि-केतकीओरपैलाजनिसोंनहिंकाढ़िसकैडग नाहकह्वैकै कलंकितसेद्विजशंकितबैठेगड़ाइतहांपग ६८ कैयकबातें कहैंघनश्यामसुदामनतेचितएकनआनत शीशखड़ेहितहू कीसुतौबहुदारिद्रओरकीओरहीमानत देहुंनचाउरकैसहू येयहईयहठीकहियेमहँठानत जोरतेमोरतजातफटीपैफ टीडुपटीचहुंओरतेतानत ६९॥ दो०॥ ऐसीलखिद्विज कीदशाकहीश्यामम्रृदुबानि मेंटदेहुयहतनकसीलेहुबड़ी यशखानि ७० मांगतयातेमेंटहठितीनलोकशिरताज चा उरलैचाहतदियो द्विजहित्रिलोकीराज ७१ द्विजकीफटी पिछोरियाताऊपरकररखि करनलगेहरिचातुरीबचनहे तुकेभाषि ७२॥ श्रीभगवानुवाच॥ दो०॥ होतकहलयहिम-हलमेंसुनोंचातुरीखानि तापरतुमचहुंओरतेबैठेडुपटीतानि ७३ जानेकहलानेघने मारगआवतयेह कहेदेतश्रमपन्थ कोयेप्रसेदकनदेह ७४ नँदनन्दनअतिहीसरस नूतनब-सनमँगाइ कहनसुदामासोंलगे यहुपहिरोद्विजराइ७५ स०॥ ओढ़तमोटीकहाडुपटीश्रमनीरकीभीरलखौद्विज माथन सुंदरअंबरयेपहिरोरँगेचन्दनचारुसुगन्धकेसाथन भांतिनभांतिनकैबगदावत मोहनजूकहिमंजुलगाथन

एंचिलईसबओरपिछौरीपरेद्वौछोरद्विजातिकेहाथन ७६
दो० ॥ हँसिहँसिअपनीओरको एंचतत्रिभुवननाथ फिरि
फिरिब्राह्मणहाथसोंगहतजगतपतिहाथ ७७ अरुणचारु
नखचन्द्रमृदु जिनलखिजलजलजात तेकरभक्तिप्रताप
द्विजकरसेकरलपटात ७८ कोजानैकेहिभांतिकेकीन्हेंसु-
कृतसुदाम जातेश्रीजगदीशके गहेहाथअभिराम ७६ जि-
नकेनूतनगुनकहत नितप्रतिअहिकुलराइ देखोभक्तिप्र-
तापद्विज तेकरपरसेजाइ ८० ॥ हरिकरवर्णन ॥छप्पय॥ था
पितसुकृतसमाज संततउत्थापिअधर्महि बंधनअरिबरगो
नकरतजोनितहिसुकर्महि सुयशनीतिआवासत्रासजिन
असुरनकीन्हें धरणिभारहरिअमितमोदसुरपुंजनदीन्हें
जिनलागिचराचरजगतसबजलजहाथहपितरहतदेख्यो
गोपालअवढरढरनिसोईकरद्विजबरगहत ८१ संतकुमुद
शुभचंददुःखतमतरणिउदंहह अरिकुलप्रबलकछारजात
वदसपरचंडह नष्टशीलअहिवृंदप्रगटखगराजकुपितअति
कष्टमैनहरिनयनअट्टदानवगजमृगपति राजाधिराजब्रज
राजइमिजेहिहाथथपेउउपमालहतदेखगोपालअवढरढर
निसुसोईकरद्विजबरगहत ८२ धर्म्मकर्म्मकरनिकरसुयश
तरुफलसमपेखिय नीतिसुमनमकरंदवृंदसुखमाकरिदे-
खिय भुवनदवनपरत्यक्षभवनसागरतनपाकर शुभलक्षण
युन्नसुखदसंतसंतनसंकटहर कहबरिसत्यबिक्रमलखित
थकितशेषजेहिगुणकहत देखेगोपालअवढरढरनिसुसोई
करद्विजबरगहत ८३ थकितपंथथरहरहिथकितनहिंपग
घलिसकहि मुकितकेशअविवेषमुरकिपिच्छहफिरितकहि

रुकितबुद्धिपरगासलुकितकाननगिरिकन्दर क्षुधितअन्न फलभखहिक्षुधितबनचरजिमिबन्दर इमिभांतिबैरितरु णीमृदुलथलहिथलहिजिमिडररहत देखहुगोपालअव ढरढरनिसुसोईकरद्विजबरगहत ८४ दृढ़अधर्म्ममर्य्याद सलिलखलनीतिगहिरअतिकुबलबक्रवलनक्रसूसचाणूर दुष्टमति कच्छपप्रबल प्रलंबकठिनकेशीघरियारहि और अखिलजलजंतुसकलदानवपरिवारहि यहिभांतिकंसबड़ सागरहिजेहिकुंभजबिक्रमठयउ देखहुगोपालअवढरढर निसुसोईकरद्विजबरलयउ ८५ शीववेदजहँचारिचारिबर नीतिअनंतह शुभगबुद्धिवरघरनिबरनिरतननिजहँसंतह सतसंयम जहंमच्छमुदितसंचरहित्यागिभय जपतपधृति ब्रतऔरजहांपरजीवहरषमय यहिभांतिसुकृतसागरहि तहिजोइसुंदरशशिसमभयउ देखहुगोपालअवढरढरनि सुसोईकरद्विजबरलयउ८६॥स० ॥ कहुंशेषसेहूजेबड़ेबक ताबरव्यासमोंज्ञानदशागहिये नितशारदकंठमेंबासकरै अरुबुद्धिबिनायकशीलहियेफिरिहोइहिये हरिप्रीतिजुतौ रसनानिकरोरनिहीचपिये तबजेनँदनंदनप्रेमपगेतिनके कछुप्रेमकथाकहिये ८७ ॥ दो० ॥ बलकरिब्राह्मणकरगहे दुपटीछोरछुटैन तबमोहनद्विजकांखतेचाहैंचाउरलैन ८८ स०॥ छोड़तहौनकहोदुपटीकबहूंगहिलेतेबिलासनिसाने कलोलसोंखेलतमोहनजू लखिकेद्विजचित्तमेंसोदुचिताने कांखतेऔचकऐंचिलियेहरितंडुलखोलिकेलागेचबाने लो चनमीनसेब्राह्मणकेबड़ेलाजकंसागरहीमेंसमाने ८९ ॥

इतिसुदामाचरित्रे बीरकृतेद्विजहरिहास्यवर्णनोनामपंचमोङ्कः५॥

दो०॥सम्पतिदीन्हीबिप्रकोछठयेअंकमुकुंद तंडुलतन
कसेआनिकैदीन्हीदौलतितुंद १ तंडुलपुटकीजबलईनँद
नंदननिजहाथ कँपनलगेदिगपालतबसुरपुरहूसुरनाथ२
तंडुलपुटकीप्रीतिसों खोलिजगतकेईश मनहींमनलागेक-
रन द्विजहिअमितबकशीश ३ ॥ स० ॥ तंडुलएकमुठी
लैगोपालजबैहरषाइकैआपुचबानेदौरिकैब्राह्मणभौनगई
तबसम्पतिछोंड़िकैऔरठिकाने कांपनलागेसबैदिगपाल
पुरन्दरमन्दिरहीमेंकँपाने शेषकेशीशहनारवैपेकँपेकूरम
हूकेसबैसयवाने ४ चकृतसेचकचौंधिगये दिगपालद-
शौदिशिबुद्धिमलीनी शेषकेशीशलगेहहरान औकूरमके
जियशूलनबीनी देतनकाहूवैजानिपरयोकछुमोहनसत्व
रताइमिकीनी तंडुलएकमुठीमुखमेलि सकेलितिलोककी
सम्पतिदीनी ५ ॥ छप्पय ॥ कम्पितसातसमुद्ररुद्रकंपित
एकादश कम्पितहवैअसमानभानुकम्पितभेद्वादश कंपि
तअनिलसमाजराजसुरपुरकरकम्पित कंपितबरुणकुबेर
मेरुगिरिमन्दरकम्पित यहिभांतिसकलकम्पितभये जब
गोपालकनकीलई सबलोकनिसम्पतिसिमिटिसो चलि
ब्राह्मणघरकोगई ६ ॥ स० ॥ तंडुलऔनँदनन्दनकी
रसनाकोभयोजबहीशुभसंगम दारिदभागिगयोद्विजको
तबदेखिखगेशज्योंभूरिभुअंगम सम्पतिब्राह्मणभौनगई
सबदीनभयेअतिथावरजंगम शक्रशचोगहिहाथरहेऔरहे
गहिसूरजतेजतुरंगम ७ ॥ दो० ॥ दीबोलखिनँदनन्दको
छोंड़िऔरपरसङ्गतुरततरपिमानहुंकरीशिवाशम्भुअरधङ्ग
८ ॥ क० ॥ बीरखगशीशजगदीशकेकरतआहि औकते

सहसशीशथकितप्रकाशसे वरुणगणेशपरजेशनिजलोक
नतेनखतदिनेशनखतेशऊउदाससे आनँदनिवासज्ञानओ
घकोबिलासकैलाशहूसेशंकितकीजानियेसबाससे मेरुते
अमरअमरावतीतेअमरेशअलकातेकिन्नरेशहवैगये निराश
से ६जैसेपारावारपरकुंभजकोकोपअरु दुरितपहारपैज्यों
गंगाधारलेखिये तमपैदिनेशजैसेवृत्तनपैसुरेशजैसेतारक
पैशक्तिज्योंकुमारककीपेखिये पन्नगपैपन्नगारित्रिपुरपैत्रि
पुरारिसंबरपैसम्बरारिजैसेहूनिमपिये अर्जुनपैपरशुराम
ऐसेदीहदारिदपै आनँदकीफौजमौजमोहनकीदेखिय १०
देवतरुसेनतरुकामधेनुसेनधेनु उपलनऔरकहूंचिन्ताम
णिहीरसे प्रागसेनतीरथनतपीभागीरथसे शेषसेनअहि
बलवन्तनासमीरसे कामसेनरूपवन्त सूरसेनतेजवन्त
ज्ञानवन्तव्याससेसमानसुनासीरसे रुद्रसेनभक्तनासमुद्र
सेगँभीरनीरपाननापियूषसेनदानीबलबीरसे ११ काहूके
छोंड़ायेजेहिछांड्योनहिछोरजोर जालिमजलूसजोधरैया
योगजालको नेहकरिकीन्हेजेहिगेह द्विजदेहहीकोबीच
कबहूंनपरयोजासोंएकफालको ऐसहूसमीपीताहिजात
नासुदामाजान्योङ्क गयोतमाशोतहांचटकेहालको मोहन
कीमौजपारावारबीचपरयोबूड़िमरयोहरयोदारिदसनेही
बहुकालको १२ जगतमेंजेबदारमन्दिरजवाहिरकेकितहू
महलजाइ लखियेकनकसे डीलदारपीलहयसुवनसबी
लवारभारनहहरिजातसहसफनकसे कीन्होंयोंनिहाल
अनुकूलङ्क सुदामैसोईजाहि निशिद्योसबीरसेवतसनकसे
देखिद्विजद्वारऐसोसम्पतिपसारलागेधनदअगारकेभँडा

रऊतनकसे १३ ॥स०॥ कोमुकुतानिकीराशिगनै अरुको
गनैहीरनहाटकहूकी फैलिगईनभमंडललौंक्षितिमंडलहू
छविमानिकभूकी तंडुलएकमुठीमुखमेलतऐसीकृपाभई
श्रीपतिजूकी आइकैछाइरहीजुरिकैद्विजमन्दिरइन्दिरा
लोकतिहूंकी १४ ॥ दो० ॥ अतिमीठेकहियेकहा कहिन
माधुरीजाइ हरिसराहिइमिकैबहुरितंडुललियेउठाइ १५
दीनबन्धुजबहींलयेतंडुलदूजीबार सुरपुरनरपुरनागपुर
तबयहपरयोबिचार १६ ॥ चिलोकबिचार ॥ स० ॥ तंडुल
एकमुठीबलहैप्रभुतासबलोककीदीन्हीमहाहै वैसहीचा
उरफेरिलियेहरिप्रेमपयोधिहियेउमहाहै देहैंकहायहिबा
रसुदामहिं सम्पतिलेशकहूं नरहाहै जानिपरैनकहूं हम
कोअबधौंजगदीशबिचारीकहाहै १७ ॥ दंडक ॥ दूसरी
मूठीसोंलेततंडुलगोपालजूके करताअचेतसेनसुरतसंभार
हीं करिहैंकहाधौंबस्वशीसजगदीशऐसी रटनारटतभवघट
नाबिसारहीं रंककोबनायेराजराजकोबनायेरंकरंकराज
रचनाकीसुमतिनधारहीं चौंकिचारिबदनपसारिचारिओर
रहेभूलिगईचारुचतुराईइकबारहीं १८ ॥ सो० ॥ जब
तंडुलमुखमांह देनदयानिधिफिरिलगे गहीनाहकीबांह
हरबरायतबरुक्मिणी ॥१९॥ गीतिकाछं० ॥ नाहकीग
हिबांहबचननिकहतिरुक्मिणिरानि अरजमेरीतनकसी
सुनिलजियेसुखदानि देतहौयहिबारकेहिसेकरतक्योंन
बिबेक दईसंपतिअखिलअबप्रभुबचीहौंहींएक २०॥स०॥
भूतलहूओपतालहुमेंसुरलोकहुसंपतिजोबिधिराची तंडु
लएकमुठीमुखमेलतसोद्विजमन्दिरजायकैनाची वैसही

चाउरफेरिलियेसुनियेयहबातदयानिधिसांची देखहुबि
चारिहियेअबकेप्रभुदेनकोहौंहींअकेलीहीबाची २१ काहू
अनाथनिटेरैजबैतबताहितनाथतुरंतहिधाये आरतओशर
णागतकेतुमराखनहारहौबेदनगाये राखियेदानकेऔसर
मोहिंडरौंलखिदानहिकेरसछाये औरैभयेहौंकछूतबतेज
बतेप्रभूचाउरचारिचबाये २२ होतस्वयंबररासखीतहांजब
कैयककोटिजुरेभटबांके धायोसहोदरसैनसजैफिरआइकै
कोहकरालनिहांके राखिलईतबहूंतुममोहिंवैमारिचभूप
तिकालकलाके दानकेऔसरसोअबकीप्रभुराखियेराखन
हारसदाके २३ कासोंकहौंककुऔरनसूझतनाथपुकारति
आरतिभारीचाउरचारिचबातभईकछुऔरही सीप्रभुरीति
तिहारी दीनकेबन्धुहौंदीनभईलखिरावरीदानदशादहि
वारी राखियेबेगिकृपाकरिकै निजुआपनेपांइपलोटनि
हारी २४ प्राणसमानकैमानिहमें नितहीतुमसादरबैन
निभाखौ दीन्हेसबैबिसराइसुतौयहदानसमयधौं कहा
अभिलाषौ होंतोतिहारियेआदिअनादिसोजानिकैतंडु
लभूपननाषौ दीनकेबन्धुसुनोअबकैकरुणाकरि मोहिं
दयाकरिराखौ २५ ॥ क० ॥ साहिवचराचरकेमोहिं
निजुदासीजानि बचनहमारेहितमितकैगुनीजिये करत
ढिठाईहौंतौ अबलासुभावपाइसतरनहूजेनेकअरजीसुनी
जिये कीनीबख़शीसईशसंपतिअखिलअब औरआवैचित
जोईसोईसबकीजिये गहतिहौंयातेहाथहाथ त्रिभुवन
नाथनाथरमानाथऐसोबिरदुनदीजिये २६ ॥ दो० ॥
कमलापति कमलाउपतिबहुबिधिनिपटअधीन सुनिमुनि

जनरंजनतहांप्रतिउत्तरफिरिदीन२७ अतिसुशीलबपुधर्म कोदिशिदिशिसुयशसुगीत गेहहमारेनेहकोजानिसुदामा मीत २८ ॥ श्रीभगवानुबाच ॥ गीतिकाछं० ॥ बिशनशील समानरुक्मिणिजहांदेखतएक तहांबरणतसख्यसुनि करिबेदवृन्दबिबेक मित्रपरमपवित्रमेरेजानिबिप्रसुदाम होहिंसबबिधिमोहिंसबतब होहुपूरणकाम २९ ॥ चामर छं० ॥ चन्द्रचारुचन्द्रिकानिऔनक्षत्रमालिका भासमान भानभानलोकलोकसालिका यक्षकिन्नरादियक्षराज को लजातऊ पाथनाथऊअकाथगाथबातऊ तऊ लोकपाल तेजजालयेदिगीशऊमनै इंद्रआदिगीरवाणमांतिभांतिको गनै कालपाइयेसबैप्रतापहीनहोतहै जानियो निदानकै अनित्तसेउदोतहै देवतानियोंकहैअदेवतानिकाकथा कौन रीतिसोंकहोसुदामपूजियेयथा बारबारहोंयहैउछाह तौ हियेधरौं बीरमित्रआनिकैसमानआपनेकरौं ३० ॥ स० ॥ मोहनको सुनिबैन रमायों रमापतिको फिरिबातसुनाई तंडुलएकमुठीमुखझंपितसंपतिसोतौभईसमताई देतक-हाअबहौनकहौं इहिदीजेसोईअबजोचितआई मोहिंकृपा करि राखिकृपानिधिऔर सबैबिधिकीजे मिताई ३१ ॥ सो० ॥ जैसेहीहरिलीनदयासिंधुतंडुलमुठी तैसेहीधरि दीनरुक्मिणिबचन प्रमाणकरि ३२ ॥ दो० ॥ कमला पतिकोहोतहीकमलापै अनुकूल हरषितहवैसुरलोक ते सुरबर्षतभेफूल ३३ ॥ स० ॥ कौनकुबेरको बापरोभौन पुरंदरहूकीकहानगरीहै आठवसिद्धिनवोनिधिहूकीप्रभा द्विजमंदिरमांहभरीहै कोटिकसूरसुरेशसोब्राह्मणके गयो

बीरजूतेहीघरीहैं चाउरचारिचबाइकैंचोपसोंदीनतादीन केबन्धुहरीहैं ३४ ठौरनिठौरनिमेंगजगाजैंकपोलनतेझरैं दानझरीहैं जोरगराजनिपूरितपावसघोरपयोदघटानिंद रीहैं दीनदयालहूमौजकेआननऐसीदशाद्विजपैबितरीहैं चाउरचारिचबाइकैंचोपसोंदीनतादीनकेबन्धुहरीहैं ३५ भौनकेकोनपरेहैंअजानुतेकैयकमासनिकेअरसेहैं छीवत टूटिकनूकाहजारह्वैजीरनओनकछूसरसेहैं दीनसनेही दयाकरतेजबतंडुललैरसनापरसेहैं कौतुकसोंकैतबैद्विज मंदिरदौलतिकीबरषाबरषेहैं ३६ ॥छप्पै॥ कोनभनखतहु गनैगनैआसारकौनघन कोसुरसरिसिकतानिकरैन्यारे करिबिबरन कोजलजंतुनगनैगनैनग्गाअग्गाफल कोतृण संख्यापुहुमिभनैनिरधारबुद्धिबल कबिकोसुदामदौलति बिभवसबप्रमानकरिकहिपुजहि राजाधिराजन्रजराज इमिसुअमितदानदीन्हेंद्विजहि ३७ ॥ दो० ॥ गणनातीत्परहोइजो त्रिपुरअमरपदपाइ गणिपपरारधपारजोक- बहुंकश्रुतिपथजाइ ३८ बीरमित्रयदुबीरकी मौजजुलही सुदाम ह्वैनिशेषदौलतिसुतौगनिनजाइअभिराम ३९ कुमारछं० ॥ यहिभांतिश्यामसुजानद्विजकोदियोबहु दान द्विजबसनजेप्राचीनउतराइतेहरिलीन धरवाइया इकठौर त्रैलोक्यकेशिरमौर अभिरामरुक्मणिबाम ति- नसोंकह्योघनश्याम द्विजयोगजोजिवनार सोइहोइबेश प्रकार यहबैनश्रुतिपथहोत तियवृन्दमोदउदोत वहदीन द्विजकेकाज सबभईउत्तमसाज कहबापुरोद्विजदीन अ- तिहीकुचीलमलीन कहइन्दिरापतिमौन अजआदिदुर्बल

सौन प्रभुभक्तकेयहकाम सुनियेसबैअभिराम हरिभक्तजे
लवलीन तिनमुक्तिनहिंचितदीन निजकर्म्मफलउद्दोत
हरिभक्तकहनहिंहोत जबप्रीतिहरिपदमाहिं तबचारि
बर्ग्गतिनाहिं निजभक्तहियअनूरूप प्रभुलेतरूपअनूप
हरिभक्तगुणकेसंग खिंचिजातज्योंशिशुचंग यहदानुए
सनजानु अपबर्ग्गसोइकल्यानु तेहितेजुनित्यनिकाम हरि
भक्तिकरतप्रणाम बहुमुक्तिबिषकीमूरि तहंदेतहरिजन
धूरि यदुबीरचरणसरोज तहंचाहिचितहितरोज प्रभुबार
बारनिहोरि यहईकहैंकरजोरि हमजन्मजन्मनमाहिंहरि
दासबीरकहाहिं यहजीवयोगअयोग किनभोगबैनिज
भोग रतिरावरीयदुराइ छिनकौनचिततेजाइ अभिलाष
कोपरगास इतनोजोहरिजपपास निजजानिजनयदुबीर
करियोकृपारणधीर ४० ॥ दो० ॥ रमानाथबानीसुने
हरषानेसबअंग बनवायेद्विजहेतुतब भोजननानारंग४१॥
गीतिकाछं० ॥ मेरुकेजेशिखरजीततछुवतसेघनकीघटाधा
इयोपरिचारिकनतेहरितमणिगणकेअटा बीरजोरजलूस
कीचहुंओरफैलीछबिछटा चारुदीपतिपुंजसेतहंधरेकंचन
केपटास्वच्छशीतलसलिलपूरितहीरझारीझलकती देखि
द्युतिसुरलोकतेसबदेवकामिनिललकती सिद्धभोजनबि-
दितकीन्होआयरुक्मिणिजूजबै संगमित्रहिलैत्रिबिक्रम
उठेसादरसोतबै ४२ ॥ दो० ॥ गहेमित्रकोहाथतबश्री-
पतिसहितसनेह भईरुचिरजेवनारजहं गयेबीरतेहिगेह
४३ माणिकचौकीअनगनी धरीतहांछबिवार तिनपैद्विज
ठाढ़ेकिये श्रीपतिप्रीतिउदार ४४ पीताम्बरकीरुचिरद्वै

धोतीपरमपवित्र रंगगहिरीपहिरीतहां श्रीपतिश्रीपति मित्र ४५ कालिन्दीकलधौतके कलशनीरतहंढारि धोये हठिहठिआपुहो द्विजकेचरणमुरारि ४६ कहतनबनैसुदामकेसुकृतसमूहनबीन परसतसोपगजाहिमति परसतिनिगमनकीन ४७ बीरसनातनमित्रके पदपखारियदुराइ कृपापूरिपूरितभये पांयधोवायेआइ ४८ यहिबिधि करिपगधोवनी मुनिवरचितअभिराम कनकपटनपैजाइ कैबैठेसहितसुदाम ४९ सतिभामापटरानिहू भरीरूपके भार सोतोपरसतप्रेमसों पटरसकीजेवनार ५० ॥गीतिकाछं० ॥ प्रथमपरस्योकनकबेलनिस्वच्छघृतछबिसोंछई उठतसौरभडोरजोरझकोरसुरभितभूभई बहुरिपरस्यो प्रीतिसोंबहुभांतियहपकवानहै जाहितीनोंलोकमेंनहिं पाइयेउपमानहै चारुखाझाऔजलेबीसबनमोदकबेशहै देखिसोअलभेषनभललुकातहियअलकेशहै बहुतघृतके बनेघबरा रुचिरपापरदहिबरा मानकरिकैआइमानहुं मधुरताकेनिजुघरा नाकबासिनहूअलभ्यपिराकराका चन्दसी कोरिकोरिसुधाभरीजनु अमितआनन्दकन्दसी हरषदेनीअतिसलोनीबनीफेनीलसतिहै सबकलाकरिकलितमानहुंकलानिधिकोहंसतिहै भांतिभांतिनकेसमोसाधरेदीपतिरहसे माधुरीबरसरसरसकेबिदितजगसरहद्द से औरबिधिबिधिकीमिठाईरंगरंगनिकीघनी पूपपूरीऔकचौरीसहकुलीबहुधाबनी चारुकंचनकीरकेबीकन्दकांति अमन्दहै करतमधुरपियूषहूकोमानमानहुमन्दहै सितासुरसरिस्वच्छसिकताबिशददीपतिकोहरै सरतमेंतियअर

रसकीकरतिहैजोसरिधरै रुचिरअरिकन्दसोरसाजैभांति
भांतिनकीबरी हैंपकौरीबिबिधिबिधिकीजोरजेवनसोंधरी
मोदकरवरहैइडाहरअमलछबिबरधारकै पक्कफलसेमनहुं
आनेकलपतरुकीडारके लसतकैकप्रकारकेवृन्तारजोरज
लूसही तक्रअमलखटाइरसयुतललितमनकहंमूसही रु-
चिररचेसत्यभामाबरावेशप्रकारहै तक्रपूरितदेखियेबर
चक्रकेआशारहै सूपपरमअनूपकैयहरूपकीतहंराजही पा
कअतिकरितेकराचितअमितशाकसमाजही औरषटरस
बनेव्यंजनबहुतभांतिअनेकई बरणियेकेहिभांतितेसबबीर
रसनाएकई सूपओदनमृदुलअतियोंबिशदद्युतिकोदेतुहै
अमलहिमकरमुक्तिहिमगिरिकांतिकोहरिलेतुहैदूधमिश्री
डारियेयोंगाढ़िशिखरनिस्वच्छही सुधाकेजनुअनुजभग
नीदेखियेपरत्यक्षही छबिबारआनिअंचाररासेलसतिदृग
निसोहातहैं निरखितेबहुबेषकेअमरेशसेललचातहैं नार
ङ्गीकदलीमनोहरप्रचुररससोहैभरे दाखमधुरबदामखारि
कभक्षफलतेसबधरे साजिकैसबसाजसोबहुभांतिकीबहु
धाभली भागअरुअनुरागपूरितहरिसोहागिनिलैचली स
त्यगुणगणसत्यभामासत्यव्रतछबिवारहैं श्यामबिप्रसुदा
मढिगधरिदियेकञ्चनथारहैं ५१॥ सो०॥ देवदेवभूदेव
बिधिवततहंभोजनकरत लखतभक्तिकोभेवकहँमुकुंदकहँ
दीनद्विज ५२॥ दो०॥ सारीसरहजश्यामकी रुक्मि-
णिचित्तबिचारि गारीगावनकोतहां बुलवाईंतेनारि ५३॥
गारीगीतिकाछं०॥ तेहिअवसरगारीगावनकोरुक्मिणि
नारिबुलाईं उचितहुतेगारीकेजिनकेतेसबमिलिकैआईं बै

ठिसकलमहलनकेभीतरगावतगारिसुहाई मानहुंनभतेकि
न्नरकीतियउतरिअवनिपरआई रूपचतुरईयोबनहूतेपूरी
सबैसभागीश्यामलगायसुदामहितेसबगारीगावनलागीं
क्यहिबिधिगारिसुदामहिदीजैकहियेजातिद्विजाती अ-
र्ज्जुनऐसेसबगुणपूरेपायेअनुजसंघाती प्रथमहिआनक
दुन्दुभिकेसुतफिरिनंदनन्दकहाये जानिपरैनहिंनिजुकरि
द्वैमेंहैंधौकाकेजाये जिनगोकुलबसिडरतजिसबकोऐसी
नीतिचलाईप्रगटतहीपरदारनकेसंगरसिककरीरसिकाई
माखनजिनतस्करकीसमकरिगोकुलमाहिंचुरायो पहिल
खवायोगोपनिकोसोइजूंठनिआपुहिखायो कुबिजाकंस
नृपतिकीदासीतनतेरीअरुकारी ताकोपाइपाइसरबससो
कीन्हींप्राणपियारी परनारिनकेरसिकजगतमेंतिनकहं
हरिअतिचांड़े ऐसीरीतिनिरखिसबहिनमिलिकाजपरो
जनछांड़े तबहिंस्वसाकेहेतुबरहिपै ढूढ़फिरेजगमाहीं
बहुतकरीअपनीसीमोहनकोऊगांहकनाहीं सोतौरूपअ
नूपभईजबतनआईतरुणाई तबवहअर्ज्जुनकेसंगमोहन
दीन्हीभगिनिपठाई आपुरहितजबकारेजानैंतवरथचढ़ि
चढ़िधाये देवीपूजततेहरिहरिकैरुक्मिणिकोलैआये दल
सजिअनुजछोड़ावनधायो कीन्हींनिपटलराई हरिऐसे
गाढ़ेकरिपकरेरुक्मनरुकमिणिपाई यहिबिधिछलबल
करिनंदनन्दनलायेकन्याकारी अपनोब्याहआपुहीकी
न्हो निजघरभांवरिपारी वेदपुराणनकोमतजिनकोतात
जगतकोजानैं तेबसुदेवदेवकीकेअबपूतसपूतबखानैं रति
मानीबसुदेवदेवकीगर्भलह्योमनभायो पैयहअद्भुतगति

सबदेख्योसुतरोहिणीजुजायो ऐसोकोधरणीमेंउपज्योजै
सी यहछबिबरणी हूजेमुदितसुदामसुमिरिसब निजभा
इनकीकरणी उनगाईमोहनमनभाई जोगारीअतिप्यारी
तेईश्रीजगदीशकृपातेबीरहु बदनसचारी ५४ ॥ दो० ॥
श्रीपतिद्विजऐसी दशा जेवतलखेसचैन ललकि ललकि
सुरपुरकहैं सुरआपुसमें बैन ५५ ॥ परस्परदेववचन ॥क०॥
जाहिदिगपाल औबिशाल भागिवारेसुर ललकिललकि
हारेपैन दृगजोईहै करिबेसमानउपमान जाहिखोजियत
पैयतुन अन्तुसुखमाके पुंजभोईहै बीरयदुबीरकी दयाकी
हैअजबबात निपटहीमलीन दीनएकद्विजकोईहै बैठो सो
बिलासजगजीवनकेपास करिजीवनसुफल सोईजेंवतर
सोईहै ५६ ॥ चौ० ॥ यहिबिधिभोजन करिगुणसागर
उठेसहितद्विजसुयशउजागर कृपापूरिपूरितद्विजलोचन
दीनदयालभक्तभवमोचन कहतसप्रेमबैनतेश्रीहरि सुधा
सौधनहिंसकतजिन्हैंकरि प्रभुपदलग्योललकिद्विजचित
तहँमुदितमलिंदमनोंसरसिजमहँ निगमकथितयहिबिधि
अनुशासनसुनहुंसकलपुनिनरपरित्रासन दुखभंजनमुनि
जनमन रंजन अरुणबरणसमपूजतकंजन अतिआरतश
रणागतपूषण ललितरमाउरकेबरभूषण भवभयहरणक
रणमंगलघन तजिमनमोहधरौहरिपदमन जगतनकोऊ
जानतजेहिनामहिंनिपटकुचीलदीनतातामहिं प्रभुतेहिस
बबिधिकरिअभिरामहिं निजहितभाजनकीन्हसुदामहिं
सोनहोइद्विजकुलमहिमाभर नहिंप्रभावपुनिबेदजानकर
नहिंजपतपफल सोइचितआनहुं प्रभुपदप्रीतिरीतियह

जानहुं५७॥ कुमारललितछं०॥ तहांहरिपियारी भरीलालितझारी गुलाबबिप्रआगे धरीअतिअनुरागे५८॥दो०॥ भद्राकचनैटीभरी मृगमदमलयकपूर लैसप्रेमहाजिरभई श्यामसुदामहजूर ५९ मणिगणकीचौकीनपरबैठेअतिअभिराम सोसुगन्धकरपरसिकै अचमनकरयोसुदाम ६० स०॥ जगजीवनिजीवनसोंतहँपानिपछारिकैस्वच्छकरू लालये करआननअरुअँगौछअँगौछनिआपुओमित्रसनेहछये पहिरेयकसाथहिअंबरवेजेबड़ेअलभेषकेबेसनये पुनि पालनिहारहजारकेपानलै ब्राह्मणकेढिगठाढ़ेभये ६१ दो०॥ पानदानकरसोंलियेकहीश्याममृदुबानि हितकरि अबतुममित्रजूलीजेपानसवानि ६२॥ स०॥ लैनँदनंदनकेकरतेहरषाइजबैद्विजबीरसमानोकेसरिएलालवंगनसों तबबेशसुवासनितेतनुसानो दूरिलौंफैलगईचहुंबीरसुगंधझकोरकहांलगिगानो पावतहीजगदीशकेपानसुदाममनोरथपूरणमानो ६३॥ दो०॥ हरिसमीपद्विजदीनकोबढ़िगोयतोप्रताप करतनसमसरितनकऊ दिनकर किरणिकलाप ६४॥ प्रियाछं०॥ विप्रकोपानदै औरऊमान दैमित्रकोआदरे कान्हजूसादरे ६५॥ मालतीछं०॥ तबरुक्मिणिरानी नाहकेनेहसानी तनछबिअधिकानी काकथाकामरानी पियहिललितबीरी दैचलीघालुधीरी मुखशशिद्युतिकीरी देतिक्योंलेतगीरी ६६॥ सो०॥ गहेमित्रकीबाह चित्रसारिहरिजूगये तेहिअवसरदिननाहहर्षितकीन्होंअस्तगिरि ६७॥

इतिसुदामाचरित्रेसकलभक्तजनाह्लादकेबीरकृतेषष्ठोऽङ्कः॥ ६॥

दो० ॥ चितबिचारिअवलिनगहे सतयेंअंकसुदाम बिदामांगि घरकोगये देखेनिजपुरधाम १ ॥ संध्यावर्णन ॥ स० ॥ शोरकैजोर चहूंकितकै निजकोटरताकिबिहंगम धाये ह्वैगयेहर्षितपंकजवृन्दअनन्दबिनाचकहादरशाये आयसुमानिहियेमों मुरारिको साधुसमाजनध्यानलगाये कामीकलोलनिहौसनिलागे जबैसबिता अस्ताचलआये २ ॥ दो० ॥ रजनिभईयहजानिकै मोहनजूहरषाइबिछ्वायेपर्य्यंकद्वैचित्रसारिपरजाइ ३ ॥ चित्रसारीवर्णन ब॥क० ॥ कुंदनकीभीतिसोतौसहतिजराइजरी अनगनेललितलगाये मणिजालहैं तामेंचित्रसारीकछुऐसेकैसवारीजामेंकोन्हेंपर जापतिजूमुदितगोपालहैं चम्पकसीचपलासीचामीकरदीपकसीद्युतिसोंदिपतिलिखेतियनकेजालहैंमानहुंसुमेरुजीकीकन्दराकेअन्दरमेंधरतीसनेहभरीकोटिनगोशालहै ४ दो०॥ चिततरुणीलखिद्वारद्विजरहेठठुकिगहिगासु ह्यांन जाहुअबकैसहूयहमोहनरनिवासु ५ ॥ स० ॥ चित्रतियानकेवृन्दलखेनंदनन्दउछाहनिसोंहियबाढ़े शीशनवाइसुदामातहांनिजआननतेकछुबैननकाढ़े मोहनकेकरतेकरआपनो रोचिलियोकरिकैबलगाढ़े ह्वैरहेलाजसमाजभरेद्विजद्वारहीमेंपरिहारसेठाढ़े ६ ॥ कन्दछं० ॥ तहांबिप्रजूएखिकैचित्रकोभौन रुकेद्वारहीमेंगहेलाजसोंमौन नबोलैंकछूतौकेतीकोकरैश्याम भयेभीतिठाढ़ेलखैचित्रकीबाम ७ दो० ॥ सलजजानिद्विजकोतहांकहीत्रिलोकीनाह यहचित्रसारीरावरीकतसकुचतमनमाह ८ यदपिअनेकदशानहरिकहतसोंहकरिबैन तदपिनद्विजऊंचेकरेनिपटलजीले

नैन ६ ॥ गीतिकाछं ॥ हाथसोंद्विजहाथगहियदुनाथत बआगेभये प्रेमपूरितकमललोचनअमलमन्दिरमोंगये ह्वे तहांपर्य्यंकआछेबिछेमणियुतकनकके स्वच्छगिन्दुकहैंधरे अतिमृदुलमंजुलबनकके १० जाइतेहँपौढ़ाइमित्रहिलहत आनंदमोदहीं भक्तिबशहरिआपहीनिजभक्तपाइपलोटहीं बीरआयसुजबहिंदीन्होंबिप्रअतिसुखपाइकै दूसरेपर्य्यंक तबहरिआपपौढ़ेजाइकै ११ ओढ़िकटितेपीतपटकोपौढ़ि योनँदनन्दजू फैलिकैछबिपुंजछाजतबीरआनंदवृन्दजू चं चलातजिचंचलाईमेघमालापेखिये ॥बाड़वानललपटलप टेउकिधौंजलनिधिदेखिये १२॥दो० ॥ इकपलकापरबिप्र जूइकपैत्रिभुवननाथ पौढ़ेअतिहीहेतसोंकहतपीछलोगाथ १३ कहतकथाछबिपीछलीरजनिनजानीजात तेहिअवस रकहिबीरतबभयोआइपरभात १४ ॥ स० ॥ बाजनलागे निशानघनेघहरातमनोघनपावसवारे आयेसबैहरिपौरिन पैअतितेजभयेपुहुमीपतिभारे मागधबन्दीजेसूतघनेनँदन न्दनकेयशजूहउचारे वेदसोंगानमहानभयेजबप्राचीदिशा कहँभानुसिधारे १५ ॥ दो० ॥ भयोप्रातअबजानिकैउठे सुदामाश्याम स्नानादिकसबबिधिकरेधर्म्मकर्म्मगुणधाम १६ बीरकहांलगिबर्णियेकियोजितोइतमाम प्रेमतोबरणयो जातनहिंकोटिबखानोधाम १७ ॥ स० ॥ एकहीसाथउठे नितप्रातओबीरजूएकहीसाथअन्हातहैं खानओपानकरैंइ कसाथओसोइबेकाइकसाथहिजातहैंबैठेसप्रेमरहैंइकसाथ सुनेमसोंमंजुलपीछलीबातहैं मोहनसोंद्विजदीनमिलेनि शिबासरऐसहीभांतिबिहातहैं १८ केतिकोदूरिनतेच

लिकैंकिनकैंसियोकोऊजरूरतआवै कैयकभांतिनकेइतमा मकेकामकेआइसंदेशसुनावै भोरतेभोरलौंश्रीयदुबीरका अवसरऊप्रतिहारनपावै ठाढ़ोसुतौबहुबापुरोपौरिपैकानँ दनन्दकोजाइजनावै १६ कालसीलैकरबालकरालहिबेर किबाहनिपैजनिबाही पत्थसेसाजिसमर्थअरीनसोंलैजि नजयतिसिरीअवगाही तेनरनाहनबूझतकोऊखड़ेगहिदी नतासीमनमाहीं पौरिपैठाढ़ेगरीबपुरंदरपैचरचाहरिपैकछु नाहीं २० कौनहौआयोकितैकितजैहौनबूझतकैसऊराज समाजनि धायेफिरैंअधिकारीचहूंघासजैंबहुभांतिनकीस बसाजनि बीरजऐसोतमाशोभयोतहँद्वारकादेवपुरीशिर ताजनि दीनद्विजातिपैहवैअनुकूलसोभूलिगयेहरिजूसब काजनि२१॥दो०॥ यहिबिधिबिप्रसुदामतहँरहेदिनाद्वैतो न नितनूतननँदनन्दजूद्विजकहँआदरकीन २२ एकदिना रजनीसमयसुमनसेजआसीन तेहिअवसरद्विजजूतहांकछु बिचारचितकीन २३॥ द्विजबिचार ॥स०॥ एकदिनारजनी महँमंजुलफूलनकीजनसेजबिछाई तापरपौढ़तहीतेहिऊप रब्राह्मणकेमनमेंअसआई कीन्हीगोपालदयाकरिकैइतके वलआदरकीअधिकाई पैचरचाकबहूं कछुदेनकीदीनकेब न्धुकछूनचलाई १४ ब्राह्मणीमोपथहरतहवैहैघनेगथला वतहवैहैसुदामा होंतौपरेउँइतफूलकीसेजकिसेधौंवाहिबि हायत्रिधामा कौनदशाधौंलखौंअबजायकरैकयहिभांति धौंजीवनबामा छांड़िनआयोंमैंएकहुबारकीभौनमेंभोजन कीकछुसामा २५॥ दो०॥ मूठीद्वैकचाउरहतेघरमैंपुंजी बिसाति तेऊदयेपठायइतअबहवैहैअकुलाति २६ इत

नितप्रतिअबदेखियतु आदरहीकेवृन्द पैचरचाकुछदेन कीकरतनहींनँदनन्द २७ कौनशोचकरिकरिमरैलिखी जुहवैहैभाल बिदाकरतसोदेइँगे दौलतदीनदयाल २८ भाललिखीभरिहोतहैदेनकौनकोकौन बिदामांगिउठिजा हुंगोभोरआपनेभौन २९॥ स० ॥ ऐसेअनेकबिचारनिसों द्विजकेचितआइभईद्विचिताई ताहीसमयनभफैलिगईस बिताकेमरीचनिकीअरुणाई भोरभयोयहजानिउठेइकसा थसुदामाओश्रीयदुराई ब्राह्मणनेनँदनंदनसोंनिजमंदिर जानकीबातचलाई ३० ॥ सुदामोबाच ॥ ह्वैहैंदुखारीघनी अँखियांयहरावरेरूपनिकीललचायिनि श्रोणब्यथाभरिपू रिरहैंगे कहांबतियांसुनिहैसुखदायिनि जैबैकोचित्तनकै सहुहोतपैजीवनवृत्तिनह्वांकरिआयिनि आयसुहोयतौ जाउँघरैदिनद्वैकमेंआयकैदेखिहौंपायिनि ३१ ॥ दो० ॥ यहिबिधिजबघरजानकोमांगीबिदानिदान एवमस्तुहरिजू कह्यो द्विजजूकियोपयान ३२ द्विजकेबसनकदीमजतेईह रिपहिराय नूतनजेदीन्हेहुतेतेलीन्हेंउतराय ३३ जोरि युगुलकरकहतहरिसुनियेमित्रसुदाम भाभीसोंबहुबारकै करबोजायप्रणाम ३४ हमपैनितप्रतिचित्तमेंराखेरहबेने ह बारकइतफिरिआइबोमानिआपनोगेह ३५ ॥ ह० ॥ श्रीनँदनन्दनजूद्विजको पुरबाहिरलौंपहुंचावनआये शीश नवायप्रणामकियो हरिब्राह्मणआशिषबैनसुनाये लोचन श्यामसुदामहुकेयुगताहिसमयजलवृंदनछाये बिप्रबिदा कैचलेघरकोअरुश्रीब्रजराजअबासहिआये ३६ ॥ दो०॥ अतिमलीनअतिशिथिलगतिधरिअधीरतागात करतबिचा

रअनेकद्विजचलेपंथमेंजात ३७॥ द्विजविचार ॥ जानीती चलतेहमैं देहैंकछुघनश्याम बिदाकरतकीबेरहरिकेवलकि योप्रणाम ३८॥ सो०॥ हौंतौदईसुनाइ निजघरसंपति कीकथा तऊनश्रीयदुराइ दईसम्पदामोहिंकछु ३८ दीन बंधुकेपासआयोदीरघआशधरि ह्वैकरिचल्योंनिराशकहा कहोंगोजायघर ४०॥ स०॥ आयेहमैंसुनिधायमिले हरिबीरजुकैअतिआतुरताई भीतरभवनलेवाइगयेतरुफूले कदंबनकीछबिछाई रारुयोबड़ेहितसोंपुनिमोहिंकरीनित आदरकीअधिकाई पैनकन्हाईसोंपावनपाईजुकीन्हीबिदा ईकीबेरबिदाई ४१ आवनमेरोसुनेहीमुकुंदजूआपुउवेनहिं पायनधायो बीरमिलेअतिकैहितमोहिंसुआनँदआंसुनसों अन्हवायो पाइहमैंकछुवैसुखपायोजुराजसमाजनिहूबिस रायो पैअवगेहकीआरचलेहरिनेहकोछोरुसबैकढ़िआयो ४२दीनसनेहियेकोरनतेउलहीहीअनंदनकीगहिसैनाद्वा रकाआवतबौड़िगईअधिकानीअमानीकहूंहियमैंना सींच तिश्रीपतिप्रेमपियूषघरीहूघरीअतिफूलीसुचैना पैहरिपा सहुआशलताकहाकहियेजोभईसफलैना ४३ मोजमुकुं दकीपाईघनीघरआवतहोंइगेकंतहमारे पूजहिंगेअभिला षनिहारेकरौंहियहेलिहोंमंगलभारे योंसबसोंकहिकैपथ भोरतेहेरतहोइगीहोतलौतारे हायलजायकैजायदुरैगी तियालखिवेषयोंदीनतावारे ४४ ब्राह्मणीयोंपथहेरतह्वै हैंकिकंतघनेगथसोंयुतऐहैं दूरितेमोहिंलखेपुरबासीहूआ गमजाइकैताहिसुनैहैं सोतौसुनेजबआगेकाऐहैंतबैमुख कौनदशादरशैहैं रैहैंकहांअरुजैहैंकहांअबआजुइजाइक

हाघरखेहैं ४५ होतदिनाककोतंडुलवैलगतीजबआइक्षु
धाअतिभारी लीवेतिन्हैंनँदनन्दनजूसबचातुरचाकीपुजी
सोपसारी लैकरतेऊसबानिलियेहरिजानतहैंघररीतिह
मारी मानकैमोहनजूवैजहानमेंमोहिंसुप्रीतिकरीठगहारी
४६ नीरदपांतिसेकांतिसेमंजुलहोतेजोपैसंगबारनमाते
पक्षिनकेप्रतिपक्षसेकैइकतातेतुरंगमतेथहरातेगेहकेजैबो
हतोतबहींअबजाइरहैंगेकहूंतकिनाते दीनदयालगोपाल
केपासतेजातेघरैजोनिहालह्वैजाते ४७ जानीहुतीकछु
देहेंघनेहरि जोइतनोइनआदरकीनोपैनिरधारकेदेख्यो
हियेतोकरैकोउऐसीनलोकनतीनो दीबेकीऔरकहाचरचा
अबअंशुकएकजोदीन्होनबीनो सोऊनिकेतकीओरचल्यो
उतराइकैमोहनआपुहिलीनो ४७ दीनकेबंधुमुकुन्दमनो
हरजोयहवेदपुराणनगानो आवतआनंदवृन्दनिसानँदनं
दनबोलयहैपरमानो पैचलतेकछुबैनदयेहरि भूलिगयेसो
कहानिजबानोमोहिसोमोहनजू जगमेंअबसांचोकियोगुरु
ईडअहानो ४६ मेरेसमानजहाननआनकुबेरकीकीमतका
अहीनी बापुरोकौनकहावतशेषसुरेशकीसाहिबीनाचित
बीनी गर्बप्रहारकपासयोंगर्बगह्योहमयातेगुसाहरिकीनी
हौंअहमेहमेंह्वैगयोंअंध सोंदौलतदीनकेबंधुनदीनी५०
हौंअतिहीकोगरीबहुतोअरु आपगरीबनेवाजकहावत कै
यकदीनपैहोइदयालदयाहितके उरमेंउपजावत पैहमको
यहरूपदिखावत सेनसयानकछूचितआवत नाउहसावन
आवबन्योनजहानमेंकैहरिमोहिंहँसावत५१ चौदहलोक
चराचरजीवनयाचिकैजाहिअयाचकहोईदानिदयालसुशी

लनियानलख्योजगजासममौरनकोई तेहरिप्रीतिकभाय
भरेकछुदीननमोहिं कहौंढिगसोई भाइपआपनीराखिबे
कारणदीनकेबन्धुजुदीनताखोई ५२ आशबड़ीयोंहिये
धरिआयहुं लाजनितेहियमें अतुराई पासमुकुन्दकेजा
नीहुतीनिजसोरहौंसिद्धिनवोंनिधिपाई पैकछुदेनकीबात
कहीनचलेनिठुराइगहीयदुराई कौनबड़ाईसुयामहँपाइ
करीहमहूं सोंजुपैचतुराई ५३ दीनसोंजौनकरैहरिबन्धुता
तौअबदीनकेबन्धुकहांको दारदीद्वारकाआयोहौएकगयो
फिरिरीतोभयोननिशांको जोपरिहासमुकुन्दकोमोते जहा
नमेंबाढ़िगयोअतिबांको हावहनन्दकुमारसोंयारकोमोहि
तेलागनचाहतटांको ५४ द्वारकाआवनरीमति मोहिंदई
सोबनीनकछूकरतारसों भूलिगयेतबहूनगयेफिरिबादुम
योजबहींप्रतिहारसों दीनकबन्धुकोदोषनहोतोजुपैहमरो
सियेजातबहारसोंजाइयहैसबसों कहतोभईभेंटनहींवहि
श्रीपतियारसों ५५ शोचियोंश्रीपतिआदरहूकीबड़ाईजुपै
घरजाइनपैहैं मानिहैंझूठियकैपुरलोगजोसोहअनेकदशां
निकेकेहैं हाइहमेंसबदेखतहीअबआपुसमेंतकिसैनचलैहैं
वैसीकदीमफटीदुपटीलखिकैकटिमेंलपटीहंसिदैहैं ५६ बा
रनकैयोहजारनदेखबंधेहरिपौरिपगारनिमाते तातेतुरंगम
तेऊलखेअबगौनयेपौनवतेअधिकाते औरकहालौंबिभवक
हियेजगजाहिरश्रीपतिनामजहांते मोहनमोहिंजोदेतेकछू
अबतौइकबारहिछाजिनजाते ५७बारनतेइकओररहौंजेइ
बारिदसोंबरसैमदमाते तेवैतुरीनकोकामजकूरखुरीनकैजे
नभमेंफहराते ऐसेऊदीनकेबंधुनदीन्हेंकछूहमकोनिजबंधु

केनातेछोंड़िप्रयासनिवासमेंजोईसोपावकबैठिनिरंतरस्वा
ते ५८ पारसपायेतेहोतुकहाअरुजानैकहाकलपद्रुमपाये
होतुहैकामदसेयेकहाकहाहोतुहैकैयोउपायबनाये संपति
भाललिखीभरिहोतुयोंजानिपरीहरिपासहिआये दीनके
बंधुहुकेढिगतेहमजातमनोगजसोंअन्हवाये५९ आशकैजो
रतनाकरबूड़तएकतोरीतईबाहिरआवै एकबड़ेबड़ेमोलनि
कैतितहीतेघनेमुकताफललावै देखतहूबिधिकीगतिऐसी
तऊनरलोभतेनाहकधावै जाइनकाहेचलोक्षितिछोरलौं
दौलतिभाग्यलिखीभरिपावै६० चारिहुओरनिजेक्षितिको
रनिआनँदअंबुसदाबरसाहीं वापितड़ागनदीनदकूपभरे
जलतेजिनतेहरषाहीं चातकप्यासनजातिजुतोकछुदूषण
ऐसेबलाहकगाहीं दीनकेबंधुकोदोषकहाजुपैसंपतिमेरेही
भालमेंनाहीं ६० ॥दो०॥ ऐसेबिबिधिबिचारसोंफिरियहु
आयोज्ञान भलीभईजोनादईदौलतिश्रीभगवान६२ अच
लचंचलाहोतिहैनेकुसुध्यावतजाहि सोदौलतिमेंरमितहूं
भूलतहैनरताहि ६३ जिनसुमिरणकीजतसदासुखपावैते
जोइजानतहोंयहिहेतुहरिदईनदौलतिकोइ ६४ ॥ स० ॥
सौतेहजारहजारतेलाखओलाखतेकोटिनहूअभिलाषै नेह
भरेसबहीसोंजहानमें स्वारथहीलगिबैननभाषै सोवतहू
सपनेहूसमयकबहूंहरिप्रेमपियूषनचाखै मोहनकेपदप
कजनेकुकैश्रीमदबारेनचित्तमेंराखै ६५ प्राचीप्रतीचीउदी
चीओदक्षिणआशनिआशलगेनितधावत भोरतेकैयोउपा
यकरैअरुरातिबिचारघनेउपजावत दौलतिख्यालपरेभर
मैनरऐसहीहालनिकालबितावत मोहतेअन्तहुलौंनअन

तकेरच्चकऊकबहूंगुणगावत ६६ ॥ दो० ॥ करैबिचार अनेकंद्विज जब ऐसेअकुलाइ शुभसूचकताहीसमयशकुनजनायेआइ ६७ देखिशकुनशुभचित्तमें द्विजयहकियो बिचार सकलमनोरथकहतयेकहतकहायहिबार ६८ज्यों घरतेआयोहुतो त्योहींअबघरजात मोहिंजनावतशकुनये बड़ेलाभकीबात ६९ एकबातआवतमनै सकललाभशिरताज इनआंखिनअनिमेषहवै लख्योंरूपब्रजराज ७० अजरअमरअव्यक्तजो व्यक्तअनादिअनन्त सोपरगटइन दृगनसोंमैदेख्योंभगवन्त ७१ लाभकहायातेअपरसमुझिदेखुमनमूढ़ ध्यानगम्यजगदीशकोपायोंदरशनगूढ़७२ अपरलाभतृणसोंसकलरंचितनिजकरलेखि भयोंसुखीअबजगतमें हरिपदपंकजदेखि ७३ ईशमुनीशअजादिकोमनपहुंचतजहँनाहिं दृगगोचरबहुरूपकरिचलेभवनहम जाहिं ७४ दरशमनोहरश्यामको पायोंपरमअनूप मोहिंछोड़िअबकौनको होहिंशकुनयेरूप ७५ ॥ सो० ॥ ऐसे करतबिचार निजपुरपहुंचेबिप्रजू देखेजाइअगार कनक हीरमणिगणनको ७६ ॥

इतिश्रीसुदामाचरित्रेबीरकबिबिरचितेबिप्रनिजनगरप्रवेशोनामसप्तमोऽङ्कः ॥ ७ ॥

दो० ॥ निजनगरीनिजगजतुरँग लखतआठयेंअंकपहुंचैअपनीपौरिपैपेखतबिभवसशंक १ ॥ सो० ॥ चहूं ओरआराम बापीकूपतड़ागबहु देख्योजाइसुदाम निजपुरनिकरसुहावनो २यकसरद्विजतहाँजाइठाढ़ेभयेघरीक

तहँ आनँदउपज्योआइ देखिरुचिरछबिस्वच्छतहँ ३ पद्धरीछंद॥ मंजुबागओतड़ाग बापिकानिसोनुराग भृङ्ग पुंजकीगुंजार ठौरठौरकीबहार कोकलोकशोकमोक प्रेमवन्तथोकथोक देखिदेखिकैद्विजाति नैनचैनसोंअघाति ४ चौ० ॥ सोहतबागचहूंकितभारे हियआनँदउपजावनहारे लतालालितलपटींतरुकैसे पियहिंसकामकामिनीजैसे कुसुमितसरसोहतींचमेली मनोंकामकीरतिकीचेली जाति जातिबेलींवरफूलीं मन्मथऋद्धिसिद्धिसीतूलींगुंजतभ्रमर मत्तमधुकरगन मनहुं मनोजभूपबन्दीजन सानुरागको किलकलटेरैं मनसिजआनिमनहुंगजफेरैं कूजतपिकअति मधुरसुखारे मानिनमानमिटावनहारे भांतिभांतिखगगण इमिगावहिं रतिपतिजयजनुजगतसुनावहिं ५ ॥ शंखमारीछंद ॥ धरेकान्तिकोलालकोतालसोहै बिलोकेत्रिलोकी तिन्हैंकौनमोहै भरोनीरकेपूरकासारकैसे सुधर्मानकेभौन सम्पत्तिजैसे लसैस्वच्छसोबारिशोभानिभारी हृदयसाधुकैसोमहामोदकारी चहूंओरतेजोरआवैंतरंगैं करैंसानुरागीबिरागीनुअंगैं घिरेनौलआभानिसोंकौलभारे सुरस्त्रीनकेनयनसोंऐनतारे भ्रमैंगुंजरैंकंजपैभौंरभरैं मनौंमैनकेयुद्धबाजीनफेरैं चलैपौनकामोदआमोदबासी धरेकामकेदूतहीकीप्रभासी लसैपद्मिनीपत्रपैखंजताली दियेचुंचबैठीप्रियाप्रेमवाली लियेसंगहंसीनकोहंसडोलैं कियेनयनरातेभरेनेहबोलैं गहेमौनकोदम्पतीचक्रबैठे मनौब्रह्मआनन्दमेंसन्तपैठेकहूंसारसालीबकालीबिलोकी बिरागीनकीपांतिमानौबिशोकी घनेजातिपक्षीनकेवृन्दभासैं मृणाली

लतालैनिजस्त्रीहुलासैं ६ ॥ मौक्तिकदामछंद ॥ तहांतियमं
जुधरेछबिभीर सबैरतिकेअतिमंजुशरीर भरींपियकेअनु-
रागगरूर मरयोतनयौबनपानिपरूर लचैंअतिलंकउरो
जनिभार सबैबपुषोड़शसाजिशिंगार बड़ेदृगचञ्चलचा
हिसुछन्द लगैंरतिनायकशायकमन्द लगीसितपीतम
संगसचैन करीसुखरीकरिबिह्वलमैन पगींरतिरंगरँगीं
अनुराग लगीछबिसोंकहिदेनसुहाग खरींअतिआलसवंत
जम्हाइ मरोरिभुजानिघनीअँगिराइ भयेअरुणौजगिनयन
अमोल झपैंपलकैलगिजाहिंअडोल भईंशिथिलैकरिकै
रतिजंग क्षयीपरितापअनंगउमंग बड़ीहितझूमहिं घूमहिं
बाल चढ़ीजनुमादकतातकाल पररूपरआपुसमेंमुस
काइ करैंपरिहासकछूअनखाइ हुलासवतीइमिबोलहिं
बैन मिठासवतीसुसुधासमहैन लसैंअँगअंगनिकांतिनवीन
सकैंकरिकैमुखसैंधससीन धरेबहुभांतिनकीबहुभीर भरैं
सरतीरतिपावननीर ७ ॥ मानिकछंद ॥ वापिकाअ-
नूपकूप ठौरठौररूपरूप देखिऔरऊबहार बिप्रजूकरैंबि-
चार ८ ॥ द्विजविचार ॥ सोरठा ॥ वैसीपैछबिभीर वापी
कूपतड़ागसब जहांमित्रयदुबीर वहसोयहद्वारावती ६ ॥
क० ॥ बाजतवैसेनिशानघने चहुंओरनवैसेहीआनँदछाये
वैसेहीदानबिधानहैंहोतऔवैसेहिवेदनगानगनाये हीरन
केअतिउन्नतमेरुलैवैसेचहूंकितभौनसुहाये कैसीभईअब
मारगतेधौंकहाहमभूलिकैद्वारकैआये १० नाकेकहांपथ
वारेमहानिजुकैअबभूलिगयेहैंठिकाने कैधौंकियोकछुमो
हनमंत्रजूमोहनमोहदशाअधिकाने जानिपरीनभईमति

कैसीहुतेहमहूंपथभेदसयाने भोरतेभौनकीओरचल्यौ फिरिआइकैद्वारकाहीठहराने ११ ॥ दो० ॥ चलिकैदेख्यौं हरिचरणनहिंनहिंअबनहिंजाउं सुजनमोहिकहिहैंसबै निपटलालचीनाउं १२ आजुजाययहद्वारकाकाहूकीचौ पारि निशिबसिभोरहिगेहकोगहिहौंपंथबिचारि १३ स० ॥ पैठहराइकैठीकहियेद्विजचाह्योप्रवेशकियोपुर माहीं दीठिपसारिलखैचहुंओरसे सागरकेनतरंगदेखा हीं ठाढ़ेतहींबरबुद्धिसोबिप्र बिचारनिकीअवलीअवमाहीं कीन्ह्योनिदानयहैनिरधारपुरीयहद्वारावतीवहनाहीं १४ सो० ॥ वैसइसवैप्रसाद अरुसबशोभावैसई पैउछलत जहँजाद लखियतसोनहिं नीरनिधि १५ केवलसाजिब-रीशऔरपरमसुखमावहै अबजान्योजगदीश कौनपुरीकी नृपतिइत १६ ॥ स० ॥ कौनकोऐसोप्रतापजगैजगकौन बड़ेयशकोअभिलाषी कौनकीऐसीउदारहैसम्पतिजाकी दशाकछुजातनभाषी कीजपसींतपसोंअपनेपरकीन्होंप्र-सन्नत्रिलोककोसाखी जोअलकाहूतेरम्यपुरीवहदूसरी द्वारकासीरचिराखी १७ ॥ सो० ॥ द्विजदेख्योद्रुमएक निजकरतेपालितजबैतबहींकियोबिबेक सुधिआईसब भौनकी १८ ॥ द्विजाविचार ॥ दो० ॥ वहैठाउंयहगाउंमैं हतोहमारोभौन कीजानैकेहिदेशतेभूपतिआयोकौन १९ तोरिमड़ैयानृपतिइहिकीन्होंसौधअनूप ताहीतेनहिंदे खियतुइतब्राह्मणिकोरूप २० ॥ स० ॥ कौनसेदेशतेमे रहीठौरमेंआयोहैकौननरेशहैभारी कंचनहीरजराइजरी जेंरचीरुचिसोंनगरीरुचिवारीहैअबिबेकीजुदीनहुकीयह

नाहकतोरिकैझोपरीडारी जानिपरैनबिषादभरी वहब्रा-
ह्मणीयोंकेहिओरसिधारी २१ ॥ दो० ॥ जातेमोहिंगो-
पालपै भईभवनमेंलूटि ब्राह्मणिधौंकितकोगई गईझोप-
ड़ीटूटि २२ बारकतौअबढूंढ़िहौं घरघरयहिपुरपैठि ले-
हौंमरकिगोपालपै ब्राह्मणिधरनेबैठि २३ ॥ सो० ॥
यहीठीकद्विजकीन निजपुरकियोप्रबेशद्विज चिन्ताहीचि
तलीनकितब्राह्मणियहरटलगी २४॥ मौक्तिकदामकं०॥
कियोद्विजनूपुरमेंपरवेश लखीसुखमातहँजाइसुदेश चहूं
कितमंगलबन्दनवार चहूंकितशब्दसुनैंजयकार चहूं
कितब्राह्मणिरूपनहोत चहूं कितमोहनभक्तिउदोत चहूं
कितवेदअरम्भतविप्र करैंनिजशुद्धकलेवरछिप्र चहूंकित
धर्म्मसुकर्म्मपवित्र चहूं कितगावतविष्णुचरित्र चहूंकित
दानद्विजातिनदेहिं बड़ेयशकोसुखमौजनिलेहिं चलैजहँ
नीतिभईसबरीति चहैजहँकेवलश्रीपतिप्रीति मिलैनकहूं
तमकोजहँलेश जहांसुनियेश्रुतिहूंनकलेश बियोगजहां
चकईचकहानि बिवादसोपण्डितकोचरचानि जहांनिशि
पंकजद्योसकमोदरहै चितनैजुकछूतजिमोद लसैरुचिसो
जहंभवनअमोलभईकमलाजहंआइअडोल लखेकहुंउन्नत
गेहबिशाल लगीमणिनीलहरीअरुलाल कहूंअवलोकत
हीरनिकेत तहांद्विजनयननकोफललेत कहूंकलधौंतउ-
तंगअटा निरुकैनितहूरबिकोरथआनि कहूंमणिमन्दिर
मंजुलपांति छईजहंजोरनईबरकांति घनेद्युतिवन्तबनेजु
अगार कहैकबिकोबहुरूपअपार तहांनरनारिसुयोंहर-
षाहिंमनोसुरकेपुरकेसबआहिंसबैजनुरूपमनोजबिचारि

सबैतियहैंरतिकीअनुहारि मुकुंदकरीजुखरीइमिमौजल
खीनगरीद्विजआनंदफौज सबैनिजपुण्यथलीसमचाहि
चलेद्विजजातसराहतताहि ॥२५ क० ॥ कंचनअवनिचा
रौंओरजोरजेवदारपुण्यकेपहारनरनारिसरसतुहै अजब
जलूसकेअगारहैं अपारछबिउन्नतसुमेरजूकेपुण्यसरसतुहै
खासेखासेरूपकेतमासेसबिलासहोत लखिमघवासेसुर-
लोकतरसतुहै बीरमहाराजश्रीमुकुन्दजूकीमौजनसोंठौर
ठौरआनन्दकदम्बदरशतुहै २६ कंचनकगरुनाहांचारु
जटाजूटमाथेचंद्रमणिनाहिंशशिखण्डकांतिअगरी लाल
मणिमालनाहींभालज्वाललोचनहै नीलमणिनाहींकाल
कूटछबिअगरी जेवदारहीरनकीपांतिकीजमातिनाहींभ-
समकपूरसीलगायेदेहसगरी देखिवैबिलासहरिमौजहै
खुसालीआयोभौंरनकेव्याजकैकपालीद्विजनगरी २७
कुमुदकलानिधिकपूरकरकानिकुन्द कासकैबिलासहास
शरदजुन्हाईहै मुकुतारजतहंसगंगहरिभीरनकीबीरजैत
बारऐसीकीरतिसोछाईहै सगरीनकीशोभाद्विजनगरीन
भाषीअबअनुपमरूपज्योतिजगतसोहाईहै मानहुंकुबेरजू
सोंमानकरिऊपरतेअलकाउतरिआपुभूपरकोआईहै २८
शहरसराहवालेतुलैनफणिन्दनकेनगरनिरन्दनकेकैसेस-
होतुहै गुंजैपरहूतकीपुरीकीगुमराईअरुमौजैअलकाकीम-
गरूरीकेउदोतुहैं भूषणतिलोकीकोबिलोकिद्विजनगरीसु
अगरीसबीसोभरेसुयशकेगोतुहै पूरेबहुधातेइन्दिराकेपूर
ऐसेजैसेबारिधकेबीचसदाबारिहीकोसोतुहै २९ ॥ दोधक
छं० ॥ कांतिअमोललखीद्विजजैसीहैनबिरंचिरचीकहुंऐसी

नबनसुतौछबिछोंड़तनाहीं नीठिनबिप्रचलेतहँजाहीं श्री-
पतिमौजनके अतिभारे दिग्गजसेबिरदैतदतारे दानि
प्रबाहनिवृन्दसमोये जायगयंदनके गथजोये ३० ॥
दो० ॥ गिरिसेसजलपयोदसेगहेमोदकेतुन्द देखिद्विरद्
द्विजजातनिजदीन्होंमित्रमुकुंद ३१ ॥ गजबर्णन ॥ स० ॥
कारेपयोदनिकीद्युतिजीतैंबलीमनोमन्दरतेमथिकाढ़े भारे
महाबिकरारेदँतारे पनारिनसोंजिनकेमदबाढ़े तोरैंतरो
वरनंदनकेझकझोरैंसुमेरुकेशृंगनगाढ़े श्रीजगदीशकृपाद्वि
जद्वारनऐसेहजारनवारनठाढ़े ३२ ॥ दण्डक छं० ॥ तमके
पहारसमठाढ़ेअघऊरधलौंप्रबलउदंड शुण्डादंडफटकतहैं
गरमगरूरेअतिशूरेमदपूरेदिग दंतिनकेहीमेंनिशिद्योसख
टकतहैं मन्दाकिनिकौलतजि तिनकेकपोलनिमेंलगिलगि
भूषणसेसौरलटकतहैं ३३ भारेबिकरारेकारेमेघसमजोर
सारेदिग्गजदन्तारेबलवारेऊडरतहैं करिकैकलोलैंबोलैंडो
लैंकोलभूमियुतझूमतझुकतमदधारनिढरतहैं तेजवन्तऐसे
भगवंतगजदीन्हेंजैसेप्रचण्डमार्तण्डकेप्रतापसोंअरतहैं या
हीतेबिकटशुण्डादण्डनसोंभरिभरि बारबारशूरकरहारसों
भरतहैं ३४ जकरेजंजीरनसोंपांवझहरावैंहठिमानोडरपा
वैंबलवंतनपतालके ऊगतसेआवैंपरतापउरअंतरतेताहीको
कहतजनसौनबिन्दभालके सोमदिगराजैंलाजैंदिग्गजदि
शानहूंकेजुरिजुरिगाजैंजनुमेघप्रलयकालके देतसेदरेरसह
साननकोझूमिझूमिऐसेगजदेखेद्विजदीन्हेंनंदलालके ३५
सातोंपारावारनिकेवारपारहूंलौंसदा जिनकीगराजैंनिशि
द्योससुनियतुहैं ऐसेगजराजदीन्हेंश्यामजूसुदामैंजेअनूप

दिगदंतिनकेगुणगुनियतुहैं प्रबलउठायशुण्डपटकैंधरापै
अवताकीबारबारममनमाहिंलुनियतुहैंशेषकेसहसशीशजब
रसिलायेमनोंबारबारअवनिध्रुवासीधुनियतुहैं ३६ ॥ स० ॥
सेरकचूनकेजोरबेकाज उपायनसोंजेहिकीमतिथाकी जा-
कीपुशाकफटीडुपटीलौं कहाकहियेछबिदीनदशाकी ता-
परपूरबपुण्यप्रतापसोंदीनकेबंधुजुऐसीकृपाकी जोअपने
हीगयन्दनकी हथिसार सुदामामरू करुनीकी ३७ ॥
दो० ॥ ज्यों गयन्दशालालखी त्योंहयशालाचाहि बैठि
गयेअधबीचद्विज निपटकराहिकराहि ३८ डगमरिजात
चलयोनहीं पिंडुरीआईऐंठि गजकेशालाबीचही गयेबिप्र
जूबैठि ३९ ॥ छं० ॥ नीठिनीठिछोड़ेउसुठानको पाइ
खाइपाथोअरामको मन्दमन्दनीकीगलीलई कांतिपांति
पेखीनईनई ४० ॥ दो० ॥ छैराजीबाजीनकी समीबक-
सीश्याम अवलोकतेबिप्रजू चलेजातनिजधाम ४१
बाजीवर्णन ॥ रोलाछं० ॥ सुन्दरतरलतुरंगअंगअंगनिअति
नीकेछहरतछबिकेपुंजलगतरबिरथहयफीकेदीन्हेंसहित
मुकुन्दमित्रजयद्विजहिमौजके कौनगौनमेंपवनसकै तिन
कीजुसौजकेअन्तरिक्षथहरातगातपेखतसुहातअतिकरहिं
चपलताहीनमीनकुलटाकलक्षछति इन्द्रनरीन्द्रफणीन्द्र
मौनएकौनहिंऐसे देखेनिजनिरसीमजाइबाजीद्विजजैसे
४२ ॥ क० ॥ पायेक्षीरसमुद्रबिलोयेपुरुहूतबाजीतछूंकि
अकूतमजबूत महिमानके अतुलप्रभानकेनभानकेतुरंगतु
लैंअकहकहानकेनऐसेकहुंआनके जातबिपपक्षबियपक्षन
सुपरणजहँएतोबिनपक्षनतहँसाइतिमहजानके यातेऔर

पक्षिनकेपातशाहिखगपति खगपतिकेपातशाहबाहेरनि
दानके ४३ घूंघुटसोंघालिघालिमुखहीतेमनोढालिबमतसे
जाइपाइभूमिनाकुआवहीं बगसेगुपालऐसेबाजीबेगवार
जेवै पवनमनगौनतेसवायेबढ़ियावहीं कहियेकहालोंऔर
तेजकीबड़ाईअधऊरधकोनेकजोपैगैलकरिपावहीं नितही
तमाशोलोकलोकनिकोदेखिदेखि जिनतेसुदामाक्षणहीमें
घरआवहीं ४४ देखतकसाकेकसिअतिथहरातजातबा
तसेउड़ातफहरातथिरतनहैं गरबकेकोटछीनेसरबकुरंग
निकेकीन्हेंनिजघटमेंअगोटमनोंमनहैं ऐसेहरिदीन्हेंहय
शूरताकेपारावारछबिकेपहारऔअपारगुणगनहैं चक्रवै
चलाकीकसिरोमनिहैंहिम्मतिके केतुमजबूतीकेसपूतीके
सदनहैं ४५ ॥ चंचलाछं० ॥ तेजपुंजबाजिवृन्दठौरठौर
पेखिये मोदसोहियेभरैसुजन्मबिप्रलेखिये योंबिचारिकै
कहैंबिशेषकांतिपांतिचाहि कौनपुंजतेखरीहरीकरीकृपासु
काहि ४६ ॥ सरभछं० ॥ लिखततुरँगगतिअतिद्युतिभर
की कसुकरिगइलगह्योद्विजघरकी सुनतरुचिरधुनिनि-
गमअरथकी चलिनिजसदनपवँरिदगपथकी ४७ ॥सो०॥
अंचलरतननिकेत साचेरुचिरबिरंचिजू तिनकेमहलतितेक
देखेद्विजवरआपने ४८ ॥ द्विजपौरिबर्णन ॥ छप्पै ॥ नौबति
बजतनिशानदानब्राह्मणसबपावहिं मागधबन्दीसूतमुदि
तअतिहरियशगावहिं बेदपढ़हिंबरबिप्रसकलफललहि
लहिबांछित असुप्रतिहारअनेकललितसुरपतिसमल
च्छित यहिभांतिनरतनप्रसिद्धकी पवँरिनिकटनहिंद्विज
गयो सलजसकंपितसोबिभवदूरिहितेपेखतभयो ४९

दो० ॥ कनकअटाउतद्विजतिया पियआवनपथओर हे रतइकटकहेतसों ज्योंनिशिकरहिचकोर ५० दूरिहिते पियपेखिकै द्विजतियभरीहुलास कनकअटातेउतरिकै चलीप्राणपतिपास ५१ ॥ द्विजतियवर्णन ॥ द्विजतियदीप कज्योतिकै अम्बुजदामसुदेश किधौंगगनतेऊतरीकनक पूतरीबेश ५२ श्रीनँदनंदनकीकृपा द्विजतियवैविपरीति जरापलटिअंगनलई तरुणाईकीरीति ५३ ॥ स० ॥तार काचन्द्रकलासमतूलसिरीसकेफूलहुतेअभिरामिनि देह कीदीपतिहीसोंदबावत कंचनचम्पकदामऔदामिनि श्री नँदनन्दकृपातेभईनिजरूपहितेरतिकीसिरनामिनि पन्नग गामिनिकी द्युतिजीति लसैछबिधाम सुदामकीकामिनि ५४ सोलहौंसाजेशृंगारनिगाजै मनोधरणीपैतिलोत्तमा आई पंकजपाणिमृणालसेबांहसुधानिधिकीमुखमंससमता ई कुंदनवेलीसमाननवेलीउरोजसरोजनकीछबिछाई नय ननमीनकीशोभालई लईबैननलोकतिहूंकी मिठाई ५५ बारसिवारनिधूमकीधारनिदीपतिदेहकीदीपतिदीपै अंग नसोंसबछीनिलईनबचीसुखमाहैरतीकरतीपै पंकजजाति जमावतसीथरिमंजुलपाइदुवोधरणीपै हेरितिरीछेकटाक्ष निहीसोंसुधासीगईबर्षावतिपोपै५६ ॥ चंचरीछं० ॥ पाइ मालसरोजकांतिबिसातिपाइनिकीचली देतहीडगहोति लालिगुलालसीनगभूथली दौरिऊरधलोंगईद्युतिपुंजकै लिछवानिकै ह्वैगयेसबमांगकेमुकुताप्रभाकरमानिकै ५७ भोरभानुमयूषमंडलमध्यचन्द्रकलादुरी जातिजावकरंग केघनसोंघिरीजनुबीजुरी नाहकेअनुरागमन्दिरमाहँदीप

तिकैदिया सांझमेंअतिआवकीमहताबकैद्विजकीतिया ५८
स्वच्छदीपतिभौनसेनखकौनपूजतकेसमै द्योसहूनिशिइ
न्दुमानहुंतारकानिमिल्योरमै घूंटकोमलकोलमूलगुलाब
फूलकिधौंलगे रूपकोधरिसब्बकैनिजगठभर्योबनकेजगे
५९ हंसशावककेजुशब्दितचारुहंसकराजई जीतितीनिहुं
लोकमानहुंमैननौबतिबाजई चीकनीमृदुपींडुरीजुगजेवजा
हिनईजगी केरखम्भकरीभुजानिखरीसबीतनसीलगी
६० पीनबर्तुलकैनितम्बअनंगस्यन्दनअंगके कैछटीकटि
तेसबैगुरुतारहीशुभसंगके ह्वैगयोकटिछीनलंकसशून्य
सोंविधिजूदयो ऊनसीमनमेंगहेगृहकेहरीबनमेंकियो ६१
निम्ननाभिगँभीरहैबसुधासुधाबनकूपके कामकेअभिषेक
कीसरशीशरूपअनूपके रोमराजिबिराजईअलिराजनाहिं
नतूलही मेखलामणिनीलकीजनुज्योतिऊरधऊलही ६२
दिव्यकंचनलीकसीअतिछाजईत्रिबलीमली हैसिढ़ीजनु
कीनयौबनमीनकेतुनकीगली गुच्छश्रीफलकुम्भिकुम्भनि
कुम्भिकोकनसोहँसैं निन्दिअंशुसुमेरुकेअमनैकऐंड़भरेल
सैं ६३ हैंमहामगरूरमन्मथभूपसैनहसैंलसैं अोजवारउ
रोजहैमृगयामनोजकरैंबसैं रंगईगुरुआंगुरीरमणीयताइ
मिहैंछई नूतनूतफरोहकीकमनीयतारदकैदई ६४ पाणि
पल्लवतेभयेसुखमासमूहनिछोरत्यों मौंरपंकजकोषतेद्यु
तिडोरछोरतजोरज्यों श्यामचारुचुनीनसोकरकान्तिअद्भु
तबैरही कौलमूलअलोलहवैभ्रमरावलीजनुछैरही ६५
नौलबारलतानकेनिजजानिऐनभुजानिको नीलजाइमृ
णालबूड़िरहैतजैमहिमानिको अम्बुसेशुभकण्ठमेंबसिबा

निबीननवीनकी बैनकीअभिमानताकलहंसवंशनिहीन
की ६६ कैसुठिढ़िअनिन्दअंजनबिन्दुबेषसबीलको पद्म
रागमनीमञ्जारबिहारकैमणिनीलको हैप्रदीपप्रभादुरयो
तममानिआनँदइन्दुको मत्तहवैसचुपाइसेावतकंजकोषम
लिंदको ६७ मन्दहासहुलासकैपरगासस्वच्छसबीनको
रंजिचित्तअलोलयोंकरिदेतलोलकबीनको हहतेबसजि
तिलियेाछबिक्षीणबिद्रुमरूपहै हवैगयेाबिनकाजदीनम
लीनविन्दुमधूपहै ६८ शुभ्रशोभसमाजसीअभ्राजईदश
नावली कुन्दकोरककोहँसेद्युतिमन्दकैमुकुतावली मांजि
मांजिमनेाजरास्वतरोजदेतसिपारसी हैकपोलनिबामके
निजुकामकीयुगआरसी ६९ कैसुनीतिपियूषभाजनभौन
केरसभूपके कान्तिनिर्झरकैदुवोश्रुतिकैसुनयनिआनूपके
करनपरमयूपमंडितज्योतिआननमंगनों चित्रभानुमरीचि
कानिपियूषभानुप्रभामनों ७० मंजुबेसरिभावकेबरउत्तरा
धरछ्वैरहै कैप्रनालसुमालिकापरऔरद्वैकणच्वैरहै सांझ
मांझसनन्दद्वैवपुकैरहेशुभशुक्रवै कैसरस्वतितीरमेंतपसी
करैंतपउग्रद्वै ७१ नाशिकाकमनीयकैसीनालिकाभवती
रकी हारिजाहिनिहारिकैनिजकीरदूछबिकोरकी फूलत
लनिनाहिंनैतिलकोतिलीकसरंगऊ रूपराशिअजीतजी
ततिसीयनंगनिषंगऊ ७२ गेहपीतमनेहकहगश्रवणमूल
निलेतहै चाहियारुचलांकअंगकरंगऊमददेतहै कंजखंज
नगर्भगंजनऐंड़यौवनकीभरैं युक्तअंजनचित्तरंजनमीनही
नसबीकरैं ७३ हैहुलासनिधानसेरससरासजानशरीरसे
साहश्रीरतिनाहके बिरदेतबीरअमीरसे भूरिभाइनकेभ

ड़ानिजकन्तकेचितचोरसे प्राणनाथप्रसन्नआनन इन्दुओ
रचकोरसे ७४ कामकेछबिधामज्योंअभिरामलोचनबाम
केतौनिकामनिकामनिन्दितपंचशायककामके मंजुतीक्षण
युगमईक्षणकैकटाक्षप्रभावछ़ैकेनिसातसरावलीनलजात
ईदनितेकहै७५ भ्रूलताबिषबेषकैतरुरेखअंजननीरकी कै
उदोकारिराजईसुखमाशृंगारशरीरकी कैबसीकरतंत्रउद्दि
तकैमनोगुणहैभयो शंकपूरणचंद्रकीमुखअंककै बिधनेंदयो
७६ कैप्रभातपयोजमेंअलिआलिहैअनुरागिनी कैकलानि
धिमध्यबालपियूषपीवकिहंनागिनी भंगियुक्तअभंगशासन
कैअनंगशरासनै बीरबीरमुहीमयौबनकैकृपापरभासनै
७७अर्द्धचंद्रमझारक्रीड़तकैकुमारदिनेशको हेमनीरजगर्भ
अब्भकभौरकैअलभेषको मैनकोमदऐनजाहिरहैसुहाग
समादिरयो स्वर्णयंत्रबिरंचिसोहनमंत्रमोहनकै लिख्यो
७८ कबिशोकशिंगारलोकबिलोकियेरसकोधनी पुष्परा
जसुपट्टिकामधिमंजुमरकतकैमनी कैकुदृष्टिबचाउसोकर्त्ता
करयोद्युतिजालमें बिंदुराजतश्यामकेसठिभागपूरितभा
लमें ७९ ठीकहीरसठीकसोहतबिंदुबंदनमंगही फोरिकै
तमकोउयेशशिसूरकेइकसंगहीं मांगमेंदुरबिंदुसेंदुरजातु
नाहिंरहैकह्यो सिंहिकासुतनेगिल्योकछुशेषसूरजसोरह्यो
८० चीकनेकचबीचमोतिनमांगसेंदुरकीसबी पाइउत्तम
भूमितीरथराजकीद्युतिसीफबी शीशफूलअतूलबानिक
ब्यंजुमाणिककेबने मार्तण्डबिभागद्वैजनुअंशुजालनिको
तने ८१ कैकिधौंमखतूलतारकबूलसूरतसोहने अंधकार
शिंगारकेपरिवारकेमनमोहने धूमधारबिहारकैसुकुमार

सर्पकुमारहै चंचरीकअभूतकैनवमेहकेअवतारहै ८२ अरह
बरहिसुबरहतेमणिनीलमित्तसुदेशके बेषकामनरेशकेबर
चौरसेशुभकेशके नेकछूटतछैछवानिछबीनसोछहरातहै
साफचारुनितंबपैरसझाइसोफहरातहै ८३ सिद्धकाज
शिंगारकेकरतारकीजनुकारिका हंसजारुचिवार पार प्र
चारकीसहचारिका पीठिपैकवरीबिराजत नाहनेहउमं
गिनी हैमनोंकलधौतकेलदलीसुपत्रभुवंगिनी ८४ गौ
रगातसुरंगरंगचुनाइकीवहचूनरी आवहद्दगुलाबकीसुदु
रंगदीपतिऊनरी घांघरोजरबाफकोजरबाफकीअरुकच्च
की भौसमुद्रसबीनकोकबिक्योंतिरैमतिरंचुकी ८५ दूल
रीगलमुक्तमालप्रबालकीपरभालही औरजेवरकीसमाज
जलूसलूसतिहालही अंगअंगशिंगारपोड़शसाजिकैगज
गामिनी दामिनीरदकैगईपियपैहुलासतिकामिनी ८६
क० ॥ कैधौंभयोप्रफुलितबसुमहिमांगफूलकैधौंजेवजोब
दारदीपनिकेभालहैं तड़ितमाशेखासे कैधौंतोरेतुरतकै
तामरसहीकोस्त्रजकैधौंरूपबालहैं कैधौंपरभाकीपुंजसि
मिटितिलोकहूकोप्रगटदिखावतकैधौंसरसमशालहैं बख
तबिशालधरेदीपकके जालजाति निपटखुशालकैमोपा
लमित्रबालहैं ८७ अंगनसँवारीपियपासको सिधारी
तियएकसहचरीलियेचौरककरावरमें एकैलियेसौधौंएकै
व्यंजनबसनएकैएकैलिये पानदानदौरेदरबरमें एकैदग
जोरेजातीनजरिनिहोरेकरैं भूषणगिरतनासँभारैहरबरमें
रूपकीउजेरीपरिचारिकाघनेरी मनोंदेवतरुडारघिरीदे
वतरुवरमें ८८ ॥ दो० ॥ रतिसीरम्भारूपसीघनीसह

चरीसंग गईनाहकेनेहलगि उहितअंगअनंग ८६ ॥

इतिश्रीभक्तजनाह्लादकेसुदामाचरित्रेकविवीरबिरचितेद्विज पत्नीपियप्राप्तिप्राप्तेऽष्टमोऽङ्कः ॥ ८ ॥



दो० ॥ नौमिअंकद्विजकीतिया करिपियसोंपरिहास बोधिकंतकोलैगईमहलनभरीहुलास १ देखततियकेवृंद द्विज चितमेंखड़ेडरात भूपतिकोरनवासयह कोजानैकित जात २ आइनिकटठाढ़ीभई जबतरुणीअभिराम तबशकि तङ्कैशीशनिजअंकोकियोसुदाम ३ लखिनिकेतहरि मौजज्यों लखियेबैसेरूप गईजानितियतुरतही हँसीकरी ब्रजभूप ४ श्रीपतिनिजपरिहासरस बशहवैपठयेकंत य- हैहेतहरिनाहिंनै प्रकटततियातुरंग ५ समयसलजचित जानिनिज प्राणनाथसबिलास बचनकहैद्विजभावतीक- रतप्रकटपरिहास ६ ॥ परिहासप्रत्युत्तर ॥ स० ॥ क्योंइत ठाढ़ेबिकाऊसेआपुजितैकहियेजूतितैटरिजैये सामुहेसों धनिमेंचलियेउतकाजहैकौनसुमोहिंसुनैये हूजेअनन्दित पीतमङ्कांकतनाहकहीअपराधलगैये जैसेबड़ेनरनाहकि रानीहोतैसियेबानीसयानीबतैये ७ ॥ तियउवाच ॥ मेरी कहीमनमानीनहीं अबजानीधनीमनमेंरिसियानी पैबि सरीसीसयानीसबैसोकहायहभूलिकहीपियबानी होतु महींनरनाहहमारिओनाहतिहारियेहौंनिजरानी सम्पति पूरिअनन्दभईचलिसोंधलखौअपनीनिजधानी ८ ॥ दो० ॥ सुनिसुदामनिजबामकी बानीयहचितदीन जानीजात महैकछू चाहतितियकहकीन ९ परतियसोंनहिंउचि

तहँबोलनिरहनिनजीक यातेहेउसुनायकै उत्तरअबकेठी
क १० ॥ सुदामोवाच ॥ स० ॥ कौनेरजायसीमेरीलहीक
बभूपकीभूमेंबड़ाईधरीमैं जाइनकाहेघरैअपने सरजीधौं
कहाअरजीयोंकरीमैं तेरीकछुननशैहैतियापैफजीहतिमे
रीयेछैहैघरीमैं तोहूंसोंमोसोंभईकबभेंटधरातलमेंकिधौं
देवदरीमैं ११ सूधेसुधाकेसुभायसलोने सुनेपियबैनहि
येतिहुलासी फूलप्रभातकेबारिजहूतेनईसुखमासुखमाह
प्रकाशी बोलतमन्दकछूमुसक्याइसुफैलतिचन्द्रिकाचन्द्र
प्रभासी चम्पकमालसीबालललसै चपलासीलसैलसैचन्द
कलासी १२ ॥ तियउवाच ॥ जोबिछुरैनिकोहोतसमागम
भेंटसुतापकेतंतुनितूरसि रावरेध्यानलगीपियहोनहिंजा
नतिकैसीबियोगकीसूरति होतनन्यारीछिनौदिनरैननये
अनुरागनितेअँगपूरति लोचनकेपथपैठिकैबैठिरहीगाड़ि
गाढ़ेहियेमहँमूरति १३ ॥ सुदामोवाच ॥कौनकीकोहौकिया
कहाचाहतिकौनपैरूठीसीडोलतीहौ परिहासबिलासनि
चातुरीकैहिय आतुरीगांठीसीखोलतीहौ यहशूलहमारो
बिलोकनहू जुपैनाहकनाहकैबोलतीहौ तुमरम्भाशची
औघृताचीतिलोत्तमा रूपकीतौलनितौलतीहौ १४ ॥
तियउवाच ॥ चाहतचन्द्रसेआननचारुचकोरसेनयननकोसु
खदीजतु औबतियानकीमाधुरीमंजुसुतौश्रुतिपानपियूष
कोपीजतु सोमृदुपायनलोटितिहारेउभेदसेपूरितयेकर
कीजतु रावरेपासहुलाससोनाथ नितैप्रतिअंगनिकोफल
लीजतु १५ ॥ झूलना ॥ प्रातजलजातसमनयनलजि
यानतियबातसुनिनातथहरानलागे स्वेदकनआइतनछाइ

छहरातदृगरोषसोंअरुणजनुकुसुमपागे हेरिचहुंओरचल चित्तकरिधीरधरिबीरहियज्ञानकेपुंजखोले रीतिगहिभी ततकिनीतिपथप्रीतिकरिक्षिप्रअकुलाइमुखबिप्रबोले१६

सुदामोवाच ॥ लक्ष्मीधरछं० ॥ क्योंनतूमौनह्वैजाइरीना घरैरारिसीनारिकाहेवृथाहीकरैक्योंतजेलोककीलीकका डोलती बारहीबारजीकन्तकैबोलती कैचलीओरपैऔर हीपैरुकी कैखिझीओरपैऔरहीसोंझुकी हैंसबैयापुरीमें हिंसाबीमरे बीचुपारैनकोऊबिलोकैखरे हैकहादोषतेरो महामैंकियो जोकछूबैरसोआजुचाहैलियो हाथजोरेकहों क्रोधथोरेसमों होबड़ीआपुसोपापुमोरोक्षमों मानितूआप नेदेवताकोतिया भूलिहूफेरिमोसोंनभाषैपिया जाइतूभौ नकोपायँतेरेपरों लोगहैंरघनेपौरिहौंहूंडरों जानतोजोकहूं यापुरीकीकिशै गेहकीछोड़तोदूरितेयादिशै रीतिऐसीन हींपंथपंथीचलैं हैंसुनेचोरकैसाहकाहूछलैं जोअरम्भैसबै जूतिहारीदिशै तोकहोफेरियाबिश्वकैसेबसै राहलीन्हेय हैंहासहीसोंभरो जोकहीनीतिहैप्रीतितामेंकरो बाततैसी कहौगातजैसीलसै त्योंबिदेशीनसोंनारिऐसेहसै होइजो तरुणओजातितपांतिको शीलसोंडीलसोंतेरियेकांतिको जोबुलावैहमैंनाहकैनाहकै पाससोजाइताकेनकाहेबकैसा खसांचीसुनौचित्तमेंमानदै कैदयामानसोकोबिदादानदै १७॥ तरलनयनछं० ॥ असकहिकसकरिद्विजबर थरथर कपतबिपुलडर फरफरअधरसुफरकत घरधरउरअतिधर कत तरलनयनचलचितुकरि निजतनुरदपटरिसभरि स लजलखतनहिंतियतन कठिनसमयसोइगुनिमन १८॥

दो० ॥ जितजितरमणिनजोकहरमानिचलतशुभगातति
ततितसिमिटिसुदामजूसरकतपछिलतजात १६ सुनतब
चनमृदुत्रासके रतिज्यौं आनँदधाम त्योंहींतहांसुदामढिग
भईबिपुलसुखबाम २० ॥ तारकछंद ॥ सुनिबैबतियांउर
आनँदबाढ़ीतियमंदहँसैपियकेढिगठाढ़ी वहरूपबिलोकत
हीबनिआवै कबिसोसुखमैमुखमेंकिमिगावै २१॥दो० ॥
पगीहासरसमेंरँगीपीतमकेअनुराग बोलतिद्विजस्वरभा
वतीबिलसततनुहिसुहाग ॥ तियउवाच ॥ त्रोटकछंद॥ निज
पायपलोटिनिहारिगुनौ चितरोषतजोकछुबातसुनौ यह
जानिसखाढिगतेनटरौं तुवनारिसुक्योंकरिसारिकरौं कब
हौंअबलाजसभाजनकी निशिद्यौसनितेअनुरागछकी कत
कंतकहेसतरातघने हकनाहकहीभृकुटीनतने२४नहिं आ
वतओरचितैसपनेगुणपूरिरहेहियमेंअपने सुकहाइतईहठ
मोतनमेंतुमज्ञाननिधानगुणीगणमें२५सबयानगरीश्रुति
पंथधरैं लगिरीतिसोक्योंअनरीतिकरैं तुमहींअबदोषल
गावतहौ बरहूंजोहमैंझहरावतहौ २६ करजोरिकहौंश्रु
तिदैसुनिये हमपैअपनीप्रभुतागुनिये तवमूरतिहौंहियइष्ट
धरी पियबोलतकाकहिचूकपरी २७ लगिहौंरहिहौंइन
पाइनसों नडरौंडरलोगलुगाइनसों अजहूंजितप्रीतिति
वै चलिये सँगमोहिंलियेयहहैभलिये २८ बनिकैतुमनी
तिबिबेककियो हवैसाहसुप्योचितचोरलियो जबपूरण
भागप्रतापजगे तबतोजगमोसमप्रेमपगे २९ उपहास
बढ़ैकिमिजाइमहीं तजिहौंअबप्रीतमनेहनहीं कतनीति
कुनीतिकहावतहौं मनभावनमोमनभावतहौं ३० छबिगा

तनयोतरुणापनतैं प्रभुसोफलहैसबआपनतैं परदेशनरेश निकासुनहीं उरझोचिततौदृगकोरमहीं ३१ छहरैतनयो बनज्योतिछटा उलहीतकिमोउरमोदघटा निजजातिसो जातिहमेंजुधरौ तुमहींकिनजातिबिचारकरौ ३२ ममरू पशुभाशुनदेशजोई प्रगट्योपियपुण्यबिपाकसोई तुमहीं हमकोरसवंतपिया हमहींतुमकोअनुरूपतिया ३३ परि पांवरि झावननेकुइतै हँसिहैंइतनामनुहैजुकितै अरजी कितरोषबढ़ावतहौ केहिपैहठिमोहिंपठावतहौ ३४ नि- जसंयुगसोंनबिनयनखिये करुणाकरिकै इतमोलखिये इमिउत्तरदैसुखपुंजछई मुखपैपटुदैतियमौनभई ३५ ॥ संयुताछंद ॥ सुनिबातसोपरिहासकीचितबिप्रजूअतित्रा सकी चकिचौंधिसेचहुंधागये हियमोंबिचारघनेठये यहकौनबैरिनिसीकढ़ी केहिपैकुनीतिकितैपढ़ी हमपैर हीहठमांड़िकै सबलोकलाजहिछांड़िकै इतराजुधौंया हीकरै तेहितेनबीचकोऊपरै कहियेकिहैकितजाइकै कुसु मौलग्योइतआइकै कछुदोषदीरघसोंकर्‌यो जुकुपेचपंच निमेंपर्‌यो करतोनगौनगोपालपै नहिंआवतोयहिहाल पै तवबैनभामिनिमानिये हकनाहकीहठठानिये करिकै कुभांतिकहाकही पठवाइकैकलसीलही जबद्वारकादिशि होंलई तबआपुधौंकितकोगई हरिपासजोइमिजानतो घरकीनसुधितौआनतो निजनारिनेहनसोंगस्यो अध बीचओरफँदाफँस्यो इतकोनहौंउतकोभयो बिधिनेकुठा टभलेठयो धरिआशमोहनपासको हमतोगयेतजित्रास को सिरतीगईतियभौनसों चलिबूझियेअबकौनसों गुण

गाथश्रीयदुनाथकी रहिहैजुवैश्रुतिसाथकी जगआनुते
ममरूपकी चलिहैकथायदुभूपकी सबसाधुवृंदनजाइहैं
सुसुदामसोफलपाइहैं मनयोंबिचारअनेकके अहिकोष
द्विजतबटेकके सतरातबोलतहूजके तरुणीकुधानिचितै
सकै गहिगासहेरतहीभरे भृकुटीनतानतहैंखरे वहबेष
पेषतहीबनै कविएकजीभहिक्योंभनै ३६ ॥ दो० ॥
निर्म्मलद्विजतनदोषको ऐसोहोतप्रकाश ज्योंदीपकफं
नूसको परकटप्रभाबिलास ३७ ॥ कुंडलिका ॥ बानीक
हतनकैसहूकियोरिसाहैंत्योंरे लाजलपेटीडहडहीदृगउ-
मड़ीछबिओरे दृगउमड़ीछबिओरठौरओरैछबिकीनो जैसे
जातखिस्याइहारिज्वारीपरबीनो तरलपेषितियअधरकछू
बोलतसीजानी बीरगिरागंभीरधीरबोलेमृदुबानी ३८
सुदामोवाच ॥ क० ॥ सुघरपरीसीबिधिसुघरकरीसीत-
ऊकुघरपरेकीरीतिउघरिपरीसीहै सुमतिहरीसीबातक
हतखरीसीलोकलाजनि दरीसीगतिकोकीधरीसीहै जा
तिबिसरीसीकितवहकिपरीसी रूपछजतिसुरीसीकतवो
ढरढरीसीहै परतखरीसीहियरोषनभरीसीआईकितहूवैल
रीसीअरीकाहेकोअरीसीहै ३९ ॥सुंदरीछं०॥सुनिकैपिय
बानीअमृतसानीचातुरताबहुरूपरची छबिबाढ़निबाढ़ी
द्विजढिगठाढ़ीज्योंपुरुहूतसमीपशची रसभायउमाहनि
निपटउछाहनिअंचलदैमुसक्यातभई करिकैकसयानी
तियअतुरानीपीतमकीगहिबाहलई ४० ॥ दो० ॥ अपनो
सोंबहुतोकियोद्विजबकरीकहीन करषसारितबकंतकह
करहरबरगहिलीन ४१ ॥ क० ॥ नाहढिगठाढ़ीछबि

सिंधुमथिकाढ़ीमनोबाढ़ीतरुणाईभईतरुणिबहबही पीत-
मसनेहउपजावनिसुधासीमंजुतैसियेसोहातिमरैबोलनि
गहगही दीपतिअछेहभूमूलतेउमँगिदौरिखरकोहीनेकु
चारुचूनरीचहचही रसअनुरागभरीपागिहूसुहागभरी
लाजभरीनाहकंधौंबोलतिलहलही ४२ ॥ मोटकछं० ॥
दौरितियातबहाथधरयोजब जावकसेदृगलालभयेतब
झांकिकरैझहरावतिहै फर आयभयोउरमेंअतिहीडर रोष
भरेअधरानिकँपावत चंचलचित्तकहूंकितधावत साहसकै
कछुधीरहियेधरि बोलतबिप्रबिनयबहुधाकरि ४३ ॥ सुदा-
मोवाच ॥ स० ॥ ह्वैहोबड़ेकुलकीउतबेटीइतैपुनिब्याहि
बड़ेकुलआईरूपलोनाईनईउलही अँगअंगनिचातुरतातरु
णाई दौलतिदीन्हींइतैपैदई अबक्योंनकछूरीगहैगरुआई
कै कैसयानीअयानीकरैकतनाहकइज्जतिलेतिपराई ४४
हौंनागुनाहीगुनाहनकीन्हो नकीन्होकछूइततेरोकुकामहै
औरहीलोभलग्योचलिआयोसुतौचितकीवहजानतरामहै
भूलहमारीक्षमाकरियेलखि बारहिंबारकियोपरनामहैहा
इकहारीनमानतिकाहेकहापरलोकसोंतोहिंनकामहै ४५
ब्राह्मणजातिकोसौंहगोपालकी हालकछूअबऔरैकरौंगो
तोपरतोरिजनेऊतलाकदैमानुकहीअतिखोटेअसौंगो सो
हँसिऔरसबैकहितोहिंहौंबीरजूकाहेतबैनडरौंगो बोल
कुबोलसबैकहितोहिंअडोलहवैहौंहूंबजाइलरौंगो ४६
वेदपरायणजातिद्विजातिहौ धातरीयोखेसमीपनाआवति
औरतेनीतिकीराहचलौं सपनेहूंकुनीतिसुनेनहिंभावति
छोंड़िदेहाथहमारोतियाहकनाहकरोषकहाउपजावतिलो

गतीका हूबड़ेकीबड़ीपैअड़ीहमसोंसोबड़ाइनपावति ४७
चोरीनचारीधुनाइनजानति जानुसदाहींसुपन्थकोगामी
मानुकहीअपनेहितकीकरिजायगईतजिबातनिलागी को
नकेधोखेलटूदैलगीतियआखिरलोगलगाहिहैंखामी तो
परएकघरीमेंबजाइकैबैठनचाहतहैंबदनामी ४८॥ सो०॥
जान्योनिपटसरोषद्विजतरुणीद्विजकहँजबै लागनचाहत
दोष यहिडरबोलतिहरबरी ४९॥ तियउवाच॥ दो०॥
निजकरिदासीरावरीहौंवहईद्विजराइ मोहिनचीन्हतकंत
कितकतमतिगईभुलाइ ५०॥ क०॥ जाकेकहेआपु
जायद्वारकापैयदुरायी देख्योसुखपाइसबजगतअधारहै
हौंतौहितकारिनितिहारिवहैब्राह्मणीहौंचीन्हतनकैसीभई
सुमतिउदारहै सकुचनहेरोतरुणाईकोसबेरोपियरूपतुम
मेरोयहजोपैछबिवारहै भरमनमानोअपनीपैमोहिंजानो
यहदीनबन्धुकीन्हीमौजमहिमाअपारहै ५१॥ स०॥
जोयहआपुलखीनगरीअलकातेअनेकदशासुखकारक देखे
मदालेमतगनजेऔतुरङ्गमहाछबिपुंजपसारक हौंतिनके
तुमईशअधीशकरीअनुकम्पितलोककेतारक जोजनभूप
सेपौरिखड़ेपियतेसबरावरईपरिचारक ५२॥ दो०॥
हौंपुनिरमणीरावरीकतसकुचतयहिरूप तरुणाईहरिकी
कृपाअंगनलईअनूप ५३॥ सो०॥ यहिबिधिपिय
समुझाइगिरागौरिसमसरितिया महलनचलीलवाइनिज
करकमलनसोंगहे ५४॥ मालतीछं०॥ सुनेतियबैन
कियेहियचैन गहेद्विजमौन चलेनिजभौन ५५॥ हरिगी-
तिकाछं०॥ यहिभांतिपीतमकोतियासमुझाइमन्दिरलै

चली हुवशोरजोरनिशानबाजतभईमुखारतनभथली बहु
मानपुरसरदानदैधनयाचकनकहँअतिदियेपरतापमोहन
मोजकोसुकलानिकीरतिकेलिये ५६ तहँपौंडिपौंडनपांवरे
जरबाफकेरुचिसोंपरे तिनपैसकामसनामजातसुदामआ
नँदसोंभरे अभिरामकंचनकलशभरिशिरलियेमृगनैनी
खरीं मणिमालजेवरदैतिन्हैंअभिलाषसोंपूरितकरीं ५७
अरघादिपूजित विप्रजूनिजसदनबनकनिहारई वहराज
राजनिकेतकीद्युतिबारबारनिवारई कमनीयकुंदनभूमि
पैरमणीयभवनजराइके घिरिरहीशोभसमाजउन्नतहैसु-
मेरुसुभाइके ५८ छबिवारछाजतहैछजाकलशानिकांति
घनीबढ़ै नवरंगक्षणहूं क्षणगवाक्षणमूकदीपतिकीकढ़ै
गुमदीननोरजलूसहैं झँझरीनझालरिझलमलै पुरुहूत
सोंधसुदेशताअभिमानमनहींदलमलै ५९ मुकतानिहीर
निथारभरिभरिभईबहुतनिछावरै झरिसीजवाहिरकील-
गीदिनद्वैकलौंद्विजरावरै करतूतिश्रीजगदीशकीकछुजात
नाहींनैकही कनराजकोनहतोकहूं तहँफिरतिदौलतिहै
वही ६० चहुंओरमणिमयमुदितमहलन नारिमंगल
गावहीं करिकैकलोलनिकूजनीकलकोकिलानिहरावहीं
रचिप्रेमप्रफुलितपंकजसअति सरसरसउपजावहीं कहि
बीरश्रीयदुबीरकोयशरीझिरीझिसुनावहीं ६१ अतिगौर
गातअनूप आननरुपरतिरंमानकी कलधौतबेलिसमान
सुंदरिमयेयौवनमदछकी जलजातगातन अकथशुभगुण
सदानाह सुहागिनी निशिद्योसश्रीपतिपरमरति अति
अमलबपुबड़भागिनी ६२ ॥ कंदछं० ॥ लखीकांतिऐसी

तहांठौरहीठौर नईजेवदौरैंघरीहीघरीओर भरीनेहना-
रीनकीभीरओजोर मनोमैनकीभूतिफैलीचहूंओर चहूं
ओरमुक्तानकीचौकहैंचारु दियेचित्तदेखेकियेबिप्रजूप्यारु
बनीबेशपन्नानिहीराअटारीन लगीदृष्टिकेहूटरैनेकुटारीन
लजैदृष्टिदौरैतितैचारुहूंछोर नसंपत्तिकोनेकुआवैकहूंओर
कृपासिंधुमाधवकृपादीनपैकीन नवोंनिद्धिऔसिद्धिआठौ
द्विजैदीन सोऐसोहितूश्यामतैसोकरोनेह सुदामासमय
लोगुसामासबैलेह कहालोभलागैभ्रमैरेबितैकाल भजो
रेभजोदीनकोबन्धुगोपाल सदानन्दको नन्दआनन्दको
कन्द तजौताहिऔरैभजोरेवृथामन्द अनाथानकोनाथहै
नाथ गोबिन्द नहौनेहताकोलहौमोदज्यों इन्द बिधाता
पुकारैकहीहैयहैबानि सुनोकानदैआपनेहेतुकोमानि चहो
मुक्तिकोभुक्तिओजोबिनाध्याम हृदयप्रीतिकैतौगहौबीरजू
श्याम ६३ ॥ सो० ॥ केवलहरिकथनीय वीरश्रवणिश्र-
वणीपहरि दरशनीयभजनीयहरियहईनिज निगममत
६४ ॥ कुं० ॥ कैसेकैकहिजातसो संपतिउदयविशाल
वीरकरो बकसीसज्योंङ्क हैकृपागोपाल ङ्क हैकृपागोपाल
रीझकछुऐसियकीन्हीं तीनोंभुवनअलभ्यमौजसोद्विजकहँ
दीन्हीं ङ्क बिराट बपुतृप्तजाहिरीझैंप्रभुऐसे समसरता
कीऔरकहौकीजैको कैसे ६५ ॥

इतिश्रीमत्सकलभक्तजनाह्लादकेबीरबिरचितेसुदामाचरि-
त्रेद्विजमन्दिरवर्णनोनामनवमोऽङ्कः ९ ॥



दसेअंकहरिमौजकीद्विजजूकैकैदान नंदलालगोपाल के करेनामगुणगान १ ॥ चौ० ॥ ठौरठौरतहँरत्नसिंहासन तिनपैमृदुलमंजुहैंआसन चंद्रकचंद्रचंद्रिकासमसरि चहुंकितबिछीचांदनीद्युतिभरि बिशदबितानतनेकितचहुँदिशि द्विजबरउरउमग्योअतिहीतिशिकमलासन करिकै सुघराई जेतीभोगसमानबनाई सोनिजसदनबिलोकिद्विजाती चकितबिचारकरैयहिभांती यहतियकौन कहांलै आई आगेधौंबिधिकहाबनाई चाहतिकहाकियोयहबैरिनि हमठकुराइसलहीनपैरिनि यहतौसुकृतीसिन्धुको भोगू क्योंकरिहोहिहमारेयोगू ज्योंसुपक्वफलउन्नत तरुको कैसेशिशुपावैलघुकरको जलधितरैक्योंविनभुज केनर चढ़ैपंगु कैसेकैगिरिवर क्योंसुनीतिबिनहोइबिदितजन बिनादानक्यों यशीहोहितन बिनहरिकृपा ज्ञानक्यों आवत भक्तिहीनकैसेहरि पावत हौंनपुण्ययातेकछुकीन्हों कैसेइतोबिभवहरिदीन्हों श्रीपतिचरणसदाजिनके उर तिनलायकयहीबिभवतरुणिपुर यहिविधिभरेबिप्र जूशंकन लोचनलियेलायकेअंकन डगद्वैचलिफिरिरुकिरुकिरहईदौलतिदेखिभभरिभोगहई पीतमकीयहदशानिहारी मंदमंदबिहंसैसुकुमारी मनभावनमनकीसबजानी चतुरशिरोमणि तरुणिसयानी चंचलचषननचावतिभौंहन बोलीमधुरबहुतकरिसौंहनकहाभयोसौंहननहिंमान तक्षणक्षणपै कहधौंचितआनतनिजनिकेतकतसकुचतमनमेंक्योंअतितृपाहोतहौतनमें प्राणनाथअजहूंनपतीजतुकैसीभईनउत्तरदीजतु आपुबराबरिदूजोकोहै करिबिबेक

समुझावहुमोहैं ज्यहिहरिलगिऋषितपकरिहारे भयेसु लोचनअतिथितुम्हारे चतुराननजूनिपटचेतिकैकहतजाहि नितनेतिनेतिकै परशिताहिआयेमनभावन करतक्योंन चलिमन्दिरपावन जाकोहितूसदायदुरैया दीनबन्धु सोंजाकोभैयाताकोकहाअलभ्यगोसाईं बारबारकहिदेति ढिठाईं यहदौलतिपियदेखतिजेती श्रीपतिकृपापूरकहु तेती रीझतुजाहितुम्हारोभैया देतअपनपौयोंसुदिवैया तुमसर्बज्ञसबैकछुजानहु कैप्रतीतिसुबिनयायह मानहु छविबहारदेखतजुधामकी नाथसोंहसाइमौजश्यामकी२ तियउवाच ॥ स० ॥ यानगरीप्रभुठौरहिठौरचहूंकितआनँद बेलिभईहै रीझौतुम्हैंयहिभांतिमुकुन्दयों रीझिनईहियमें उनईहै चाहनयेकोतिहारिपियापरिपूरणभागप्रतापछ ईहै रावरीसौंहहैरावरेकोयहसम्पतिरावरेमीतदईहै ३ दो० ॥ यहनगरीयेतुरँगगज यहसम्पतियेधाम पीतम हितकरिआपुको दीन्हींश्रीपतिश्याम ४ ॥ सुगतिछंद ॥ नारिबैनसुनिचैननिभीने शोचद्वन्दद्विजमोचितकीने श्री पतिकृपामित्रसबजानी नारिपुरीसम्पति निजजानी देखीद्रव्यसमूहअघाने कामनानिइकबारसिराने नेहसों अधरनसम्पुटखोले मन्दमन्दघरनीसनबोले ५ ॥ सुदामो-वाच ॥ प्रियाद्वारकामोहिं पठायो दीनबंधुप्रभुतबहिंबतायो जायतहांपुनिहरितनदेख्यों धन्यजन्मअरुजीवनलेख्यों ६ ॥ चौ० ॥ द्वारावतीजुमोहिं पठायो मेंउरमें सन्देहब-ढ़ायो कैसेहरिपुर पैठनपैहौं कैसेश्रीपतिदर्शनलैहौं द्वार पाललखिदशा हमारी दूरिदूरिकरिदेहैं गारी बिनकछु

लयेजाननहिंदेहैं हमअबहींघरही फिरिएहैं ऐसोबहुत बिचारउठायो नीठिनीठिहरिपुरनजगायो जाइद्वारका देखीजैसी छबिबिरंचिहूरचीनतैसी हौंबहारउतलखी जुनैननि सो अब कहीजातिनहिं बैननि दुखीदीनकोऊ नहिंजानों सबधनीधनपतिहैं मानों हौंनिजदशादेखि शरमान्यों तेहिपुरपैठतबहुतडेरान्यों पैकाहूतहँबूझीबात न रोक्योमोहिंनकाहू जातन ऐसीरीतिसुनीनहिंभूमी सन हसाजातकौनकोऊमी हौंनिशंकद्युतिदेखतसोई हरिकी पौरिजाइ दृगजोई ७॥ दो०॥ साहसकरिकछुडरकियो कछुअनन्दउपजाइ दीन्होंआशिर्वादमैंद्वारपालकहँजाइ। ८ मोसों अरुप्रतिहारसों भयोवादपलएक गयोजनावन श्यामपैद्वारपालतजिटेक ९॥ चामरछं०॥द्वारपालजाइकै गोपालपैजनाइये द्वारपैद्विजातिदीनआजुएकआइये हैं महामलीनएक बस्त्रफेंटसोंकटो कौनभांतिसोंकहौंसुभांति भांतिकोलटो सोंहरावशीडरौंसुचूकमाफकीजिये दीनबंधु शीलसिंधुनेकुचित्तदीजिये नामहैसुदामकामधामनाबता वही मीतरावरोकहाइरारिसीमचावही योंसुनेमुकुंदमित्र मोदपूरसोंभरे राजकाजवैसबै जहांतहांरहेडरे पौरिपौरि पौरियानिमोहिंबूझिसादरे मोंगरीबकेहरीसु आइदौरि पांपरे १०॥ दो०॥ अधखोली सुरहीरहीबीरीहाथ कि हाथ धायेतुरतउवेनहींसुन्योमोहिंयदुनाथ ११॥सो०॥ मिलेमोहिंगोपाल हियआनँदउपजायकै लह्योजुसुखतत-काल अकथनीयसोंघरनिसुनु १२ बोलिनेहकेवैन जर-वाफीकरिपांवड़े महलनिपंकजनैन लियेमोहिंसादरगये

१३ ॥ चौ० ॥ भीतरमोहिंलवाइगयेरी रोमरोमअनुराग ह्वयेरो आसन अपनेहाथ बिछायो मोहिंसिंहासनपरबैठा यो मोपगश्रीपतिआपुपखार्‌योरमानीरअपनेकरडार्‌यो कहाकहौंकरकसपगलैकै मृदुलपाणिधोयेहितकैकै मीड़ तपांइन्यँवाईवाले हरिमृदुकरनपरेअतिछाले सरसबसन पोंछेपगमेरे हियेउमाहिअनन्दघनेरे जाकेचरणसलिल केपरछे पावनलोकतीनऊदरशे सुनिअद्भुतगति नारि सयानी सींच्योतेहितन ममपगपानी बूझीकुशल प्रीति अधिकानी गुरुघरकीफिरिकहीकहानी एकदिनाहमहरि हितभीने गयेजुबनगुरुआयसुलीन्हें हमकोहरिकोचना दियेते मोकरगुरुतियमोजुलियते मैंचुराइसब भोजनकी-न्हें हरिकेहाथइकौनहिंदीन्हें भईरातिअतिक्षुधासताये मांगतहूहरिचनानपाये बारबारहरिभयेअधीन मैंअपरा धीचनानदीने सोकरिहांसीकरीघनेरी मांगीबहुरिभेंट हरितेरी भाभीभेंट दईसोदीजै चनारीतियहऊ नहिंकीजै हरिहठ परेभेंटकेकाजे हौंसोमेटिबोल्योगहिलाजे बहुत भांतिमोहनसमुझायो मैंनभेंटकोभेदबतायो भेंटहेतउत श्रीपतिपाहीं हौंसुनुतियागहीइकनाहीं चारिकचाउरतैं जुपठायो तिननिपटैकरिहमें लजायो बैठिरह्योंजब भेंट मटिकरि तबग्रौरैमजकूरकरोहरि ग्रौचकश्रीपतिनिजकर चुटकी लईऐंचितंदुलकैपुटकी मैंलजाइशिरनीचेकीनों ह रिग्रतिप्रेमप्रवाहनिभीनों दीनदयालभक्त हितकारन तं दुलखातलगाइ न बारन लैमुठीकचाउरमोंआगे लियेपा इग्रतिहीग्रनुरागे बहुरिलेनकहँहाथपसार्‌यो रमानिहो

रिनिहोरिनिवार्‌यो हरिसोंहितूऔर नहिंनारी देखिमु
चावरवैजुकहारी बँधोबसनकेजीरनकाचो विधिवशभौन
कोनमेंबाचो तैंसप्रेमहठिकैजुपठायो यातेतुरतश्यामजूपा
यो ऐसोहितू न चिततेटारो सदादीनजनकोरखवारो
सुनितियफेरिहेरिहरिसादर कीन्होंबहुतभांतिसोंआदर
यहिबिधिदिनद्वैतीनरह्योरी दियासुकछुहरिजूनकह्योरी
एकदिनातेरीसुधिआई तनमेंबढ़ीबड़ीदुचिताई बिदामांग
उठिभोरचल्योजब आयेपुरबाहिरलौंहरितब तोसोंनिप
टहेतसोंनारी कह्योप्रणाममुकुंदबिहारी मोसोंकह्योसुनो
होद्विजबर बहुरिआइबीयहजुआपुघर करिप्रणामउतआ
पुसिधाये दैअशीषहमइतकोआये पैहरिमूरतिसोंदृगमोरे
रहेअरुझिकरिमैंकसुफेरे बिनयजुबहुरि कीनजगनायक
करीसोसबसुनु अपनेलायक कहगरीब बपुराकहजानै
क्योंहरिइतैताहिसन्मानै हुतोखेतबैबेकेयोगू दीन्होता
हित्रिपुरसुखभोगू दीनबन्धुवानेकीकरनी यहतौबिदित
भईसुनुघरनी १४॥ दो०॥ जोइतसम्पतिकोबिभवठौ
रनिठौरबिशाल ताकोकछुमजकूरसो कह्योनउतगोपाल
१५ हौंजानतपुनिहेतुयह कहीनमित्रमुकुन्द हैकितेकमो
दानदैयेदौलतिकेतुन्द १६॥ स०॥ दीनकेबन्धुदयानि
धिकेशवशीलकेसिन्धुसदासुखदायक मोहि तिलोकीवि
भवबकस्योहरिहेरिनतंतकसंतसहायक दीन्होंनदीन्हों
कह्योकछुबयनहिंजानतयाहितवैजगनायक हैद्विजयोग
घनेरीरमापैकछूअबमेरेनदानकेलायक १७॥ चौ०॥यहि
बिधिद्विजबरतियकोकहिकै गयेसदनअतिहीसुखलहिकै

स्नानआदिविधिवतसबकीन्हे बहुविधिदानमानकरिदी
न्हे दीन्हेबड़मोलकेवारन सुन्दररत्नतुरंगहजारन बेष
बेषजेवसननबीन तेद्विजजगतयाचकनदीने भांतिभांतिके
रुचिरजवाहिर सोद्विजधर्योभवनकेबाहिर हीरनकेफि
रिकियेरदासे भाससमानसूरजलोंभासे मणिमुकुताअनले
खेआने धरतधरातेहिठानअमाने औरघनेरीसम्पतिआ
नी बोलेद्विजवरतहँयहबानी सुनहुसकलयाचकजनअर
जी मैंयहदौलतिकोनहिंगारजी यहसबतुमहींकाजमँगाई
वीरसत्ययदुवीरदुहाई सुनियाचकगणयहगतिराची द्वि
जकेभवनलूटिसीमाची एकैलियेमणिनकेमालनि कहत
जातद्विजकेयशजालनि एकनलीनहीरभरिखोभा उर
उमरयोआनँदकेगोभा एकनकनकथारभरिमोती लिये
जातजनुउड़गणज्योती एकनहीरमोटतिनबांधे लैकर
चलतबिरानेकांधे लग्योकांधाजबअतिकरकन बरघट
त्वचालगीसीरदकन मूठीहैकसुकरितबकाढ़े डगद्वैच
लिफिरिभयेजुठाढ़े बहुरोकछुवहकसकतहेरे चितवतजे
पछितातघनेरे बड़ोबोझतनलालचताई डगभरिमगमहँ
चलानजाई यहिविधिडारेहीरहजारन लऊकांधदरकै
अतिभारन भेउपाइकैकैजबहीने एकएकरधुमोटेकीने
तिनतज्योंज्योंनिसरतहीरा त्योंत्योंघटतकांधकीतेपीरा
द्विजकीनजरिपरीकहुंजाई करुणाहियेघनेरीआई खच्च
रकोशनिभरेमंगाये देसबभिक्षुकसदनपठाये दो तिके
द्विजदियेतँदूरे याचकजननिमनोरथपूरे सम्पतिजोब्रज-
राजकीजेती दईलुटाइबिप्रजूतेती मणिगणपायेअनगन

तीके मांगनमुदितभयेजूपीके सोवहदशानजातिकहीहै
हौसियाचकनकेरिरहीहै चैतचांदनीभूमिबराबरि दिशि
बिदिशनद्विजरह्योसुयशभरि दियोदानजोद्विजसुखपाई
सोसबबीरबरणिक्योंजाई १८ ॥ छप्पै ॥ चिन्तामणि
कल्पद्रुकामनादानिधेनुजिमि भिक्षुकमनगतिपूरिभूरि
सुखमानीउत्तिमि याचककियोअयाचबिप्रहरषितचित
मंडल बितरतसम्पतिवृन्दमनोरवनखतअखंडल गज
तुरंगअनगननिरथघरनघरनकीन्हेउँचयनअतिदुसहदीन
दुखजानिद्विजसुदीननिफिरिदेखेउनयन १६ याचकजन
मनअधिकनियतकरिदेतअमितवरु कहांकामदाधेनुकहां
चंतामणिसुरतरु दानवारिपरबाहसततलखियतचहुंओर
नि मानोंसरिताउमड़िबढ़ीपावसऋतुजोरनि हैहेमहीरग
जचीरबरबीरजगतयहिबिधिदयो घरघरहूहरिअगरसुम
तअंगननिभरिभरिगयो २० अतिपबित्रजनुगंगसाहिबी
हँसतपुरन्दर कुलदीपकजिमिचन्द्रभूमिनभक्षमाधुरन्धर
जगतजगतपरतापजासुकुलशुभबरदायक रुचिररूपधरि
बीरधर्म्मवृन्दनिकानायक धनपतिसुदामवुहहरिकृपा
गरभहितजिचितकरतदम सूरजसमहरमदनसमधर्म्म
राजसमधनदसम २१ ॥ गीतिकाछं० ॥ द्विजदानदै
अभिमानहीनसुजानजनपदवीलई क्षितिछोरलौंचहुंओर
कीरतिशरदनिशिकरसीछई जबहोतआइसहाइश्रीपति
चन्दजूनँदनंदहै तबहोतशुभशुभहैसबैअरुमिटतभवदुख
द्वन्दहै २२ मुनिजाहिध्यावतलहतजोसुखजातनाहिन
सोकह्यो दृगजोहिवाहिसुदामआयोधन्ययाते ह्वैरह्य

ह्यांभागपूरितबीरद्विजयदुबीरगुनगनमेंजग्यो शिरनाइ
श्रीपतिपाइँपंकजलेनहरिनामहिंलग्यो २३ ॥ दो० ॥
अतिअनन्दगहगहभरेहवैआयोतेहिकाल दम्पतिलागे
कहनतबतपजपजैगोपाल २४ ॥ छप्पै ॥ जयअनन्तअ
व्यक्तव्यक्तअच्युतअबिनाशक जयअनादिजयब्रह्मज्यो-
तियकसदाप्रकाशक जयजड़तादिकरहितरूपरेखादि
बिभागत जयअनीहजयबुद्धिचित्तशब्दादिअनागत जय
ठौरठौरव्यापकसततपरब्रह्मआनंदमय सुखमानिधानभ
गवानजयसुविस्मितबपुगुणशीलजय २५ जयअघहरण
मुरारिचक्रधरशक्रअनूबर जयबिराटबपुसुखदउदरमधि
सकलबिश्वधर जयसुगीतयशबिशदशेषव्यासादिकगोत
म जयपुराणपरपुरुषयज्ञपुरुषपूरुषोत्तम जयकमलनाभि
कमलापतेकमलनयनजगचैनकर जयहृषीकेशवहरेशज
यसुजयद्विजदारुणदुःखहर २६ जयधरणीउद्धरनधरा
धरधरनधर्म्ममय कैटभारिकंसारिधामउद्धितबकारिजय
कोपानलप्रज्ज्वलितदनुजकुदकलुषबिहण्डन भूमण्डन
अजइशबिकटखलकलकेखण्डन जयदरददीनरक्षकप्रभो
जयनरहरिश्रीबत्सधर जयरमारमणरमणीयगुनसुजय
द्विजदारुणदुःखहर २७ जयदामोदरअनघदीनकेबन्धु
मोहहर जयमुकुन्दमधुमथनसंतहितजयनँदक्लोहर जयवृ
न्दावनललितकलितनटवरबपुसोहन जयबंशीबटनिकट
रासरसउत्सकमोहन जयबेणुनादमोहितसकलगोगोपी
गोपालमतिनिशिद्योसबीरप्रमुदितसदासुजयतिराधिका
उरबसति २८ सत्यशीलसतिनामसत्यगुणठामग्रामसति

सत्यविदितसबकर्म सत्यसंकल्पसत्यमति सत्यहेतुअव
तारसत्यव्यापकश्रुतिसिरजन सत्यप्रकाशितकोपसत्यप्र
रनामसत्यतन सत्यसहससंततसदासतिप्रतापसतिसुय
शचय सबसत्यजासुकीसत्यतासुजयजयजयसोइसत्यम
य २६ बासुदेवबिभुबिष्णुकृष्णगरुड़ध्वजगोपति नारा-
यणनरकारिचारिभुजसुकृतनीतिरति गरुड़ज्ञानगुरुमान
गुनाकरअतुलितबिक्रम कंशवकेशीमथनकान्हकैसोरवहि
क्रम जयजयअनयकरुणानिधेगोपीपतिदुर्ज्जनशमन जय
जयनशीलगोपालमणिसुवनमालिकालीदमन ३० जय
जगसिरजनहारजयतुपालनसंहारक निराकारनिरबन्ध
निरंजनअंजनधारक बिस्वक्सेनअमन्दकपटकुबलयमद
भंजनप्रणतपालकलिकालबिकटबलिबलकेगंजन जग
दीशपितामहदर्प्पहरबिबिधिबत्सहतबेषबल जयदेवदेव
रुद्रादिकरिसुबन्दनीयपदपद्मजल ३१ जयत्रिभङ्गबपुरु
चिरपीतकौसेयबासधर जयमुरलीधरललितरचितशिरमु
कुटमोरपर जयअधरीकृतकाममंजुब्रजबामबिहारीलीला
प्राकृतबेषजयतुपूरणअवतारी जयसमरगोपिकाबद्धमन
रसनिधानआनंदभर जयभक्तिबश्यकामकगुरोसुकालि-
न्द्रीतटकेलिकर ३२ घटघटप्रकटप्रतापप्राकृतनित्य
निरंजन मायामोहितबिश्वबिश्वतनत्रिभुवनमंजन बिर
चितजलजबिरञ्चिचित्रकर्म्माबरदायक अघटितघटना
घटनश्यामसुरनायकनायकचरअचरभूतभावनसदापावन
रुचिरचरित्रचय रणधीरधीरयदुबीरकहिसुबीरबीरयदु
बीरजय ३३ जययदुबंशऽवतंशकंसबंशानलबातक जय

मुष्टिकचाणूरप्रबलमल्लादिकघातक जयजयरक्षिततातमा
तअवदातगुणाकर जयनिजसुयशसमूहअधरकृतशरदनि
शाकर जयअभयदानिशरणागतनिभवबिमुक्तजयधर्म्मच
य जयबीरजगतबारिधितरणिसुनन्दनन्दब्रजचंदजय३४
जयवृन्दारकवृन्दबंद्यपदद्वन्दबिराजत जयगोबिन्दगदा
दिमंजुकोमलकरभ्राजत ह्वैसप्रेमयहिभांतिबिबिधिवैस
बगुणधामा करयोनामगुणकथनघरनियुतमुदितसुदामा
बीरसमूहनिजोचहतसम्पतिसुयशअनन्दके कहेजगतय
शविदितसोइबन्दनीयनँदनन्दके३५दो०॥यहिबिधिहरि
गुणनामकहितजिगरबहिंसुरयोग द्विजदम्पतिलागीकर
नसम्पतिकोसुखभोग ३६ सुनहुंसजनसबजगतकेहित
चितकरिअतिप्यार होतनताकेसुखकहाजाकेहरिसोंयार
३७॥सो०॥ सोईपरमपुनीतधर्म्मधुरन्धररुचिरसोइ जाके
हैंहरिमीतकृपापूरिआनन्दघन ३८॥ स०॥ सूर्य्यसेते
जसुरेशसेसाहिबसोईपियूषकेपानहिंचाखतु शेशधनेश
गणेशहुकोसोइबिक्रमसम्पतिबुद्धिसोभाषतु येमनमानि
नितन्तकरीयहबेदबिचारिबिचारिकैभाषतु पावतसोइ
सदासबआनँद जेहरिजूकोहितूकरिराखतु ३९ नीच
अकारथहीभरमैपुरुषारथकैकैसहैदुःखद्वन्दहि चेततक्यों
न अचेतअरेजड़मूढ़नछोड़तहैछलछन्दहि जागुसोजागु
तजौसबकामुहिंसाथलियेलघुलोभकेगन्धहि येमनमेरे
घनेरेबिषयतजिध्याउरेएकघनानँदनन्दहि ४०॥ दो०॥
जगदम्बाकरिकैकृपा जोनीकीमतिदेइ तौकिनहरियश
बरणिनर अजरअमरपदलेइ ४१ श्यामसुदामाचरित

कछु कहेबीरमतियोग हरिहितभूषितभूषणन करिहैंप
ण्डितलोग ४२ भयेहोहिंगेहैंजगतजेकबिबरकोउसाधु
तिनसोंअरजीहैयहै क्षमियोमोंअपराधु ४३ अपढ़निज
ड़मतितउबढ़ै हिरदेहोइहुलास कहोबीरयदुबीरको द्वि
जकोकछूबिलास ४४ नहिंअवलोकितछन्दबिधि नहिं
रसरीतिनग्रन्थ श्रीपतिनामप्रतापते अपथोहोतसुपन्थ
४५ सुजनहोइमैंकछुकछू भलीहमारीबानि सोअबआ
पुसुधारवो श्रीपतिकबिताजानि ४६ श्रीपतिजूकेनाम
करिअंकितकबिताजोइ मेरेभानजहानसो सबैसुहाई
होइ ४७ याहीतेहमहूंकछू कीन्होंसुमतिप्रयास निज
कबिताकरिरुचिरता देहैंजगतनिवास ४८ श्यामसु
दामाचरितनित जोपढ़िहैंसबिलास तारेसदनविशेषकै
करिहैंरमानिवास ४९ दीनबन्धुद्विजदीनको पावन
परमचरित्र जोसुनिहैंअतिहेतकरि सोह्वैहैंहरिमित्र
५० ॥ छप्पय ॥ रेवातीरपुनीतभूपशिवराजधर्म्ममय
माहिषमतीबिलास पुरीअतिभरीसुयशचय बाजपेय
कुलकमल तरणिकृष्णाकरकेशुक बीरसुमतिअनुसार
तनककीन्ह्योसोकौतुक प्रभुदीनबन्धुद्विजदीनको कछु
चरित्रबर्णनकर्यो यदुबीरकृपाहोइगो सुबिदितभक्ति
रससोभर्यो ५१ ॥ कुंडलिका ॥ बसुनिधिऋषिनष
तेशमिलि संवतसरसपबित्र १७९८ ॥ माघमासकी
पंचिमी जगपरसुखदपबित्र जगपरसुखदपबित्र कथा
तेहिदिनयहकीन्ही बीरइष्टपदपद्म मध्यसंकल्पिसुदी
न्ही अबबीरकहतनिशिद्योस मोदमयगावतहरियश

मांगतयाहीरोज रमापतिनितमम उरत्वश ॥ ५२ ॥

इतिश्रीमत्सकलभक्तजनाह्लादकेवीरकविविरचितेसुदामा चरित्रेद्विजदानेतपभक्तिवर्णनोनामदशमोङ्कः १० ॥

समाप्तोयमग्रन्थः ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
शंकरचरित सुधा	अनेकार्थ	चकावली सुमन	कल्प भाष्य
शुकनेत्र भूषण	छन्दोर्णव पिंगल	चहार दरवेश	लक्ष्मी सरस्वती संवाद
श्री चतुरागरस	रसराज	क़िस्सा हातमताई	**दरसी**
शोभागर लीला	सतसई मूल	अपूर्व कथा	
रासलीलाहारिकाप्र०	तथा सटीक	क़िस्सा गुलसनोबर	अक्षरावली
नाटक	सभा विलास	सहस्वरजनीचरित्र	स्वयंबोध
	युगुल विलास	रविन्सनका इतिहास	ज्ञान चालीसी
प्रबोध चन्द्रोदय	तुलसीशब्दार्थप्रकाश	सीता हरण	दोहावली
रामाभिषेक	भजनावली	दास्तान अमीर हमज़ा	बालाबोध
आनन्दरघुनन्दन	प्रेमरत्न	सती विलास	विद्यार्थीकी प्रथम-
भ्रमजालक नाटक	चित्रचन्द्रिका	क़िस्सा मर्द औरत	पुस्तक
हनूनाटक	बारहमासा बलदेवप्र०	सांगीत प्रह्लाद	किताब जन्त्री
वेदान्त	मनोहर लहरी	**सुतफ़र्क़ात**	सरिशतकाजध्वेलु
	गंगा लहरी		लीलावती
योगवाशिष्ठ	यमुना लहरी	शनिश्चर की कथा	पदचारियोंकी पुस्त
केनोप निषद	पियूष लहरी	ज्ञानमाला	क ४ भाग
आनन्दामृत वर्षिणी	जगद् विनोद	गोपीचन्द भरतरी	**वैद्यक भाषा**
मोक्ष्य तत्वकौमुदी	शृंगार बत्तीसी	कथा श्री गंगा जी	
काव्य	**राग**	अवध यात्रा	निघराट
		भरतरी गीत	अमर विनोद
सुखसागर कोषे प०	रागप्रकाश	रासलीला वनमाली	वैद्य जीवन
तथा छापे टप	लावनी	दोहावली रत्नावली	औषधिसंग्रह कल्प
सूरसागर	**किस्सा वग़ैरह**	रसायन प्रकाश	बल्ली
कथासागर		गोकर्ण माहात्म्य	अमृतसागर बड़ा
विश्रामसागर	नानार्थनौसंग्रहावली	श्रीगोपालसहस्रना	तथा छोटा
प्रेमसागर	ब्रह्मसार	कथा सत्यनारायण स०	दूला तुलसीका
ब्रजविलास बड़ा	शिवसिंह सरोज	हनुमान बाहुक	वैद्य मनोत्सव
तथा छोटा	भक्तमाल	जमक पचीसी	क्रिस्तान
कथामिश्रा	इन्द्रसभा	हरिदास मथुरा निर्णय	**ज्योतिष भाषा**
विजय मुक्तावली	विक्रम विलास	रास पदावली	
उपदेश चन्द्रिका	वैसाल पच्चीसी	वनयात्रा	जातक चन्द्रिका
मंगल विनोद	सिंहासन बत्तीसी	कायस्थ वर्णनिर्णय	जातक संकार
विजय चन्द्रिका	पद्मावती स्वयंवर	विहार वृन्दावन	रेवत्सा भरण
सिद्धान्त संग्रह	शुकबहत्तरी	समर विहार वृन्दावन	ज्ञान खरोदय

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
रसलसार रसल नौरत्न इन्द्रजाल	**संस्कृत उर्दू टीका**	**नागरी कैथी**	बाला भूषण पद्य संग्रह भाषा काव्य संग्रह कवित्त रत्नाकर १ भा.
संस्कृत की पुस्तकें	मनुस्मृति विष्णु हारीत महिम्न स्तोत्र व्रतार्क याज्ञवल्क्य स्मृति	वर्णमाला कैथी १ भा. तथा २ भाग	तथा २ भाग मंगल कोष अंक प्रकाश
लघु कौमुदी सिद्धान्त चन्द्रिका भाषा तत्त्व प्रकाश पञ्च महा यज्ञ निर्णय सिन्धु संग्रह शिरोमणि कर्म्म विपाक भगवद्गीता पञ्चरत्न दुर्गा पाठ मूल दुर्गा पाठ सटीक विष्णु भागवत कथा यमद्वितीया अपराध भञ्जन स्तोत्र कायस्थ कुल भास्कर कायस्थ धर्म निरूपण तथा छोटा मथुरा सभा	**संस्कृत भाषा टीका** अमर कोष तीनों कांड याज्ञवल्क्य स्मृति सन्ध्या पद्धति व्रतार्क भगवद्गीता टीका हरि बंशालाल कृ. तथा टीका आनंदगिरि गीत गोविन्द कथा सत्यनारायण परमार्थसार शार्ङ्गधर संहिता पाराशरी सटीक शीघ्रबोध सटीक लघु जातक षट् पञ्चाशिका सामुद्रिक गरुड़ पुराण राम विवाहोत्सव	हरूफ़ मुफ़र्रात अक्षरारम्भ वर्णप्रकाशिका १ भा तथा २ भाग सरजपूर की कहानी धर्म्मसिंह का हत्तान्त शिक्षावली शिशुबोध पत्रहितैषिणी पत्रदीपिका विद्याचक्र विद्यांकुर पदार्थ विद्यासार परार्थज्ञान विषय भोजप्रबन्धसार राजनीति भाषा लघुव्याकरण १ भाग व २ भाग भाषा तत्त्व दीपिका भाषा चन्द्रोदय भूगोल तत्त्व भूगोल दर्प्पण इतिहास तिमिर नाश- क १ भाग व २ व ३ भा. सुबध रेशीय भूगोल इंग्लिस्तान का इतिहास हितोपदेशिका	तथा २ व ३ व ४ भा. गणित प्रकाश १ भा. तथा २ व ३ व ४ भा. गणित क्रिया क्षेत्र प्रकाश क्षेत्र चन्द्रिका १ भा. तथा २ भाग सकील दायरा रेखा गणित १ भा. तथा २ भाग बीज गणित २ भाग रामायण तुलसीकृ. बालकाण्ड अयोध्याकाण्ड आरण्यकाण्ड किष्किन्धाकाण्ड सुन्दरकाण्ड लंकाकाण्ड उत्तरकाण्ड गुटका १ भाग २ व ३ भा. हिरायत नामा मुर्- शिद्यान पशु चिकित्सा पहाबख़्त कैथी तथा क़ानूलियत रजिस्टर दाखिल- खारिज तुलवां मदर्स इत्यादि
ज्योतिष			
मुहूर्त्त गणपति मुहूर्त्त चक्र दीपिका मुहूर्त्त चिन्तामणि सा. मुहूर्त्त दीपक होरा मकरन्द सटीक जातक अलंकार लग्न चन्द्रिका जातक भरण होरा मकरन्द मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटी.	**सरिश्ते तालीम की पुस्तकें संस्कृत** कनुपात १ भाग तथा २ व ३ भाग धात्वर्थ		

